नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक

नंदन

हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

४ रुपए

जून '९०

हाथों से ताली
पैरों में थिरकन,
आकाश में उड़ने को
करता हो मन...

आपकी मौजमस्ती है अधूरी सिर्फ़ फ़नबाइट से होगी पूरी.

कैम्पको की फ़नबाइट.

मलाईदार, कुरकुरी चॉकलेट...
अंदर कुरमुरे वेफ़र और
बाहर रसीली स्वादभरी चॉकलेट

मौज में मज़ा बढ़ाए... कितना मज़ा आए.

कैम्पको लिमिटेड, मैंगलोर

भारत के सबसे बड़े सबसे आधुनिक प्लांट में निर्मित.

Other Campco chocolates / Milk / White / Treat / TURBO / Eclairs / megabite / Playtime / RUBIES / TOFFEE / Campco beverages / WINNER / COCOA

R K SWAMY/CL/7804/HIN

मनोरंजन व
हंसी का अनूठा संगम
डायमंड कॉमिक्स
कार्टूनिस्ट प्राण का
प्राण
पिंकी और चचा सुलेमानी
फौलादी सिंह और शैतानों का मन्दिर
मोटू पतलू और करोड़ों की जायदाद
अंकर बाल बुक क्लब
सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :-
1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता
साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के
साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक
व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें
निर्धारित—यदि आपको वह पुस्तकें पसंद हों तो डायमंड कॉमिक्स व
डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पुस्तकें आप पसन्द करके
मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पांच पुस्तकें मंगवाना
जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित
पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित
पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम
भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5
पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी.
भेजी जायेगी।
सदस्यता कूपन
मुझे अंकर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये
मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न
होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी
तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम
पिता का नाम
पता
जिला
डाकखाना
चाचा भतीजा और अनोखा अपहरण
पलटू और डाकू रानी
राजन इकबाल और चार्ली चोर
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट में
प्राण
बिल्लू
भांजा
नन्हें मुन्नों की पहली पसंद
डायमंड मिनी कॉमिक्स
प्राण
चाचा चौधरी और साबू का हंगामा
राजन इकबाल और खतरनाक बुड्ढे
ताऊ जी और कपाल दैत्य
लम्बू मोटू और ...ल का भूत
डायमंड कामिक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

अपनी श्रेणी में सर्वोत्कृष्ट पेंसिलें
हर एक के लिए, सबके लिए
लायन प्रीमियर® एच बी पेंसिलें
L.P.P. LTD. * PREMIER * 261 * HB * BONDED LEAD
सुरेख. सुंदर. एक्ज़ेक्यूटिव और हर उस व्यक्ति के लिए जिन्हें चाहिए लिखने का नया अंदाज़. सहज और आसान लिखाई के लिए लगातार गहरी छाप. न टूटने वाली नोंकों के लिए माइक्रोनाइज़्ड लैड - जो इसकी उत्कृष्टता में लगाए चार-चांद!
लायन पिंकी® पेंसिलें
PINKY
लायन 'पिंकी' पेंसिलें. खूबसूरती और पूर्णता की पहचान. बच्चों के मन भाए इसकी सुंदर डिज़ाइनें और मनभावन रंग. न टूटने वाली नोंकों के लिए मज़बूती से जोड़ी गयी लैड. उस पर सहज और सरल लिखाई - इसकी खूबसूरती में लाए और निखार!
लायन जीमैटिक® ड्रॉइंग पेंसिलें
L.P.P. LTD. Geematic DRAWING 555 6B
आर्टिस्ट, आर्किटेक्ट, डिज़ाइनर और इंजीनियरों जैसे व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए एक परिपूर्ण इकाई. जो इनकी कारीगरी में भरे परिपूर्णता के रंग. एच से ६ एच और बी से ६ बी, एच बी एवं एफ़ तक की १४ विविध श्रेणियों में उपलब्ध.
लायन पेंसिल्स लि.
१५, पारिजात, मरीन ड्राइव, बम्बई ४०० ००२.
National-358 HIN
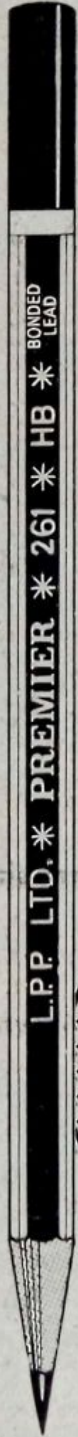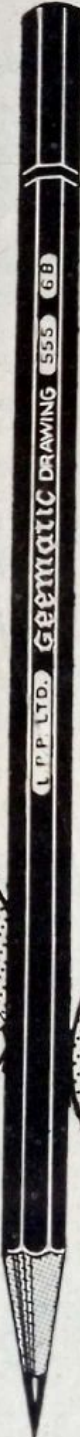
आओ बात करें

एक राजा थे रामचंद्र राव । उनका मुख्यमंत्री विद्वान तो था, पर था चतुर और चालाक । वह संस्कृत का अच्छा पंडित था । उसे कई प्रदेशों की भाषाएं भी आती थीं । दरबार में कोई नियुक्ति करनी होती, तो मुख्यमंत्री ही उम्मीदवार की जांच-परख करता । दरबार में ही यह काम होता । शुरू में कोई युवक मंत्री के प्रश्नों के उत्तर दे देता, तो वह किसी दूसरी भाषा में प्रश्न पूछने लगता । युवक की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती । बस, उसे अयोग्य ठहरा दिया जाता । मुख्यमंत्री अपने किसी सम्बंधी या चापलूस की नियुक्ति उस पद पर कर देता ।

यह सिलसिला बरसों से चला आ रहा था । राजा अपने मंत्री को बहुत मानते थे । वास्तव में उस राज्य में राजा नहीं, मंत्री ही राज कर रहा था ।

एक दिन एक युवक दरबार में आया । उसने राजा से कहा— "महाराज, मैं देस-परदेस में खूब घूमा हूं । अब एक जगह रहकर जीवन बिताना चाहता हूं । मैं आपके दरबार में नौकरी करना चाहता हूं ।"

राजा ने कहा— "तुम्हें परीक्षा देनी होगी । यदि योग्य साबित हो जाओगे, तो नौकरी दे दी जाएगी ।"

नवयुवक को भला क्या ऐतराज होता ? मंत्री ने उससे कई प्रश्न किए । उसने सही-सही उत्तर दे दिए । अब मंत्री ने दूसरी भाषा का सहारा लिया । वह युवक तो काफी घूमा था । उसी दौरान उसने अनेक भाषाएं भी सीख ली थीं । उसे उत्तर देने में कठिनाई नहीं हुई ।

मंत्री ने काफी दाएं-बाएं किया, पर उसे निरुत्तर न कर पाया । मंत्री सोच में पड़ गया ।

तभी नवयुवक बोला— "महाराज, अनुमति हो, तो मैं भी मंत्री जी से कुछ पूछ लूं ?"

राजा रामचंद्र ने तुरंत कहा— "हां, हां, क्यों नहीं ?"

नवयुवक ने किसी विदेशी भाषा में कुछ पूछा । मंत्री तो उस भाषा से अनजान था । वह बगलें झांकने लगा । राजा ने उस नवयुवक को अच्छे पद पर नियुक्त कर दिया ।

देश को आजाद हुए चालीस साल से अधिक हो गए । भाषाओं को लेकर झगड़े चलते रहते हैं । पिछले दिनों कजाखिस्तान की युवती जैतून मसूमोवा दिल्ली आई । अल्मा-अट्टा शहर में रहती है । वहां हिंदी सिखाने वाला कोई नहीं । फिर भी उसने हिंदी सीखी । छह भाषाएं और भी जानती है । हिंदी के गीत गा लेती है ।

विदेश से जो सैलानी आते हैं, वे प्रायः चार-पांच भाषाएं जानते हैं । मातृभाषा के अलावा दूसरे देशों में दूसरी भाषाएं सीखने का शौक होता है । इससे बड़ी सुविधा भी होती है । कहीं भी जाएं, अपनी कहने और दूसरे की सुनने में कठिनाई नहीं होती ।

इस बार छुट्टियों में क्यों न एक नई भाषा सीखें !

अगला अंक परी-कथा विशेषांक होगा । अंक बाजार में आया, बस कुछ दिन में गायब । फिर पत्र लिखते रहिए, मिलना आसान नहीं । इसलिए, पहले ही अपनी प्रति के लिए कहें ।

—तुम्हारे भइया

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

नंदन जून '९०

वर्ष:२६ अंक:८

कहां क्या है

कहानियां

इस अंक में विशेष

कविताएं

स्तम्भ

आवरण : मंजुला ; एलबम : विद्याव्रत

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील,
क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

नाव पर निशान

—ब्रह्मदेव

मौंसो की कई नावें थीं। वह इन नावों को एरावती नदी में चलाता था। एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल लादने का कार्य करता था। उसके अधीन कई नाविक काम करते थे, जिन्हें वह मांडले लौटने पर वेतन दिया करता था। मौंसो की एक आदत थी—मांडले वापस पहुंचने से पहले, वह किसी न किसी नाविक को अपनी चाल में फंसाकर उसका पूरा वेतन हड़प लेता था। एक बार नाव लाने-ले जाने में तीन-चार माह लग जाते थे, हर नाविक का वेतन काफी हो जाता था।

इसी तरह की यात्रा में नाविकों में एक पहाड़ी युवक भी आया, जो साधारण बुद्धि का था। मौंसो ने सोचा—'इसे मूर्ख बनाना सरल होगा।' पहाड़ से आया हुआ युवक खिनमौं यात्रा के दौरान अलग ही रहा। वह दूसरे नाविकों के साथ ज्यादा हिल-मिल नहीं पाया, क्योंकि वह बहुत कम बोलता था। दूसरे नाविक भी उसे मूर्ख समझकर उसका उपहास करते रहते थे।

जब नाव बर्मा के नीचे हिस्से में पहुंची, तो वहां मौंसो ने युवक से कहा—''यहां मुर्गे सस्ते होते हैं। खरीद लो, तो अच्छा रहेगा।''

खिनमौं ने एक मुर्गा खरीद लिया। मांडले पहुंचने पर नाव के मालिक मौंसो ने कहा—''मुर्गे को चारा खिलाने का जितना खर्चा आया है, वह खिनमौं के वेतन से कटेगा।'' खिनमौं बोला— ''जी मालिक! वह आप काट लें।''

मौंसो हंसते हुए बोला— ''मुर्गे के खाने का खर्च उतना ही हुआ है, जितना तुम्हारा वेतन था। अब हिसाब बराबर हुआ।''

इस पर खिनमौं बोला— ''कोई बात नहीं मालिक, मुझे आपके साथ यात्रा में बहुत आनंद आया है। मैं कुछ दिन अपने गांव हो आऊं, फिर आपके साथ दूसरी यात्रा पर चलूंगा।''

अपने वायदे के अनुसार खिनमौं पहाड़ से लौट आया। वह दूसरी यात्रा में फिर मौंसो के साथ निकल पड़ा। मौंसो खुश था कि इस बार फिर इस पहाड़ी नाविक का वेतन हड़पने का अवसर मिलेगा। उसने पूछा—''क्या इस बार भी तुम्हारा इरादा मुर्गा खरीदने का है?''

''यह तो मुझे नहीं पता।''—युवक ने उत्तर दिया—''लेकिन यह यात्रा मेरे लिए भाग्यशाली रहेगी, क्योंकि मेरे पिता ने मुझे यह करामाती चाकू दिया है।'' कहकर खिनमौं ने अपने झोले से एक चाकू निकालकर दिखाया। चाकू की मूठ पर देवी-देवताओं की आकृतियां बनी हुई थीं।

सब नाविकों ने उत्सुक होकर पूछा—''तुम्हारा यह करामाती चाकू क्या कर सकता है?''

खिनमौं ने उत्तर दिया— ''यह तो मुझे नहीं मालूम। लेकिन है यह करामाती चाकू।''

पूरी यात्रा में सारे नाविक उस करामाती चाकू का उपहास करते रहे, लेकिन खिनमौं ने बुरा नहीं माना। एक दोपहर जब नाव एक गांव के किनारे गहरे जल में खड़ी थी, तब सबने देखा कि खिनमौं अपने चाकू की धार को नाव के एक किनारे पर तेज कर रहा है।

नाविकों ने उसका मजाक उड़ाया । खिनमौं उनको उत्तर देने के लिए मुड़ा । मुड़ने पर उसके हाथ से चाकू फिसलकर पानी में गिर गया । नाव का मालिक मौंसो चिल्लाया—"जल्दी पानी में कूदकर अपना करामाती चाकू उठा लाओ, वरना बाद में नहीं मिलेगा ।"

खिनमौं ने नाव के किनारे उस स्थान पर एक निशान लगाया । बोला— "मैंने नाव पर यहां निशान लगा दिया है । मैं यह निशान देखकर किसी भी समय चाकू निकाल लूंगा ।"

कई नाविक एक साथ बोल पड़े—"अरे, मूर्ख! कुछ ही मिनटों में हम लोग यहां से आगे चल देंगे । क्या तुम्हारा करामाती चाकू हमारी नाव के साथ पानी के अंदर ही अंदर यात्रा करेगा ?"

खिनमौं ने उत्तर दिया—"यह तो मुझे पता नहीं, लेकिन मैंने उस स्थान पर निशान लगा दिया है, जहां से चाकू फिसलकर गिर गया था, इसीलिए मैं किसी समय कहीं भी डुबकी लगाकर चाकू निकाल लूंगा ।"

जब नाविकों ने देखा कि इस पहाड़ी नाविक के दिमाग में कुछ घुस ही नहीं रहा, तो वे चुप हो गए । इस अवसर का लाभ उठाते हुए नाव का मालिक मौंसो बोला— "दो दिन में हम लोग मांडले पहुंच रहे हैं, अगर तुम वहां डुबकी लगाकर अपना चाकू निकाल लाओ, तो मैं अपनी सातों नावें तुम्हें दे दूंगा । अगर न ला पाए, तो मैं तुम्हारा वेतन नहीं दूंगा ।"

युवक खिनमौं ने आश्चर्य से पूछा— "लेकिन मालिक, आप अपनी नावें क्यों हारना चाहते हैं ? आप जानते हैं कि मेरा चाकू उसी स्थान पर गिरा था, जहां मैंने नाव पर निशान लगा रखा है । वह तो मुझे मिलना ही है ।"

मन ही मन इस युवक के भोलेपन पर मुसकराते हुए नाव के मालिक ने कहा— "मुझे अपनी नावों को हारने का शौक है । बोलो, तुम्हें शर्त मंजूर है ?"

"ठीक है, मुझे स्वीकार है ।" खिनमौं ने उत्तर दिया । यह सुनकर सारे नाविक हंसने लगे ।

दो दिन पश्चात नाव मांडले पहुंची, तो नाव के मालिक ने खिनमौं से कहा— "लो अब निशान वाली जगह से कूदकर पानी से अपना चाकू निकाल लाओ ।"

खिनमौं ने निशान लगी हुई जगह से पानी में छलांग लगाई । नीचे पहुंचकर उसने अपनी लुंगी में से एक चाकू निकाला, जिसकी मूठ पर भी वैसी ही देवी-देवताओं की आकृतियां बनी हुई थीं । वास्तव में वह नाव के मालिक से बदला लेने के लिए ही एक जैसे दो चाकू बनवाकर लाया था । पानी से बाहर आते ही खिनमौं बोला— "लीजिए, यह रहा मेरा चाकू ।"

सारे नाविक उससे क्षमा मांगने लगे । लेकिन नाव का मालिक मौंसो चिल्लाया— "तुमने इसमें जरूर कुछ धोखा किया है ।"

"धोखा, कैसा मालिक !"—खिनमौं बोला— "मैंने तो आपसे पहले ही कहा था कि यह करामाती चाकू है, लेकिन आप माने ही नहीं ।"

नावों का मालिक नाराज होता रहा, परंतु सब नाविकों के कहने पर उसे नावें देनी पड़ीं । अब खिनमौं नावों का मालिक बन गया था । ●

लो बाबा

—हरितबंधु

मथुरा में दीनपाल नाम का एक व्यापारी रहता था। उसका खूब बड़ा व्यापार था। धन-धान्य से सम्पन्न होने के बाद भी वह सुखी न था। वह निस्संतान था।

दीनपाल बस हर समय इसी चिंता में रहता कि उसकी इस सम्पत्ति का उसके बाद क्या होगा?

एक दिन दीनपाल की दुकान पर एक युवक आया और बोला— "सेठ जी! मैं बेरोजगार हूं। मुझे अपने यहां काम दीजिए। बड़ी कृपा होगी।"

दीनपाल ने उसे देखा और पूछा— "तुम कहां के निवासी हो? तुम्हारे पिता का क्या नाम है?"

—"मैं पास के ही कृष्णपुर गांव का निवासी हूं। मेरे मां-बाप नहीं हैं।"

दीनपाल बोला— "ठीक है। मैं तुम्हें काम पर रख लूंगा। दोनों वक्त का भोजन, रहने का स्थान और प्रति माह एक सौ रुपए वेतन दूंगा। लेकिन मेरी शर्त है कि ईमानदारी से काम करना होगा।"

"मुझे स्वीकार है। आपको कोई कष्ट नहीं होने दूंगा।" —युवक ने हामी भरते हुए कहा।

दीनपाल ने उसे काम पर रख लिया। युवक ने एक माह के भीतर ही ईमानदारी और मेहनत से दीनपाल का हृदय जीत लिया।

इस तरह युवक को दीनपाल के यहां काम करते-करते तीन माह हो गए। उसने एक दिन दीनपाल से कहा— "सेठ जी, मैं अपने गांव जाना चाहता हूं। कृपया मुझे मेरा वेतन दे दीजिए।"

"ठीक है, कल प्रातः वेतन के रुपए लेकर अपने गांव चले जाओ।" —दीनपाल ने कहा।

दूसरे दिन दीनपाल ने युवक को अपने पास बुलाया और उसके हाथ पर तीन रुपए रखते हुए कहा— "यह लो अपना वेतन!"

युवक ने तीन मास का वेतन तीन रुपए देखकर कहा—"मालिक, यह आप कितने रुपए दे रहे हैं? तीन मास का वेतन तीन सौ रुपए होता है।"

"मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि ईमानदारी से काम करना मेरी पहली शर्त है और अब तुम बेईमान बन रहे हो।"

युवक रुआंसा हो गया। वह मन ही मन सोचने लगा— सेठ खुद बेईमानी कर रहा है और मुझे बेईमान बता रहा है।

वह सोच में डूबा जा रहा था, तभी उसे एक बूढ़ा फकीर फटे-पुराने चिथड़ों में मिला। बोला—"बेटा, दो दिन से भूखा हूं। कुछ खाने को दे दे।"

युवक ने उस बूढ़े को देखा और अपनी मुट्ठी से एक रुपया उसकी ओर बढ़ा दिया—"लो बाबा, खाना खा लेना।"

अब युवक के पास केवल दो रुपए बचे थे। उसने सोचा— 'इन रुपयों में कुछ दिन काम चल जाएगा।' अभी वह कुछ ही दूर गया था कि उसे सड़क पर एक और अपाहिज भिखारी दीखा, जो बड़े दुखी स्वर में कह रहा था— "मेरी पत्नी बीमार है। दया करो।"

युवक ने उसकी करुणा भरी आवाज सुनी और पास के दोनों रुपए उसे दे दिए। रुपए देकर युवक आगे चला। तभी भिखारी ने उसे आवाज दी।

युवक ने रुककर पूछा—"क्या बात है बाबा?"

"बेटे, मैं यह जान गया हूं कि तुम्हारी जेब में अपने भोजन के लिए भी पैसे नहीं हैं, तब मुझे यह भीख देने की क्या जरूरत थी?"

भिखारी की बात सुन, युवक सोच में डूब गया। आखिर इस बूढ़े व्यक्ति को यह कैसे पता कि मेरी जेब में सिर्फ ये ही रुपए थे, उसने भिखारी से कहा— "बाबा आपको कैसे पता कि मेरे पास अब पैसे नहीं हैं?"

तभी भिखारी ने अपने हाथ का डंडा फेंक दिया। युवक चकित था। जिसे वह अपाहिज समझ रहा था, वह तो भला-चंगा था। थोड़ी देर में भिखारी जब युवक के सामने आया, तो वह और कोई नहीं दीनपाल था। उसने युवक को गले से लगा लिया। बोला— "बेटा, तुम परीक्षा में खरे उतरे। आज से तुम मेरे पुत्र हो। चलो, अपने घर चलो।" ●

नंदन एलबम : ७७

देवी अन्नपूर्णा

मां भंडार भरें सदा
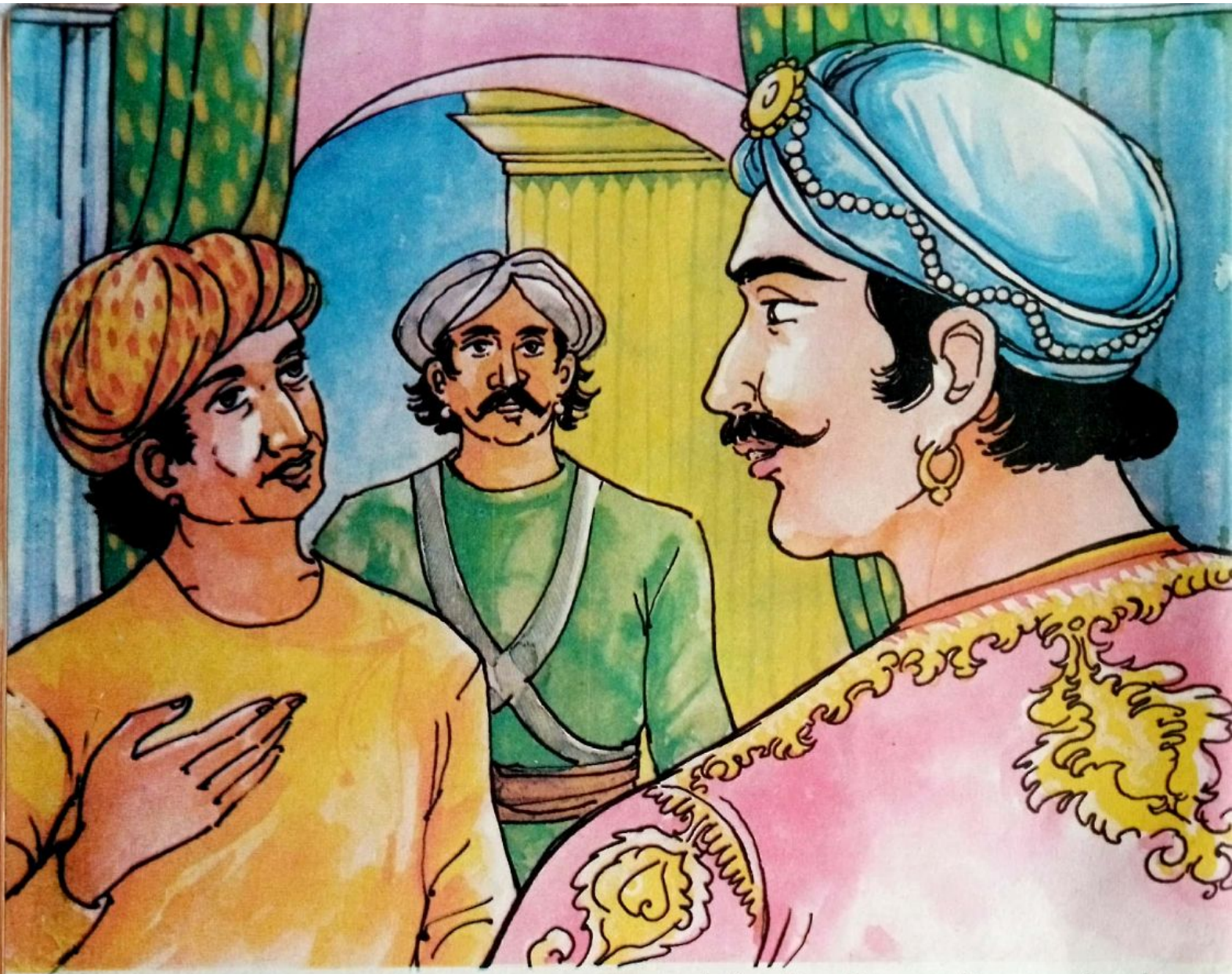
कविता सूख जाएगी

—डा. भैरूंलाल गर्ग

मेवाड़ पर महाराणा भीमसिंह का शासन था। वह सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी इस प्रकृति से कुछ दुष्ट दरबारियों की चढ़ बनी। वे अपना हित साधन करने लगे। प्रजा पर भारी कर लगा दिए गए। जनता पर अत्याचार होने लगे। इन दरबारियों की व्यवस्था ऐसी थी कि भीमसिंह को कुछ पता न चला।

लोग हर समय परेशान रहते, पर समस्या यही थी कि महाराणा तक उनकी बात कैसे पहुंचे ? किसी को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। यह देख, चारण जाति के कवियों ने महाराणा के कानों में प्रजा का कष्ट पहुंचाने का निश्चय किया। एक दिन चारण कवि इकट्ठे होकर राजमहल में पहुंच गए। प्रांगण में खड़े होकर ऊंचे स्वर में काव्य पाठ करने लगे।

कविताओं का अर्थ था कि महाराणा राजनीति में कच्चे हैं। यह सुनकर महल में हलचल मच गई। उन्हीं दरबारियों ने भीमसिंह के कान भर दिए। उन्होंने कहा—"यह तो सरासर विद्रोह है। ये चारण आपकी बदनामी कर रहे हैं। ये लालची हैं।"

भीमसिंह को भी यह बात ठीक लगी। उन्होंने वहां आए सब चारण कवियों को बंदी बनाने का आदेश दे दिया। वे कारागार में डाल दिए गए। इतने से ही महाराणा का क्रोध शांत नहीं हुआ। उन्होंने पूरी चारण जाति को देश निकाला दे दिया। आज्ञा न मानने वाले के लिए मृत्यु दंड की घोषणा भी की गई। मेवाड़

की सीमाओं से बाहर जाने के लिए उन्हें केवल एक दिन का समय दिया गया था।

चारण क्या करते ! वे सब राज्य छोड़कर पड़ोसी राज्यों मालवा, गुजरात आदि में चले गए। चारणों में एक था अजयदान। वह अपने लोगों की यह दुर्दशा सह नहीं सका। उसने मन ही मन निश्चय किया— 'मैं महाराणा को सच-सच बताकर ही मेवाड़ से जाऊंगा, चाहे प्राण ही क्यों न चले जाएं।'

अजयदान राजधानी में वेश बदलकर रहने लगा। वह अवसर की तलाश में था कि कैसे महाराणा से एकांत में भेंट कर सके। एक दिन उसने महाराणा भीमसिंह को नगर से बाहर घूमने जाते देखा। उसने एकांत पाकर महाराणा को रोक लिया। वह बदले वेश में था, इसलिए उसे कोई न पहचान पाया। साथ चल रहे सेवकों ने अजयदान को रास्ते से हटने को कहा। पर अजयदान इस अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहता था।

उसने उसी समय काव्य पाठ आरम्भ कर दिया। महाराणा ने भी शांत भाव से उसे पूरा सुना। अजयदान की कविता में राजद्रोह का भाव नहीं था। उसमें अपने चारण भाइयों की सेवा और निष्ठा का वर्णन था। कैसे-कैसे अवसरों पर इन कवियों ने महाराणाओं को सही रास्ता दिखाया था। ये युद्ध के समय किस प्रकार अपने वीरता पूर्ण काव्य पाठ से राजा और सैनिकों में वीरता का संचार करते रहे हैं। अजयदान ने कविता में यह भी कहा— 'महाराणा, आप अपने विवेक से काम लें। इस समय आप झूठे और चापलूस प्रशंसकों से घिरे हैं और मेवाड़ की जनता परेशान है।'

अजयदान ने अपनी बात पूरी की। तब तक महाराणा ने उसे पहचान लिया। वह बोले, ''तुम यहां

कैसे रह गए हो, मैंने तो तुम्हारी पूरी जाति को राज्य से बाहर निकलवा दिया है ?''

अजयदान ने निर्भीकता पूर्वक उत्तर दिया—''आपको सही स्थिति बताकर मौत की सजा पाने के लिए ।''

महाराणा यह सुन,कुछ न बोले । उन्होंने तत्काल बंदी बनाने का संकेत किया । साथ चल रहे सेवकों ने अजयदान को बंदी बना लिया । महाराणा भी उसी समय वापस महल की ओर लौट गए ।

ऐसे ही एक सप्ताह निकल गया । अजयदान को एक कमरे में बंद रखा गया था । वह बंदी अवश्य था, लेकिन अन्य बंदियों की तरह उसे कोई कष्ट नहीं दिया गया ।

आखिर एक दिन अजयदान के पास महाराणा का बुलावा आया । बुलावे के साथ अजयदान के लिए एक दरबारी पोशाक भी आई । पर अजयदान ने वह पोशाक पहनने से मना कर दिया ।

अजयदान को महाराणा के सम्मुख उपस्थित किया गया । स्वयं महाराणा ने आगे आकर उसका स्वागत किया । बोले—''अजयदान, हमने सात दिन तक तुम्हारी बातों का पता लगाया । सचमुच मुझे मेरे लोगों ने अंधकार में रखा । वास्तव में मेवाड़ की प्रजा परेशान है । मुझे बड़ा दुःख है कि मैंने तुम्हारी जाति के साहसी और स्वाभिमानी लोगों को राज्य से बाहर कर दिया । मैं आज ही उन्हें वापस बुलवा रहा हूं । जिस साहस से आपने मेरी आंखें खोलीं, उसके लिए मैं और मेवाड़ की प्रजा आपकी बड़ी कृतज्ञ है । आज से मंत्री पद संभालें ।''

अजयदान विनम्रता पूर्वक बोला—''नहीं महाराज ! मुझे और मेरी जाति को पद नहीं चाहिए । अगर हमने भी ऐसा किया, तो हमारी कविताएं सूख जाएंगी और जो हम कह पाए, कभी नहीं कह सकेंगे ।''

महाराणा ने अजयदान की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा— ''तुम धन्य हो, अब तुम जैसे लोगों के रहते मेवाड़ की जनता को कोई शिकायत नहीं रहेगी ।'' ●

नौ मन तेल

—रीना सिन्हा

सुमेरगढ़ के राजा थे शमशेरसिंह । बहुत उदार और प्रजा पालक । हर समय प्रजा की भलाई की बात सोचते । प्रजा भी उनके राज्य में सुखी थी ।

शमशेरसिंह अब बूढ़े हो चले थे । अतः उन्होंने अपने पांचों पुत्रों को बुलाया । वह निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि किस पुत्र को गद्दी पर बिठाएं ? राजा ने कहा—''तुम लोग खुद फैसला कर लो, कौन राजगद्दी संभालेगा ।''

बड़े राजकुमार ने कहा—''हमारा छोटा भाई विक्रमादित्य सबसे योग्य और बुद्धिमान है । इसलिए गद्दी उसी को मिलनी चाहिए ।'' अन्य राजकुमारों ने भी यही कहा । अतः राजा ने छोटे राजकुमार को राजा घोषित कर दिया । कुछ समय बाद राजतिलक हुआ । सभी खुश थे । हर जगह खुशहाली दिखाई दे रही थी । सभी राजकुमारों की शादी भी धूमधाम से हुई । सभी राजकुमारियां सुंदर थीं । परंतु सबसे अधिक सुंदर तथा चतुर थी छोटी राजकुमारी फूलकुंवर । उसका विवाह विक्रमादित्य के साथ हुआ ।

एक दिन जब छोटी रानी अपने शयनकक्ष में सोने जा रही थी, किसी की रोने की आवाज सुनाई दी । छोटी रानी ने सोचा—'इतनी रात को कौन रो रहा है ? अवश्य ही यह मेरा भ्रम है ।'

इसी तरह उसे लगातार पांच दिन तक रोने की आवाज सुनाई देती रही । उसने निश्चय किया—'मैं अवश्य कल जाकर देखूंगी—आखिर कौन रोता है, क्यों रोता है ?'

छठे दिन भी रानी को उसी तरह रोने की आवाज सुनाई पड़ी । वह महल का दरवाजा खोलकर बाहर निकली । जिस दिशा से रोने की आवाज आ रही थी, उसी ओर चल पड़ी । उसने देखा कि सफेद कपड़े पहने एक बुढ़िया वहां बैठी, जोर-जोर से विलाप कर रही है । रानी ने पास जाकर पूछा—''क्या बात है माई, क्यों रो रही है ? तुम कौन हो ? यहां प्रतिदिन

क्यों विलाप करती हो ?''

बुढ़िया ने जवाब दिया—''बेटी, मैं विपत्ति हूं। मैं इस राज्य में तथा राजा के घर पड़ने आई हूं। पर यह सोचकर रो रही हूं कि इतना अच्छा राज्य मैंने पहले कभी नहीं देखा। आपस में इतना प्यार भी कहीं-कहीं होता है, जितना यहां की प्रजा में है। राजा और उसके भाई एक-दूसरे पर जान छिड़कते हैं।''

रानी ने कहा—''अगर तुम राज्य पर पड़ना ही चाहती हो, तो फिर देरी क्यों ?''

—''तुम्हें कैसे समझाऊं बेटी, रोना तो इसी बात का है। अगर मैं इस राज्य तथा राजा के घर पड़ी, तो सारा राज्य तथा राजघराना बर्बाद हो जाएगा। यहां अकाल पड़ जाएगा। लोग दाने-दाने को मोहताज हो जाएंगे।''

—''अच्छा, यह बात है, तो तुम मुझे एक दिन सोचने का मौका दो। फिर तुम्हारी जहां जाने की मर्जी हो, जाना।''

छोटी रानी सोच में पड़ गई कि कौन-सा ऐसा उपाय करूं, जिससे राजकोष की सारी सम्पत्ति बच जाए। उसे एक उपाय सूझा। उसने अपने सभी जेठ तथा जेठानियों को बुलाकर सारी बात बताई। कहा—''खजाने के सभी कीमती रत्न और हीरे मेरे पलंग के नीचे गाड़ दिए जाएं।''

सबने यह बात मान ली। खजाने के सभी कीमती रत्न रानी फूलकुंवर के पलंग के नीचे दबा दिए गए।

अगले दिन विपत्ति उसी प्रकार विलाप करने लगी। रानी विपत्ति के पास जाकर बोली—''तुम्हें मेरी एक शर्त माननी होगी।'' विपत्ति के पूछने पर रानी ने कहा—''तुम हर जगह पड़ सकती हो, लेकिन मेरे पति राजा विक्रमादित्य के पलंग पर मत पड़ना।'' विपत्ति यह मान गई।

विपत्ति राजा विक्रमादित्य के पलंग को छोड़कर राज्य के कोने-कोने में तबाही मचाने लगी। चारों तरफ हाहाकार मच गया। अकाल से जनता परेशान हो गई। लोग कड़ी मेहनत करने के बाद भी जैसे-तैसे पेट पालते थे। नदियां सूख गईं। जानवर भूखे मरने लगे, लेकिन राजा के घर में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। रानी पलंग के नीचे दबे रत्न निकालती। उन्हीं से उनका गुजर-बसर चलता।

फिर एक दिन विपत्ति राजा के घर के पिछवाड़े जोर-शोर से रोने लगी। उसे राजा के घर छाई खुशहाली तनिक न भाई। छोटी रानी असमंजस में पड़ गई। फिर हिम्मत करके विपत्ति से पूछने गई कि बात क्या है ?

विपत्ति ने कहा—''रानी, तुम बहुत चतुर हो। मैं तुम्हारे पलंग के नीचे भी पड़ना चाहती हूं। मैं जिस बात के लिए आई थी, वह तो हुई नहीं। तुम लोग तो खुशी से रह रहे हो।''

कुछ सोचकर रानी ने कहा—''ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी।''

विपत्ति जाकर खुशी-खुशी राजा के पलंग पर भी पड़ गई। अब राजा के घर भी गरीबी ने अपना डेरा

जमा लिया। दूसरे दिन छोटी रानी ने कहा—''आप पांचों भाई मिलकर बाहर जाइए। मेहनत-मजदूरी करके कुछ कमाकर लाइए।''

उस दिन के बाद पांचों भाई मेहनत-मजदूरी करने जाते। रास्ते में जो कुछ मिलता, उसे ले आते। एक दिन छोटी रानी अपनी जेठानियों के साथ बैठी, बात कर रही थी। तभी पांचों भाई खाली हाथ लौटकर आए। छोटी रानी ने इसका कारण पूछा। विक्रमादित्य ने कहा—''आज रास्ते में कुछ नहीं था, सिवाए एक कसैले फल के।''

छोटी रानी बोली—''आप लोग जाकर वही ले आइए।''

सभी भाई दोबारा गए। वह जंगली फल उठाकर ले आए।

एक दिन पड़ोसी राजा के बेटे की तबीयत बहुत अधिक खराब हो गई। राजवैद्य ने कहा—''घने जंगल में एक कसैला फल मिलता है। अगर कोई जल्दी से उसे ला सके, तो राजकुमार की जान बच सकती है।''

यह बात छोटी रानी के कान में भी पड़ी। उसने अपने पति को बुलाया। कहा—''कसैला फल ले जाइए। जब राजा मुंहमांगा इनाम देने को कहें, तो मेरे कहे अनुसार अपनी शर्त रखिए।''

''ठीक है।''—विक्रमादित्य ने कहा। वह कसैला फल लेकर चले गए। राजा ने विक्रमादित्य से इनाम मांगने को कहा। विक्रमादित्य ने कहा—''जो मैं मांगूंगा, क्या वह मिलेगा ?''

राजा ने कहा—''मांगकर तो देखो।''

विक्रमादित्य ने कहा—''अगर देना ही है, तो मुझे नौ मन तेल, दीए और बाती दीजिए। साथ ही राज्य में घोषणा करवा दीजिए कि पांच दिन तक राज्य में कोई दीया नहीं जलाएगा।''

''लेकिन यह कैसे हो सकता है ? राज्य में दीया न जलने से तो अपशकुन हो जाएगा।''—राजा ने कहा।

—''पर महाराज़, अपशकुन कैसे होगा ? मैं तो दीए जलाऊंगा ही। इसीलिए तो नौ मन तेल मांगा है।''

राजा क्या कहता ? वह तो पहले ही वचन दे चुका था। विक्रमादित्य को नौ मन तेल, बाती और दीए दे दिए गए। वह उन्हें लेकर घर आ गया।

उसी दिन राजा ने घोषणा करा दी—''गरीब विक्रमादित्य को छोड़कर पूरे राज्य में पांच दिन तक कोई दीया नहीं जलाएगा।''

सुनकर लोग परेशान हो गए। अंधेरे में रहेंगे कैसे ? लेकिन राजा का आदेश था, मानना ही पड़ा।

उस रात लक्ष्मी घूमती हुई उस राज्य में आईं, तो उनका मन बुरी तरह बेचैन हो गया। कहीं कोई दीया नहीं जल रहा था। जरा भी रोशनी नहीं थी। वह दुखी होकर इधर से उधर भटकने लगीं। चलते-चलते आखिर विक्रमादित्य के घर रोशनी नजर आई। पूरा घर दीयों से जगमगा रहा था। लक्ष्मी उस घर में जाने ही वाली थीं कि अचानक याद आया, इस घर में तो विपत्ति का डेरा है। लिहाजा लक्ष्मी देर तक हिचकिचाती हुई वहीं खड़ी रहीं। फिर उलटे पांव लौट गईं।

अगले दिन भी यही हुआ। फिर तीसरे-चौथे दिन भी। लक्ष्मी को कहीं ठौर नहीं मिल रहा था। पूरे राज्य में अंधेरा था। इसलिए वह कहीं जा नहीं सकती थीं। विक्रमादित्य के घर रोशनी थी, मगर वहां विपत्ति का डेरा था। आखिर पांचवें दिन लक्ष्मी से रहा नहीं गया। वह दीयों से जगमगाते विक्रमादित्य के घर गईं। और उनके वहां जाते ही रत्न, हीरे और सिक्कों की खन-खन बरसात होने लगी। इतने सिक्के बरसे कि बेचारी विपत्ति को सिर छुपाना कठिन हो गया। हाल बेहाल हो गया। हाथ जोड़कर छोटी रानी के पास गई। बोली—''रानी फूलकुंवर, तू जीती, मैं हारी। जिस राजभवन में तुझ जैसी समझदार रानी है, वहां भला विपत्ति का क्या काम ? तेरे पति का राजपाट और खुशियां फिर लौट आएंगी।''

और सचमुच विपत्ति के जाते ही फिर सब कुछ वैसा ही हो गया। ●

लू के चांटे

जली-भुनी-सी लगती धूप,
दिन भर खूब अकड़ती धूप।

गरमी में चढ़ गया दिमाग
सबसे सदा झगड़ती धूप।

भरी दुपहरी पछुआ के संग
लू के चांटे जड़ती धूप।

धूल-बवंडर को ले आकर
बड़ी मुसीबत करती धूप।

लगती रेत दूर से पानी,
ऐसे सबको ठगती धूप।

जरा न भाती, अंग-अंग में
कांटों जैसी गड़ती धूप।

—राजनारायण चौधरी

पेड़

मन को खूब लुभाते हैं
हरे-भरे ये पेड़,
स्वच्छ हवा फैलाते हैं
हरे-भरे ये पेड़।
तरह-तरह के फल देते,
हरियाली औ' जल देते,
फिर भी कभी नहीं थकते
खड़े-खड़े ये पेड़।
धरती से लेकर भोजन,
गरमी-सर्दी, हर मौसम,
थके पथिक की सेवा करते
नेह भरे ये पेड़।

—श्यामकुमार दास

बाजार

शोर-शराबा, आवा-जाही,
देखो, लगा हुआ बाजार।
तरह-तरह की लगी दुकानें,
चीजों का बेढब अम्बार।
रिक्शा वाला भी बोला यों—
'बचो-बचो जी, बरखुरदार।'
लाला जी आवाज लगाते—
'बोलो, क्या लोगे सरकार ?'
नन्नू हलवाई का चमचम
मधुर मिठाई का भंडार।
लड्डू, बरफी, रसगुल्लों की
आई है जी मधुर बहार।
उधर खिलौने वाला पूछे—
गुड्डे, गुड़िया, मोटर-कार ?
पैसे जिसके पास उसी को
लगता है अच्छा बाजार।
जिसके पास नहीं है पैसा
वह सचमुच कितना लाचार।
कल्लू जी ने लिखा हुआ है—
'आज नकद, कल मिले उधार !'

—बाबूराम शर्मा विभाकर

चूहा और गिलहरी

कहा गिलहरी से चूहे ने
क्यों पेड़ों पर रहती हो,
अंधड़, पानी, सर्दी, गरमी
रात और दिन सहती हो ?

देखो हम बिल में रहते हैं
माल चकाचक खाते हैं,
पल भर में आ जाते बाहर
पल भर में घुस जाते हैं।

चलो, रहो तुम साथ हमारे
बिल में है आराम बहुत,
कमी नहीं खाने-पीने की
अपने हैं गोदाम बहुत।

कहा गिलहरी ने चूहे से
विनती बारम्बार है,
तुमको बिल से प्यार अगर तो
मुझे पेड़ से प्यार है।

— राजा चौरसिया

रोना बंद करो

ले आए हम खूब खिलौने,
अब तो रोना बंद करो।

दोस्त तुम्हारे नटखट सारे
हंसकर तुम्हें चिढ़ाएंगे,
तरह-तरह की बात बनाकर
आंखें वे मटकाएंगे।

आंसू पोंछो, तुम भी हंस दो
यूं ना हमको तंग करो,
ले आए हम खूब खिलौने
अब तो रोना बंद करो।

गाल फुलाकर क्यों बैठे हो
यह तो अच्छी बात नहीं,
खेलो-कूदो चाहे जितना
करना पर उत्पात नहीं।

सबको लेकर साथ चलो जी
अब तो गुस्सा खत्म करो,
ले आए हम खूब खिलौने
अब तो रोना बंद करो।

—अंजू जैन 'प्राची'

लौटा दो कंगन

— मनोजकुमार सिन्हा

रूपनगर की राजकुमारी स्नेहवती गुणवान और रूपमती थी। परंतु वह जिद्दी स्वभाव की थी। जिस चीज की इच्छा होती, उसे हासिल करके ही मानती। राजकुमारी स्नेहवती की इस अजीब आदत के कारण राज्य के सभी लोग डरे-डरे से रहते थे।

एक दिन की बात है। राजकुमारी स्नेहवती आखेट के लिए जंगल में गई। जंगली जानवरों के पीछे इधर-उधर भागते-भागते वह अपनी सहेलियों और सैनिकों से बहुत आगे निकल गई। काफी दूर जाने पर राजकुमारी ने थकान महसूस की। आराम के लिएँ वह सुरक्षित स्थान देखने लगी। तभी उसे एक कुटिया दिखाई दी। बियावान जंगल में कुटिया देख, राजकुमारी की उत्सुकता बढ़ गई। वह कुटिया की ओर बढ़ चली। झांककर अंदर देखा, एक साधु महाराज भूमि पर लेटे थे। साथ में उनका एक शिष्य था, जो उनके चरण दबा रहा था।

राजकुमारी अभी झांक ही रही थी, इतने में वह शिष्य बोला—"गुरु जी, आपके हाथ में कंगन कैसे हैं? मैं नित्य देखता हूं, इनके रंग बदले होते हैं।"

शिष्य की बात सुनकर साधु महाराज मुसकराए। फिर बोले— "पुत्र, अद्भुत कंगन हैं। इन्हें पहनने से आदमी अदृश्य हो सकता है। साथ ही अपनी इच्छा से रूप बदल सकता है। मैंने इनके साथ अपनी तांत्रिक शक्ति भी जोड़ रखी है, जिस कारण इनका रंग नित्य बदलता है।"

गुरु-शिष्य की बात सुन, राजकुमारी स्नेहवती के मन में उसे पाने की इच्छा हुई। वह कंगन पाने के उपाय के बारे में सोच ही रही थी। इतने में उसके सैनिक उसे खोजते-खोजते वहां आ गए। सैनिकों को देख, राजकुमारी की आंखों में चमक जाग उठी। उसने खुश होते हुए, सैनिकों को आदेश दिया—"उस साधु से उसके कंगन छीन लो, जो कुटिया के अंदर है।"

राजकुमारी स्नेहवती की आज्ञा से सैनिकों ने वैसा ही किया। कंगन पाकर राजकुमारी फूली नही समाई।

राजा चंद्रसेन को जब राजकुमारी स्नेहवती के कारनामे का पता चला, तो वह भागे-भागे आए। उन्होंने राजकुमारी स्नेहवती को समझाया। कहा—"बेटी, साधु-संन्यासी से मजाक अच्छा नहीं होता। उनके कंगन वापस कर दो और क्षमा मांग लो। ये बड़े दयालु होते हैं। तुम्हें क्षमा कर देंगे।"

"पिता जी, मुझे ये कंगन पसंद हैं, बस!" —कहकर उसने अपने पिता की आज्ञा भी अनसुनी कर दी।

दूसरे दिन राजकुमारी ने वे कंगन पहने। राजकुमारी स्नेहवती के कंगन धारण करते ही एक चमत्कार हुआ। राजकुमारी अदृश्य हो गई, परंतु साथ में बहुत जोर से चिल्लाई भी। एकाएक राजकुमारी के चीखने पर राजा, मंत्री तथा दरबारी हैरत में पड़ गए। पर वे करते भी क्या? राजकुमारी सामने तो थी नहीं। यूं ही सभी हैरान-परेशान खड़े रहे। कुछ देर बाद जब राजकुमारी फिर दिखाई दी, तो राजा ने उससे चिल्लाने का कारण पूछा—"क्यों बेटी, तुम चीखी क्यों थीं?"

राजकुमारी ने चुपचाप उन्हें अपना बायां हाथ दिखाया। देखकर सभी भौंचक रह गए। एक कंगन राजकुमारी के बाएं हाथ की कलाई से चिपक गया था। उसी कारण पीड़ा हो रही थी। यह देख, राजा ने राजकुमारी से कहा— "तुमने बड़ों की आज्ञा नहीं मानी। अब अपनी जिद का फल भुगतो!"

राजकुमारी चुपचाप सुनती रही, फिर रो पड़ी। उसे रोते देख, राजा चंद्रसेन ने उसे ढांढस बंधाया।

इस घटना को अभी एक पखवाड़ा ही बीता था कि एक घटना और घट गई। राजकुमारी के दाएं हाथ का कंगन चोरी हो गया। कंगन के चोरी हो जाने से राजकुमारी परेशान हो उठी। अब वह अदृश्य भी नहीं हो सकती थी, इसलिए उदास रहने लगी।

अपनी पुत्री की उदासी राजा चंद्रसेन से देखी नहीं गई। उन्होंने कंगन के चोर को पकड़ने के लिए बीड़ा रख दिया। बीड़े के लालच में राज्य का हर आदमी चोर की खोज में जुट गया। राजकाज ठप हो गया। यह देख, राजा चंद्रसेन को लगा—'यह शायद साधु

महाराज का शाप है, तभी ऐसी घटनाएं हो रही हैं।'

यह सोचकर वह परेशान हो उठे। वह चुपचाप साधु महाराज से मिलने चल पड़े। पैदल जंगल में गए, परंतु उन्हें वह कुटिया वीरान मिली। आसपास किसी का नामोनिशान नहीं था। इस तरह जंगल की खाक छानते राजा वापस लौट आए।

कुछ दिन बाद कंगन चोर पकड़ा गया। उसे राजा के सामने लाया गया। राजा चंद्रसेन ने उससे पूछा—"कंगन कहां है ?"

"मेरे पास नहीं है महाराज !"—चोर ने निर्भीकता से कहा।

राजा चंद्रसेन को चोर की उद्दंडता पर बहुत गुस्सा आया। उन्होंने आदेश दिया—"इसे फांसी पर लटका दो।" राजा के आदेश का पालन हुआ। चोर को फांसी पर लटका दिया गया।

इधर चोर को फांसी लगी, उधर राजकुमारी के साथ एक घटना घटी। उस रात राजकुमारी को ऐसा लगा, जैसे वह चोर उससे दूसरा कंगन भी छीनने की कोशिश कर रहा है। यह सपना आते ही राजकुमारी जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगी। राजकुमारी की चीख सुन, राजा-रानी उसके शयन कक्ष की ओर दौड़ पड़े। देखा, राजकुमारी अपने बिस्तर पर तड़प रही है।

उस दिन के बाद रोज रात को वैसा ही होता। राजकुमारी की इस हालत को देख, राजा ने देश-विदेश के वैद्य-हकीमों से राजकुमारी का इलाज करवाया, पर उसका कोई असर नहीं हुआ। राजकुमारी का रोग लगातार बढ़ता गया। लोग तरह-तरह की बातें करते। अंत में, राज्य की भलाई सोचकर राजा चंद्रसेन ने राजकुमारी को जंगल में भटकने के लिए छोड़ दिया।

राजकुमारी अकेली भयानक जंगल में भटकने लगी। पास में बह रहे एक दरिया को देख, राजकुमारी ने सोचा— 'क्यों न इसमें डूब मरूं ?' वह दरिया की ओर बढ़ गई।

नदी किनारे पहुंचने पर राजकुमारी ने देखा, वहीं एक वृक्ष के नीचे वही साधु महाराज ध्यान मग्न बैठे हैं।

राजकुमारी बेतहाशा भागती हुई गई। उनके चरणों में गिर पड़ी। बोली— "बाबा, मुझ पर कृपा करो।" राजकुमारी के स्वर में विनती थी।

आवाज सुन, साधु महाराज ने आंखें खोलीं।

बोले—"तुम कौन हो पुत्री ? क्या कष्ट है तुम्हें ?"

—"महाराज, मैं वही बदकिस्मत राजकुमारी हूं, जिसने आपके कंगन लिए थे।"

"ओह ! फिर तुम्हें क्या कष्ट है पुत्री ? तुम्हारे सुख का भला क्या ठिकाना ? कहीं भी आसानी से आ-जा सकती हो।"—साधु महाराज बोले।

यह सुन, राजकुमारी स्नेहवती ने रोते-रोते अपनी आप बीती सुना डाली।

साधु महाराज एक क्षण चुप रहे। फिर बोले— "पुत्री, तुम्हें शुरू में ही इस बात का ध्यान रखना था। खैर, तुम घबराओ नहीं। सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

कहकर साधु महाराज ने कुछ मंत्र पढ़े। फिर जल की कुछ बूंदें राजकुमारी के शरीर पर डालीं। जल की बूंदें पड़ते ही राजकुमारी कुछ शांत हुई। कलाई से चिपका कंगन भी अलग हो गया। कंगन निकाल, राजकुमारी स्नेहवती ने साधु को दे दिया। बोली—"मैं क्षमा चाहती हूं बाबा ! आपको एक ही कंगन लौटा पा रही हूं। दूसरा कंगन चोरी हो गया है।"

राजकुमारी से कंगन लेकर साधु महाराज हंसे। फिर कुछ पल आंखें बंद कर लीं। कुछ ही देर में दूसरा कंगन भी उनके हाथ में नजर आया, जिसे देख, राजकुमारी स्नेहवती चकित रह गई। परंतु अब उसे उसका लोभ नहीं रह गया था। उसे सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया था। उसी दिन राजकुमारी वापस लौट आई।

कुमारी स्नेहवती की वापसी की खुशी में रूपनगर के राजमहल में भारी जश्न मनाया गया। राज्य में सुख-शांति के दिन फिर लौट आए थे। ●
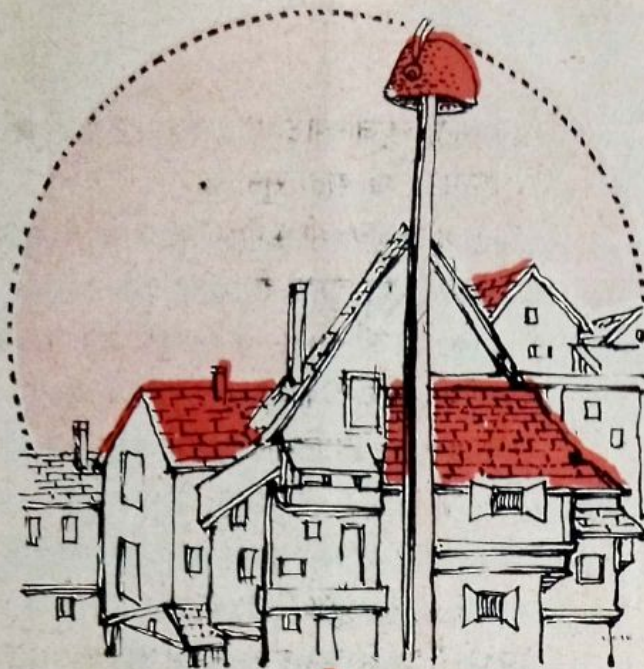
चलाओ तीर

—शिवचरण मंत्री

बात पुरानी है। उस समय आस्ट्रिया बहुत शक्तिशाली देश था। दुनिया के कई देश उसके अधीन थे। स्विटजरलैंड पर भी आस्ट्रिया का कब्जा था।

उस समय आस्ट्रिया का शासक बहुत ही क्रूर था। प्रजा उससे दुखी थी। उसने स्विटजरलैंड का शासन गेसलर नाम के एक गवर्नर को सौंप रखा था। गेसलर भी बड़ा ही निर्दयी था। वह प्रजा को बहुत तंग करता। लोगों को रोते, कलपते, चीखते-चिल्लाते देख, गेसलर बहुत प्रसन्न होता। स्विटजरलैंड वासियों को वह बिना बात अपमानित करता। वह बड़ा ही क्रोधी और घमंडी था।

एक बार उसने स्विटजरलैंड वासियों को अपमानित करने का एक नया तरीका निकाला। देश के प्रमुख शहर के एक व्यस्त चौराहे पर उसने हैट रखवा दिया। हैट एक ऊंचे स्थान पर रखवा कर उसने घोषणा करवा दी— 'जो भी इस चौराहे से निकले, वह हैट को अभिवादन करके ही चौराहा पार करेगा। आदेश की अवमानना करने वाला दंड का भागी होगा।'

अपने आदेश के पालन के लिए गेसलर ने सेना की एक टुकड़ी चौराहे पर लगा दी। इस टुकड़ी को आदेश था कि हैट को सिर झुकाए बिना चौराहे पार करने वाले को सजा दी जाए। यदि कोई विरोध करे, तो उसे गेसलर के पास भिजवा दिया जाए।

गेसलर के इस आदेश से सभी नागरिक परेशान थे। अपमान महसूस करते थे। किंतु सभी मौन थे। हैट को अभिवादन करके आगे बढ़ जाते थे। कार्य में व्यस्त होते हुए भी हैट को सलामी देना याद रखना पड़ता। भूल होने पर दंडित होना पड़ता।

एक दिन की बात है। प्रातःकाल का समय था। चौराहे पर बहुत भीड़ थी। आने-जाने वालों का तांता लगा था। फौजी टुकड़ी अपना काम पूरी सतर्कता से कर रही थी। अचानक फौजियों ने देखा, एक व्यक्ति अपने बच्चे के साथ गेसलर के आदेश की अवमानना कर रहा है। वह हैट को सलामी दिए बिना चौराहा पार कर रहा है। गेसलर की आज्ञा की अवमानना करने वाले को भला कैसे सहन किया जाता? उसे तुरंत पकड़ लिया गया और अभिवादन करने को कहा गया। पर अपराधी व्यक्ति ने हैट को सलामी देने से मना कर दिया। सजा पाने में भी आनाकानी की। कुछ ही देर में बात ने तूल पकड़ लिया। भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ में फुसफुसाहट हुई—'देश के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर वाल्टर टेम को इस तरह अपमानित करना अच्छा नहीं। उससे विद्रोह भड़क सकता है।' बात टुकड़ी के अफसर के कानों में गई। उसने समझदारी से काम लिया। भीड़ को शांत करते हुए उसने गेसलर को बुला भेजा।

गेसलर तुरंत मौके पर पहुंचा। उसने व्यस्त चौराहे पर खड़ी भीड़ देखी। भीड़ का जायजा लिया। भीड़ के गुस्से को उसने जाना। यद्यपि गेसलर स्वभाव से क्रूर और निर्दयी था। लोगों को दुःख देने में उसे मजा आता था। परंतु उसने परिस्थिति को समझा। बुद्धि से काम लिया। उसने वाल्टर को सम्बोधित करते हुए कहा— ''वाल्टर, हमें मालूम है, तुम बड़े अच्छे तीरंदाज हो। हमें तुम जैसे तीरंदाज पर गर्व है। हम तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहते हैं। तुम्हें दंड भी नहीं देना चाहते। पर हम तुम्हारी तीरंदाजी

का कमाल देखना चाहते हैं । तुम्हारे पक्के निशाने की परीक्षा लेना चाहते हैं ।"

—"ठीक है । मैं इसके लिए तैयार हूं ।"

"बहुत खूब ! शाबास टेम ! हम यही चाहते थे ।"—गेसलर ने वाल्टर की पीठ थपथपाते हुए कहा ।

"बताओ, मुझे किस प्रकार से परीक्षा देनी होगी ?"—वाल्टर टेम ने प्रश्न किया ।

गेसलर ने उसी समय वाल्टर के पुत्र विलियम को अपने पास बुलाया । विलियम तुरंत गेसलर के पास आया । गेसलर ने अपनी जेब में रखा अनार निकाला । अनार विलियम के सिर पर रखा । अनार रखकर गेसलर ने उसे बहुत दूर खड़ा होने को कहा । विलियम जब गेसलर के बताए स्थान पर चला गया, तो गेसलर ने कहा—"टेम, तुम्हें विलियम के सिर पर रखे अनार को अपने निशाने से बेधना है ।"

"पर यह तो जोखिम भरा काम है ! मैं निशाना चूक गया, तो विलियम को प्राणों के लाले पड़ जाएंगे । मेरा विलियम मर जाएगा ।"—टेम ने कांपते हुए कहा ।

—"हम कुछ नही जानते । यदि विलियम को बचाना चाहते हो, तो हमारे हैट को सलामी दो ।"—गेसलर ने वाल्टर की बात काटते हुए कहा ।

"मैं...मैं...तुम्हारे हैट को सिर नही झुका सकता ।" टैम ने दृढ़ता से कहा और कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा ।

टेम की तेज आवाज सुनकर विलियम पिता के पास आया । बोला—"पिता जी, आपके और देश के मान-सम्मान से मेरा सिर बड़ा नहीं । देश के मान के लिए मेरा मरना कोई बुरा नहीं । आप मेरे लिए हैट को सिर न झुकाएं ।"

विलियम की बात मानकर वाल्टर टेम ने अपना धनुष-बाण उठाया । विलियम को निश्चित स्थान पर खड़ा किया गया । टेम ने अनार को अपना निशाना बनाया । उसने दृढ़ता से धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाई और तीर सनसनाता विलियम की ओर बढ़ गया । निशाना ठीक लगा । विलियम के सिर पर रखा अनार पलक मारते ही हवा में उड़ गया । सभी लोग खुशी में चिल्लाए—'वाल्टर टेम जिंदाबाद !' वाल्टर टेम जिंदाबाद !

गेसलर यह सब देखकर सकपका गया । वह भीड़ में से न जाने कब गायब हो गया । वाल्टर टेम ने दौड़कर अपने बेटे विलियम का माथा चूमा और दोनों अपने रास्ते पर चल पड़े ।●
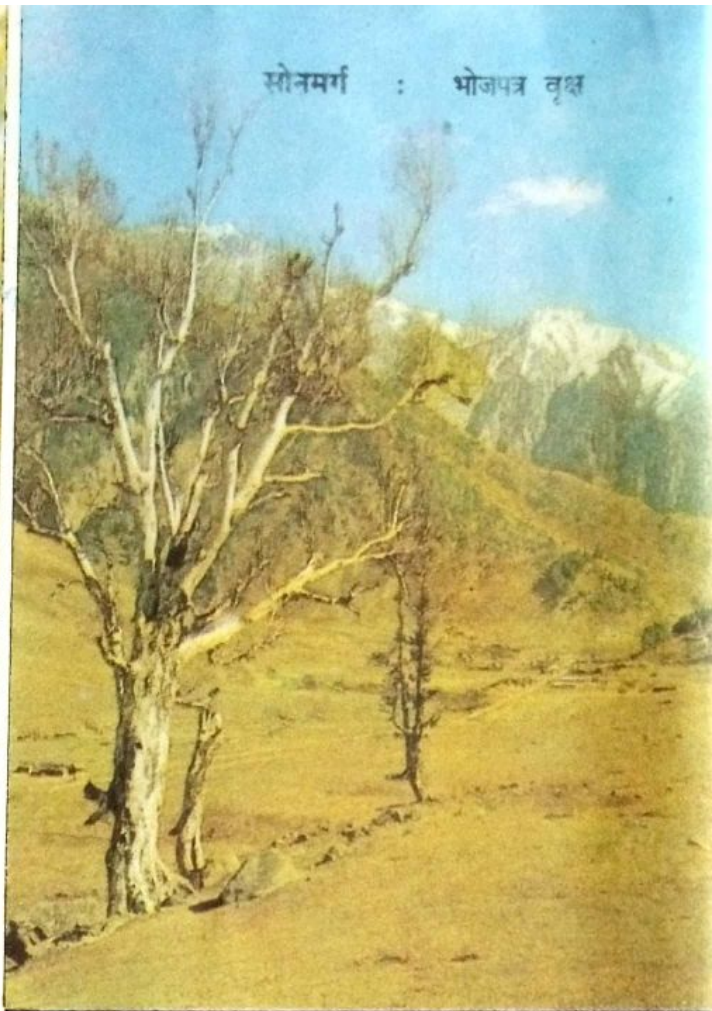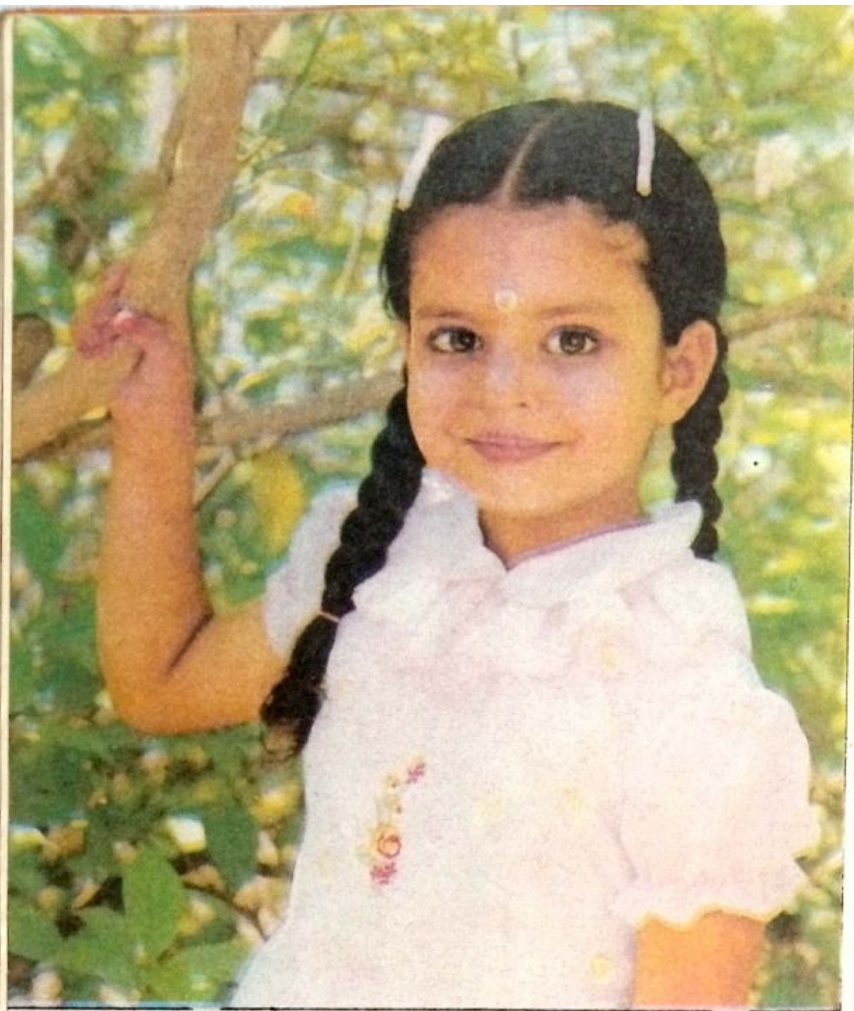
सोनमर्ग : भोजपत्र वृक्ष

पर्वत कहते अजब कहानी
फूल, घाटियां, झर-झर पानी

श्रीनगर : डल झील में शिकारा
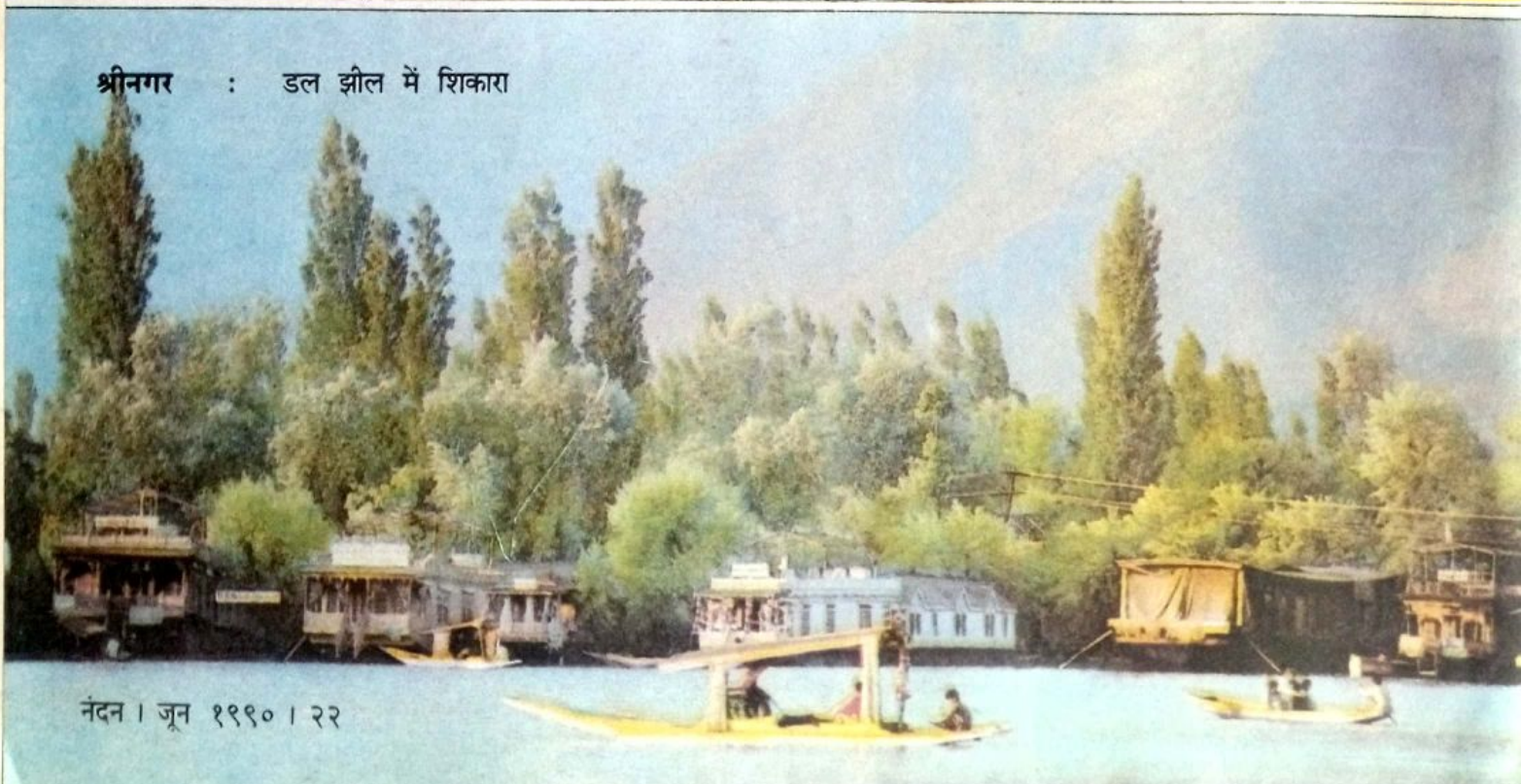
चमोली : अनुपम छटा
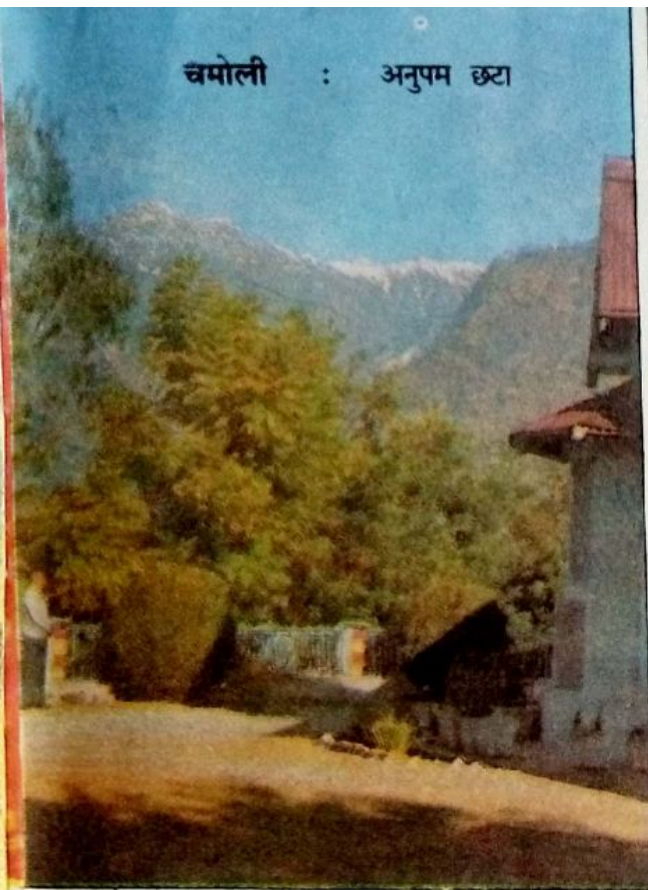
मनाली : बर्फ ढके पहाड़
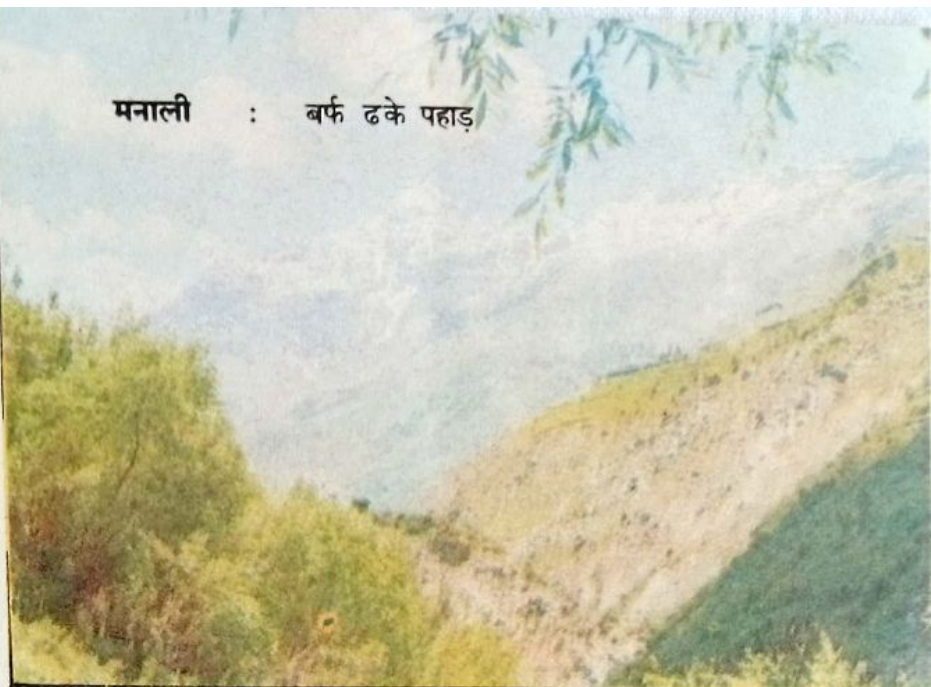
गुलमर्ग : हरियाले पर्वत
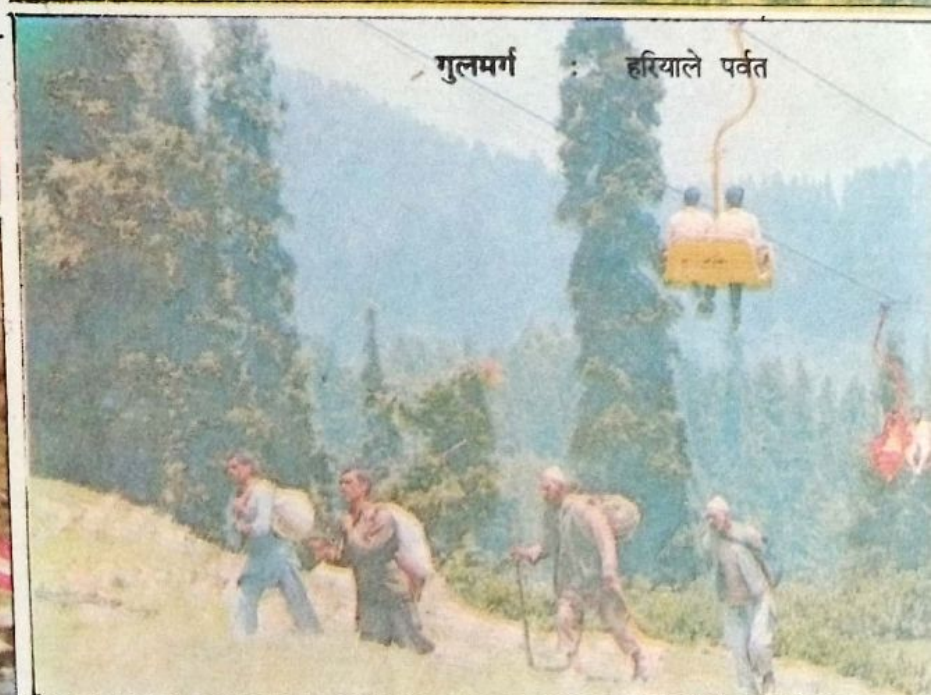
गढ़वाल : बद्रीनाथ मंदिर

ऊटी : हरी धरती, नीला पानी
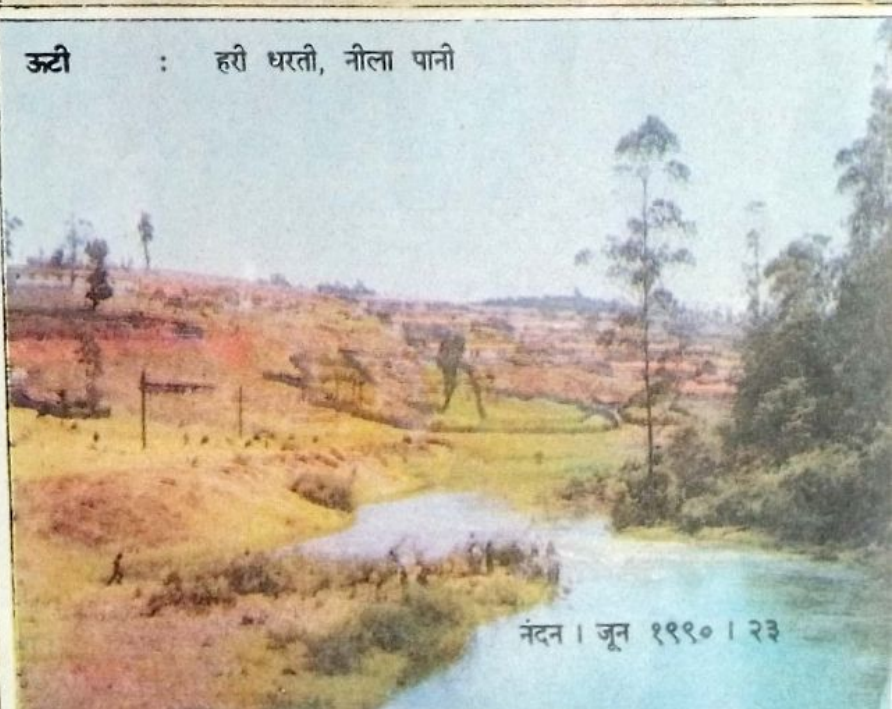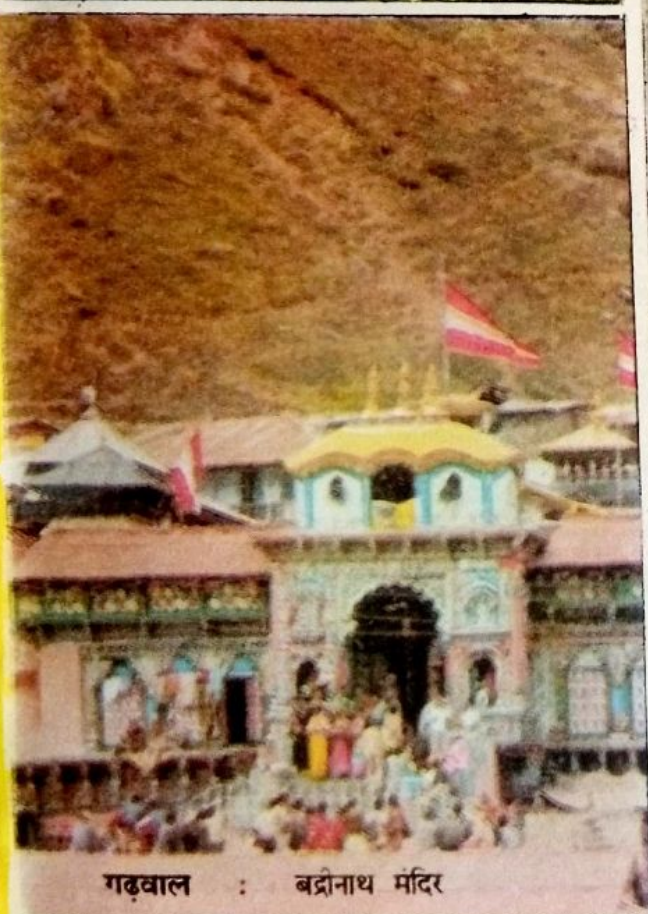
चित्र : पी. के. छिब्बर, कुलवंत सिंह, धर्मनाथ प्रसाद, कमल, पी. के. आंग्रा, विद्याव्रत, शशि शर्मा

विश्व की महान कृतियां : तमिल

सूरज नहीं निकला

— एस. वेदनायकम पिल्लै

शिवपुरी में कनकचल मुदलियार रहते थे। खूब धनी और रोबदार। लेकिन मन के उदार थे। लोगों की मदद भी करते। उनका एक ही बेटा था— प्रताप, जिसे वह जी-जान से चाहते थे। पिता के ज्यादा लाड़-प्यार के कारण प्रताप बिगड़ने लगा। खूब शरारती भी हो गया।

प्रताप बड़ा हुआ, तो उसकी मां सुंदर अत्री ने कहा—"अब शरारतें कम करो। नहीं तो स्कूल में तुम्हारा दाखिला नहीं होगा।"

लेकिन प्रताप के पिता ने हंसकर कहा—"जल्दी क्या है ? अभी तो इसके खेलने के दिन हैं।"

प्रताप के सभी साथी स्कूल जाने लगे थे। पर प्रताप दिन भर घर में ऊधम और शरारतें करता रहता। सुंदर अत्री यह देखकर चिढ़तीं। प्रताप अब किसी का कहना मानता ही नहीं था। दादी के लाड़ ने उसे और सिर पर चढ़ा दिया था।

आखिर सुंदर अत्री को एक उपाय सूझा। उन्होंने घर पर ही प्रताप की पढ़ाई-लिखाई का इंतजाम कर दिया। एक अध्यापक घर पर प्रताप को पढ़ाने आने लगा। लेकिन प्रताप ने कुछ नहीं सीखा। उलटा वह अध्यापक ही उसकी शरारतों से तंग आकर चला गया। इसी तरह एक-एक कर बारह अध्यापक प्रताप को पढ़ाने के लिए आए। असफल होकर लौट गए।

फिर एक निर्धन अध्यापक उसे पढ़ाने के लिए आने लगे। अध्यापक का भी एक दत्तक पुत्र था—कनकसबै। जब वह प्रताप को पढ़ाते, कनकसबै भी पास ही बैठकर पाठ याद करने लगता। प्रताप तो शरारतों में लगा रहता, पर कनकसबै झट से पाठ याद करके सुना देता। फिर भी मास्टर जी प्रताप
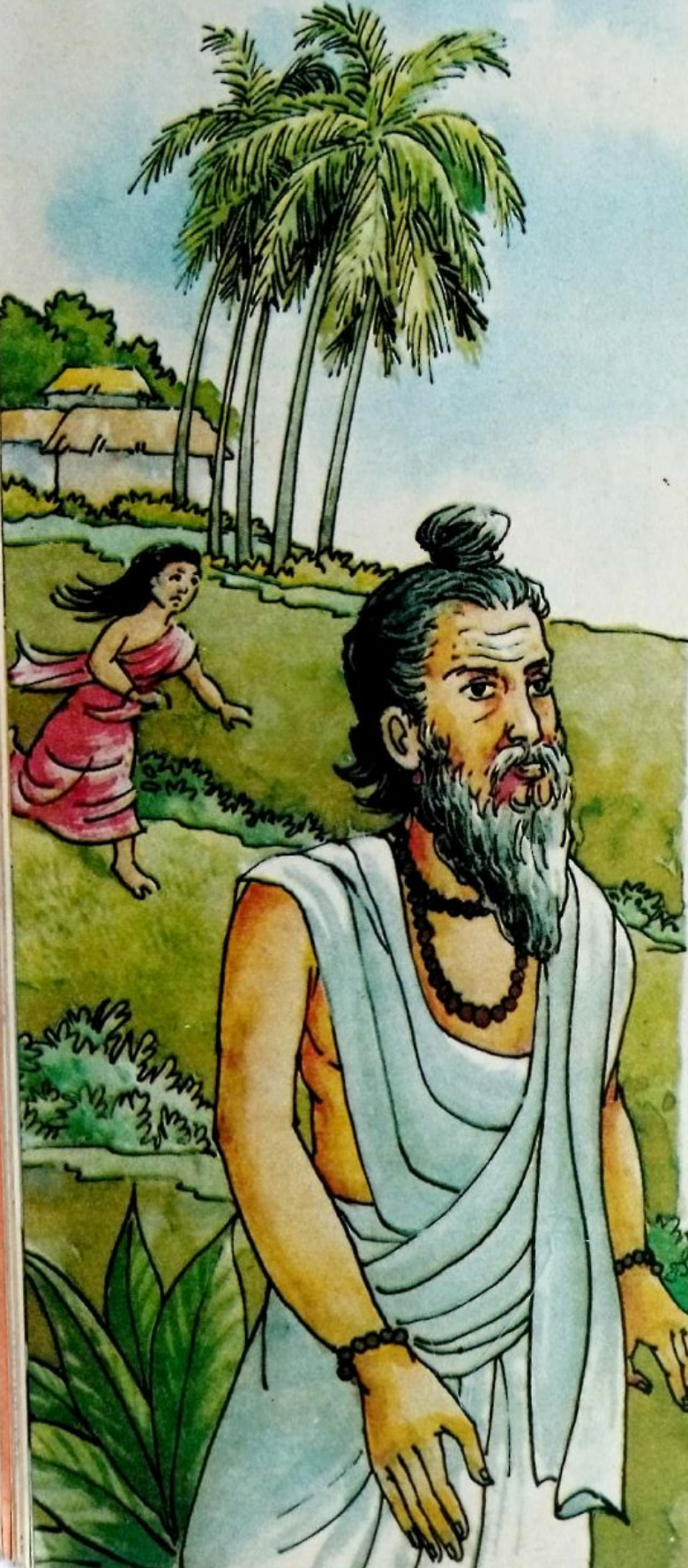
को डांटते नहीं थे । प्रताप की दादी ने मास्टर जी से कहा था—"जब प्रताप गलती करे या पाठ याद न हो, तो उसके बजाय अपने बेटे को मारना ।" लिहाजा प्रताप के पाठ याद न करने पर कनकसबै की पिटाई होती ।

एक दिन मास्टर जी कनकसबै को पीट रहे थे, तो प्रताप की आंखों में आंसू आ गए। सोचने लगा—'कनकसबै कितनी बुरी हालत में रहता है । न अच्छा खाने को है, न पहनने को । फिर भी पढ़ाई में कितना होशियार है । क्या मैं भी इसी तरह बुद्धिमान नहीं हो सकता ? फिर इसे मेरे बदले नहीं पिटना पड़ेगा ।'

उसी दिन से प्रताप का जीवन बदल गया । उसने शरारतें करनी छोड़ दीं । पढ़ने-लिखने में ध्यान लगाने लगा । कनकसबै को भी उसने दोस्त बना लिया । धीरे-धीरे प्रताप भी खूब होशियार हो गया । न सिर्फ मास्टर जी, बल्कि प्रताप के माता-पिता भी यह देखकर खुश थे ।

कुछ समय बाद प्रताप की मां ने प्रताप और कनकसबै को दूर के एक रिश्तेदार के यहां भेज दिया । उनकी एक बेटी थी ज्ञानाम्बल । बहुत सुंदर और बुद्धिमान थी ज्ञानाम्बल। प्रताप और कनकसबै ज्ञानाम्बल के साथ-साथ ही पढ़ने लगे ।

एक दिन प्रताप, ज्ञानाम्बल और कनकसबै के साथ एक बगीचे में खेल रहा था । बगीचे में ही तालाब था । अचानक खेलते-खेलते कनकसबै का पैर फिसला । वह तालाब में जा गिरा । उसे पानी में छटपटाते देख, प्रताप बोला— "मुझे तैरना नहीं आता । जल्दी करो ज्ञानाम्बल, किसी को बुलाकर लाओ । वरना कनकसबै बचेगा नहीं ।"

ज्ञानाम्बल दौड़ पड़ी । रास्ते में एक साधु जा रहा था । उसे बुलाकर लाई । साधु पानी में कूद पड़ा । थोड़ी ही देर में वह कनकसबै को बचाकर किनारे पर ले आया । जड़ी-बूटियों का रस पिलाया । कनकसबै को होश आया, तो साधु उसे एकटक देखता रह गया । फिर पूछा—"कहां रहते हो बेटे ?"
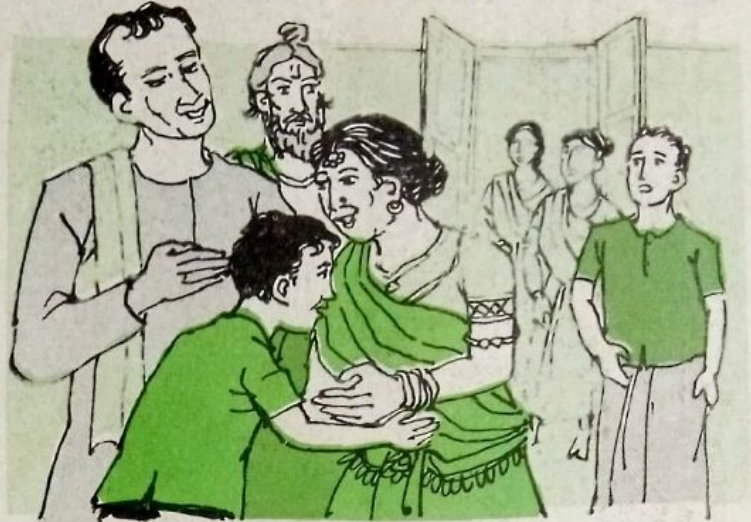
प्रताप ने अपने घर का पता बता दिया । साधु वहां से चला गया ।

कुछ दिन बाद साधु लौटकर आया । लेकिन वह अकेला न था । चमचमाते रथ पर एक बूढ़ा और बुढ़िया बैठे थे । पीछे-पीछे घोड़ों और हाथियों पर बहुत-से लोग थे । चलते-चलते वे प्रताप के घर के पास आकर रुक गए ।

कुछ देर बाद साधु और वृद्ध दम्पति रथ से उतरे । बूढ़े ने बताया कि वह पास के एक राज्य का जमींदार है । तभी खेलते हुए बच्चे वहां आ गए । साधु ने कनकसबै की ओर इशारा करके कहा—"देखिए, वह रहा आपका बेटा !"

सुनते ही बुढ़िया ने कनकसबै को छाती से लगा लिया, आंसुओं से नहला दिया । बूढ़ा भी प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरता रहा । बाकी लोग आश्चर्य से टुकर-टुकर देख रहे थे ।

बूढ़े जमींदार ने तब पूरी घटना सुनाई— "कई बरस पहले की बात है । एक बार मैं बीमार पड़ा था । किसी ने कहा, तीर्थयात्रा करने से लाभ होगा । बेटे कनकसबै को छोटे भाई के पास छोड़, मैं पत्नी के साथ तीर्थयात्रा करने चल पड़ा । छोटे भाई के मन में कुछ लोभ आया । उसने नौकर से कहा—'जंगल में जाकर उसका काम तमाम कर दो, ताकि जमींदार की धन-सम्पत्ति का वारिस बन सकूं ।'

"नौकर को बालक पर दया आ गई । उसने एक गरीब अध्यापक के यहां उसे छोड दिया और कहीं जाकर साधु बन गया । यात्रा से लौटा, तो भाई ने बताया— 'कनकसबै जाने कहां चला गया ?' बाद में मेरा भाई बीमार पडा । मरने से पहले सारी बातें उसने एक पत्र में लिख दी थीं । पत्र पढकर हमने कनकसबै को बहुत ढूंढ़ा । परसों साधु ने आकर बताया— 'कनकसबै जीवित है । चलिए, मिला दूं ।'

जमींदार की बात सुनकर हर कोई सकते में गया । प्रताप के पिता ने कहा— "कनकसबै, तुमने बहुत दुःख देखा है । अब अपने पिता के पास सुख से रहो ।" प्रताप से बिछुड़ते समय कनकसबै की आंखें भर आईं ।

प्रताप और ज्ञानाम्बल पढ़ाई में जुट गए । हालांकि रह-रहकर उन्हें कनकसबै की याद आती । बडे होने पर प्रताप और ज्ञानाम्बल के माता-पिता ने निश्चय किया— दोनों का विवाह हो जाना चाहिए । वे एक-दूसरे को चाहते भी थे । दोनों इस बात से प्रसन्न थे । लेकिन छोटी-सी एक बात पर संकट पैदा हो गया । ज्ञानाम्बल के पिता ने कहा— "विवाह के बाद प्रताप हमारे यहां ही रहेगा, घर-जमाई बनकर ।" इस पर प्रताप के पिता भडक उठे । बोले— "अब यह विवाह नहीं हो सकता ।"

बात बनते-बनते टूट गई । प्रताप और ज्ञानाम्बल अलग-अलग रहने लगे । हालांकि उनका लगाव पहले से भी अधिक बढ़ गया था । एक दिन ज्ञानाम्बल अपने माता-पिता के साथ पास के एक गांव में गई थी । लौटते समय उसकी पालकी को डाकुओं ने घेर लिया । वे ज्ञानाम्बल को उठाकर ले जाना चाहते थे । प्रताप को पता चला, तो अपने मित्र के साथ घोड़े पर दौडा-दौडा आया । उसने डाकुओं का पीछा किया । दो डाकू मारे गए । कुछ को उसने रस्सियों से बांध दिया । ज्ञानाम्बल को जरा भी चोट नहीं आई । प्रताप बोला— "चलो ज्ञानाम्बल, घर चलो । मेरे रहते कोई तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकता ।"

ज्ञानाम्बल के माता-पिता को पता चला, तो उन्हें

एस. वेदनायकम पिल्लै— उन्नीसवीं सदी के तमिल के प्रसिद्ध विद्वान और उपन्यासकार । धर्म और समाज सुधार पर बहुत-सी पुस्तकें लिखीं । उनका लिखा उपन्यास 'प्रताप मुदलियार चरितम्' तमिल का प्रथम उपन्यास है । यहां संक्षेप में उसकी कथा दी जा रही है । —सं

अपनी गलती महसूस हुई । बड़े बुजुर्गों ने दोनों के घर वालों को समझाया । प्रताप और ज्ञानाम्बल का धूमधाम से विवाह हुआ । तय यह हुआ कि प्रताप और ज्ञानाम्बल दोनों साल में छह महीने प्रताप के माता-पिता के पास रहेंगे । अगले छह महीने वे ज्ञानाम्बल के माता-पिता के पास रहेंगे । कुछ समय तो यह चला । लेकिन दोनों के माता-पिता फिर किसी न किसी बात पर लड झगड पडते । रोज की चख-चख से दोनों दुखी थे । एक बार ज्ञानाम्बल बीमार पडी । प्रताप कुछ दिन चुप-चुप रहा । फिर एक चिट्ठी छोडकर कुछ खास सेवकों के साथ निकल पडा । ज्ञानाम्बल को चिट्ठी मिली, तो वह हक्की-बक्की रह गई । चिट्ठी में प्रताप ने लिखा था— 'मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर पा रहा । इसलिए तुम्हें छोडकर जा रहा हूं ।'

चिट्ठी पढ़ते ही ज्ञानाम्बल भी कुछ सेवकों को लेकर निकल पडी । चलते-चलते कुछ आगे उसे प्रताप मिला । ज्ञानाम्बल ने कहा— "अकेले क्यों चले आए ? मुझे कहते, तो क्या मैं साथ न आती ?" प्रताप ने अपनी गलती मान ली । फिर दोनों साथ-साथ चल पडे । रास्ते में कनकसबै के माता-पिता मिले । वे उन्हें अपने घर ले गए । कनकसबै प्रताप और ज्ञानाम्बल से मिलकर बहुत खुश हुआ । कनकसबै के विवाह की जोर-शोर से तैयारियां चल रही थीं ।

एक दिन की बात है । प्रताप और कनकसबै जंगल में शिकार के लिए गए । प्रताप हाथी पर आगे-आगे चल रहा था । अचानक कहीं से बाघ आ निकला । प्रताप ने बाघ का पीछा किया । उस पर बंदूक से गोली चला दी । बाघ तो भाग गया, लेकिन गोली की आवाज सुनकर हाथी भडक उठा । वह अंधाधुंध भागने लगा । तीन दिन तक वह लगातार

भागता रहा। फिर एक पहाड़ी के निकट आया। प्रताप को एक चट्टान पर पटककर जंगलों में भाग गया। प्रताप कई दिनों तक बेहोश पड़ा रहा।

होश आया, तो प्रताप उठकर आगे चल दिया। एक अजीब-से राज्य में जा पहुंचा। वहां ज्यादातर चोर, डाकू और ठग ही थे। उस राज्य का कोई राजा ही नहीं था। प्रताप को अजनबी जानकर किसी ने उसके रत्न हथिया लिए, किसी ने सोने का हार और किसी ने हीरे की अंगूठी। प्रताप हक्का-बक्का रह गया। उसने मदद के लिए आवाज लगाई। लेकिन कोई पास नहीं आया। ठग चुपचाप चले गए। उलटा प्रताप को ही जेल में डाल दिया गया।

प्रताप दुखी हो गया। वह अपने दुर्भाग्य को कोसने लगा। बैठा-बैठा सोचता रहा। अचानक उसके मन में एक विचार आया। उसे पता था, अगले दिन सूर्यग्रहण है। उसने मौके का फायदा उठाने का निश्चय किया।

जेल के फाटक के पास खड़े होकर किसी फकीर की तरह जोर-जोर से कहना शुरू किया— "अगर तुम मुझे नुकसान पहुंचाओगे, तो मैं भी तुम्हें शाप दे दूंगा। अगले दिन राज्य में सूरज नहीं निकलेगा। तुम सभी अंधेरे में रहोगे।"

जो भी सुनता, इस बात पर हंस पड़ता। लोग तरह-तरह से उसका मजाक उड़ाने लगे। जज ने कहा— "अच्छा, ठीक है। अगर तुम कल सूरज को निकलने से रोक सके, तो तुम्हें जेल से रिहा कर दिया जाएगा।"

लेकिन अगले दिन सचमुच सूरज नहीं निकला। शहर के लोग अचम्भे में पड़ गए। प्रताप के पैरों पर गिरकर माफी मांगने लगे। प्रताप बोला— "ठीक है। अगर तुम लोग अपने बीच से ही किसी अच्छे व्यक्ति को राजा चुन लो, तो मैं सूरज को फिर निकलने का आदेश दूंगा।" देखते-ही-देखते अंधेरा छंट गया। आसमान में सूरज चमकने लगा। यह देख, लोग नया राजा चुनने के लिए दौड़ पड़े। प्रताप को जेल से छुड़ाना किसी को याद ही नहीं रहा।

उस राज्य की प्रथा थी—शाही हाथी जिसे फूलों का हार पहनाए, वही राजा चुना जाता था। इसलिए तुरंत शाही हाथी लाया गया। आगे-आगे फूलों का हार लिए शाही हाथी चल रहा था। पीछे लोगों की भीड़। अचानक शाही हाथी ने एक सुंदर युवक को हार पहना दिया। लोग जय-जयकार कर उठे। नए राजा को राजमहल में लाया गया।

राजा ने सभी कैदियों के बारे में पूछा। खुद उनके बारे में जांच की। जैसे ही प्रताप के बारे में पता चला। राजा ने कहा— "यह निर्दोष है। इसे छोड़ दिया जाए।" लेकिन प्रताप शहर में किसी को जानता नहीं था। उसे महल में सोने की इजाजत दी गई।

प्रताप सो रहा था। अचानक रात में उसे किसी की आवाज सुनाई दी— 'उठो प्रताप, उठो!' प्रताप ने चौंककर आंखें खोलीं। देखा कि ज्ञानाम्बल सामने खड़ी है। प्रताप को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। पर तभी ज्ञानाम्बल ने सारी बात बताई। कहा— "तुम्हारे पीछे-पीछे तुम्हें ढूंढ़ने निकल पड़ी थी। पुरुष वेश में यहां आई, तो शाही हाथी ने गले में जयमाला डाल दी। मुझे राजा बनना पड़ा। तभी तुम्हारे बारे में पता चला।"

सारी घटना सुनकर प्रताप के चेहरे पर मुसकान आ गई। जैसे सारा दुःख भूल गया हो। उस दिन से प्रताप ज्ञानाम्बल के साथ ही रहने लगा। ज्ञानाम्बल हर मामले में प्रताप की सलाह लेती। पुरुष वेश में राजा के रूप में शासन चलाती। किसी को कुछ पता न चला।

पर कुछ दिनों बाद प्रजा ने आग्रह किया— "महाराज, आप विवाह कीजिए।" भला, ज्ञानाम्बल इस बात का क्या जवाब देती? उसने कुछ बहाना बना दिया। लेकिन प्रजा का आग्रह बढ़ता ही गया। हारकर ज्ञानाम्बल ने एक सभा बुलाई। प्रजा को सब कुछ सच-सच बता दिया। कहा— "वैसे भी अब राज्य में सुधार हो गया है। हम अपने घर जाएंगे।"

आंखों में आंसू भरकर प्रजा ने उन्हें विदा किया। ●

प्रस्तुत : टी. पक्षिराजन

आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं । ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है । नीचे इसी चित्र की नकल है । नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया । उसने कुछ गलतियां कर दीं । आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए । क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं । सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है । १० गलतियां ढूंढ़ने वाला: **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं । आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए । आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित **समय— १५ मिनट ।**

कहानी लिखो ७९

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखो। इसे १० जून ९० तक **सम्पादक नंदन हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली ११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी को पुरस्कार मिलेगा। इसे प्रकाशित भी किया जाएगा।

परिणाम : अगस्त ९०

चित्र पहेली-७९

'मिठाई की दुकान' विषय पर एक रंगीन चित्र बनाइए । चित्र को १० जून, ९० तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए । पसंद किया गया चित्र पुरस्कृत कर प्रकाशित किया जाएगा ।

परिणाम : सितम्बर '९०

राजा के लिए

—राजशेखर

सवेरे का समय था। मूर्तिकार देवसेन मूर्ति तराश रहा था। उसके एक हाथ में हथौड़ी और दूसरे हाथ में छेनी थी। दोनों हाथ बराबर चल रहे थे। रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। इस मूर्ति को तराशते हुए उसे कई दिन बीत गए थे। देवसेन आधी-आधी रात तक काम में लगा रहता। कड़े श्रम के बाद मूर्ति पूरी तरह तैयार हो गई। तब कहीं जाकर उसने चैन की सांस ली। शरीर पसीने से नहा रहा था। झटपट उसने मूर्ति को एक कपड़े में बांधा। फिर मूर्ति को बेचने बाजार की ओर चल पड़ा। देखते ही देखते उसकी मूर्ति बिक गई। क्यों न बिकती? मूर्ति थी भी बहुत सुंदर! तुरंत वह घर लौट पड़ा।

रास्ते में उसे बचपन का दोस्त शिव प्रसाद मिल गया। दोनों ने एक-दूसरे की कुशल-क्षेम पूछी। शिव प्रसाद बोला—"तुम गजब के मूर्तिकार हो। फिर भी मूर्तियां इतने कम दाम पर बेचते हो? तुम चाहते, तो ढेरों रुपया कमा लेते। औरों ने धन का अम्बार लगा लिया। लेकिन तुम वही फटेहाल हो।"

"मैं कला को व्यापार नहीं मानता। बस, एक मूर्ति उतने दाम पर बिक जाए, जितने से मुझे रोटी मिल जाए। मेरे लिए यही बहुत है।" —देवसेन ने कहा और हंस पड़ा।

बातों ही बातों में शिवप्रसाद का घर आ गया। वह अपने घर चला गया। हमेशा की तरह देवसेन एक दिन अपनी बनाई मूर्ति लेकर बाजार में बैठा था। तभी पता चला, थोड़ी ही देर में राजा बाजार देखने आने वाले हैं। यह खबर मिलते ही लोग तितर-बितर हो गए। देवसेन अपनी जगह बैठा रहा। थोड़ी देर में राजा विजयदेव का काफिला बाजार में पहुंचा। घूमते-घूमते राजा देवसेन के पास पहुंचे। वहां रखी मूर्ति देखी। सुंदर मूर्ति को देखते रहे। फिर सैनिकों से कहा—"मूर्तिकार को कल दरबार में लाया जाए।"

अगले दिन सैनिक देवसेन को दरबार में ले गए। राजा बोले —"मूर्तिकार, अगले सप्ताह मेरे मित्र राजा आने वाले हैं। उपहार देने के लिए कुछ बढ़िया मूर्तियां बना दो। मुंहमांगा इनाम मिलेगा।"

"महाराज, मुझसे यह काम नहीं हो सकेगा।"—देवसेन ने विनम्रता पूर्वक जवाब दिया।

यह सुन, राजा के माथे पर बल पड़ गए। उन्होंने तेज स्वर में पूछा—"क्यों? तुम मूर्तियां क्यों नहीं बना सकते?"

"क्योंकि कला का सम्बंध मन से होता है। वह आदेश पर नहीं चला करती।" —देवसेन ने निडर स्वर में कह दिया।

राजा गुस्से में आ गए। मंत्री ने कहा—"महाराज, यह मूर्तिकार भी विचित्र जीव है। मैंने सुना है, यह मूर्ति बहुत ही कम दामों पर बेचता है। कला का व्यापार नहीं करता।"

—"हम भी व्यापारी नहीं, कला के पारखी हैं। इसे मूर्तियों के मुंहमांगे दाम मिलेंगे। कलाकार को घमंडी नहीं होना चाहिए।"

"महाराज! यह घमंड नहीं, कलाकार का स्वाभिमान है।" —देवसेन ने सिर झुकाकर कहा।

अब राजा बरदाश्त न कर सके। उन्होंने कड़क कर कहा—"इस ढीठ कलाकार को कारागार में डाल दिया जाए। मैं कला का सम्मान करता हूं, इसलिए इसे मृत्युदंड नहीं दिया। वरना..."

देवसेन को कारागार में बंदकर दिया गया। दो दिन बाद राजा का अगला आदेश जारी हुआ— 'देवसेन कारागार में रहकर मूर्तियां नहीं बना सकेगा।' यह

इसलिए कि देवसेन ने मूर्ति बनाने के लिए पत्थर और छेनी-हथौड़ी दिए जाने की मांग की थी।

यह आदेश सुनकर देवसेन को बेहद दुःख हुआ। उसे लगा, जैसे किसी ने उसके हाथ काट लिए हैं। उसने कई दिन तक खाना नहीं खाया। रातों को सो न पाता। मन में बार-बार एक ही बात उभरती—'क्या राजा मुझसे मेरी कला छीन लेंगे ?' लेकिन कारागार में उसके प्रश्न का उत्तर कौन देता ?

इसी तरह कई महीने बीत गए। एक दिन विजयदेव दरबार में बैठे थे, तभी एक मूर्तिकार वहां आया। उसने राजा को नमस्कार करके कहा—"महाराज, मैं पड़ोसी देश का मूर्तिकार अचल हूं। मैंने कुछ समय पहले कुछ मूर्तियां बनाई हैं। काम पूरा हो गया है, पर मुझे लगता है—कहीं कुछ अधूरापन है, कमी है। मेरी आंखें उस दोष को पकड़ नहीं पा रही हैं। मैंने देवसेन का बहुत नाम सुना है। मैं मूर्तियां उसे दिखाना चाहता हूं। शायद वह मूर्तियों की कमी बता सके।"

राजा विजयदेव ने कहा—"देवसेन ही क्यों, यह काम तो हमारे नगर का कोई भी कुशल मूर्तिकार कर देगा। देवसेन अपराधी है। उसे बाहर आने की अनुमति नहीं दी जा सकती।"

लेकिन अचल बार-बार देवसेन से मिलने की अनुमति देने की प्रार्थना करता रहा। आखिर राजा विजयदेव ने अचल को देवसेन से मिलने की आज्ञा दे दी।

अचल देवसेन से मिला। देवसेन ने मूर्तियां देखनी चाहीं। उसे पहरे के बीच दरबार में लाया गया। अचल की बनाई मूर्तियां एक तरफ रखी थीं।

वह हथकड़ी-बेड़ी से जकड़ा, सिर झुकाए खड़ा था। राजा ने कहा—"देवसेन, तुम चाहो, तो अचल की बनाई मूर्तियां सुधार दो। मैं इसके लिए अनुमति देता हूं।"

देवसेन ने कहा—"महाराज, छेनी-हथौड़ी को छुए कितना समय बीत गया। मुझे लगता है, अब मैं कभी मूर्ति नहीं बना पाऊंगा।" कहकर वह रोने लगा, फिर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। दरबार में सन्नाटा छा गया। तुरंत वैद्य को बुलाया गया। उसने जांच करके कहा—"महाराज, इसके मन पर गहरा आघात लगा है। वैसे रोग कोई नहीं है।"

वैद्य की बात सुनकर विजयदेव गहरे सोच में डूब गए। उस रात कई बार उनकी नींद टूट गई। हर बार मन में आया, जैसे उनके हाथ से कुछ अन्याय हो गया है। सुबह उन्होंने देवसेन का हाल पूछा। उसे कारागार से निकाल कर चिकित्सालय में रखने का आदेश दिया।

दो दिन बाद राजा को सूचना मिली कि देवसेन कुछ ठीक है। वह स्वयं उससे मिलने गए। उन्होंने कहा—"देवसेन, मैं समझ गया हूं कि कला को कैद नहीं किया जा सकता। कला को आदेश की रस्सी से

नहीं बांधा जा सकता। मैं तुम्हें मुक्त करता हूं।"

देवसेन को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, पर यह सच था। वह कारागार से छोड़ दिया गया था। उसके बाद देवसेन नगर में नहीं रुका। वह नगर से निकल पड़ा। जंगल में जा पहुंचा। वहीं एक छोटी नदी बहती थी। जंगल में फलों के कई वृक्ष थे। देवसेन ने वहीं कुछ समय बिताने का निश्चय किया।

इसके कुछ दिन बाद वहां से गुजरते लोगों ने खटखट की आवाज सुनी। देखा, एक व्यक्ति तन्मयता से मूर्ति गढ़ने में लगा है। वह देवसेन था। फिर तो नदी किनारे कई मूर्तियां दिखाई देने लगीं। देवसेन हर समय अपनी कला की साधना में लगा रहता। अक्सर आते-जाते लोग उत्सुक होकर वहां रुक जाते। उसे काम करते हुए देखते रहते। वे देवसेन से कुछ पूछना चाहते थे, पर वह किसी से न बोलता, चुपचाप अपना काम करता रहता। हर मूर्ति पर एक ही वाक्य लिखा नजर आता—'राजा के लिए।'

आखिर यह समाचार राजा को भी मिला। राजा जानने को उत्सुक हो उठे। एक दिन स्वयं वहां जा पहुंचे। सचमुच हर मूर्ति पर एक ही वाक्य लिखा था—'राजा के लिए।'

राजा विजयदेव देवसेन के पास जा पहुंचे। उन्हें देखते ही देवसेन ने प्रणाम किया। राजा ने पूछा—"कलाकार, मैं प्रसन्न हूं कि तुम फिर से मूर्तियां बनाने लगे हो। पर इस वाक्य का क्या रहस्य है?"

देवसेन ने कहा—"महाराज, ये सब मूर्तियां आपको भेंट हैं। आपके कारण ही मुझे मेरी खोई हुई कला वापस मिली है। अगर आपने उसे छीना था, तो लौटाने वाले भी आप ही हैं।"

देवसेन की बात सुनकर राजा का मन भीग उठा। उन्होंने देवसेन का कंधा थपथपा दिया। कहा—"तुम कुछ भी मांग लो। राज्य से हर सहायता मिलेगी तुम्हें।"

"बस, मुझे यहां रहकर मूर्तियां बनाने की अनुमति दी जाए। मैं और कुछ नहीं चाहता।"— देवसेन ने कहा। फिर हंस पड़ा। राजा भी मुसकरा रहे थे। ●

सब सोने का

—डा. जितेन्द्रपाल चंदेल

एक दिन राजा वीरभद्र शिकार पर निकले। साथ में बहुत लोग थे, पर एक हिरन का पीछा करते-करते राजा बहुत दूर निकल गए। धूप तेज थी। यह पता नहीं चल रहा था कि किधर से आए हैं और किस तरफ जाना है।

प्यास से गला खुश्क हो गया। तभी दूर घने पेड़ों के पीछे पानी की झलक मिली। कुछ चम-चम चमकता दिखाई दिया। राजा उत्सुक होकर उस दिशा में बढ़ चले। देखा और देखते रह गए। एक पेड़ की छांह में एक विचित्र हिरन खड़ा था। उसकी खाल चम-चम चमक रही थी। ऐसा हिरन तो वीरभद्र ने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। उन्होंने धनुष पर तीर चढ़ा लिया, निशाना साधने लगे। पर फिर मन में आया—'ऐसे हिरन का शिकार करना ठीक नहीं। इसे तो पकड़कर रखना चाहिए।' राजा सोचते रहे और हिरन तीर की तरह भाग निकला।

एकाएक राजा के कानों में किसी स्त्री के रोने का स्वर आया। उन्होंने घोड़े की रास खींच ली। आवाज की दिशा में देखा, तो चौंक उठे। आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। थोड़ी दूर पर सुनहरी रंग की एक औरत खड़ी दिखाई दी। पहले सोने का हिरन और अब सुनहरी औरत। यह क्या चक्कर था!

वह घोड़े को धीरे-धीरे उस विचित्र औरत की तरफ बढ़ा ले गए। उन्होंने पूछा—"तुम कौन हो?"

राजा ने कई बार अपने प्रश्न दोहराए, पर उस औरत ने जवाब नहीं दिया। बस, रोती रही। फिर उसने मुंह की ओर इशारा करके सिर हिला दिया। अब राजा वीरभद्र कुछ समझे—शायद वह औरत गूंगी थी।

तभी सोने के रंग वाली औरत ने उत्तर दिशा की ओर संकेत किया। वह राजा को अपने पीछे आने का संकेत करके आगे-आगे चल दी। उलझन में डूबे
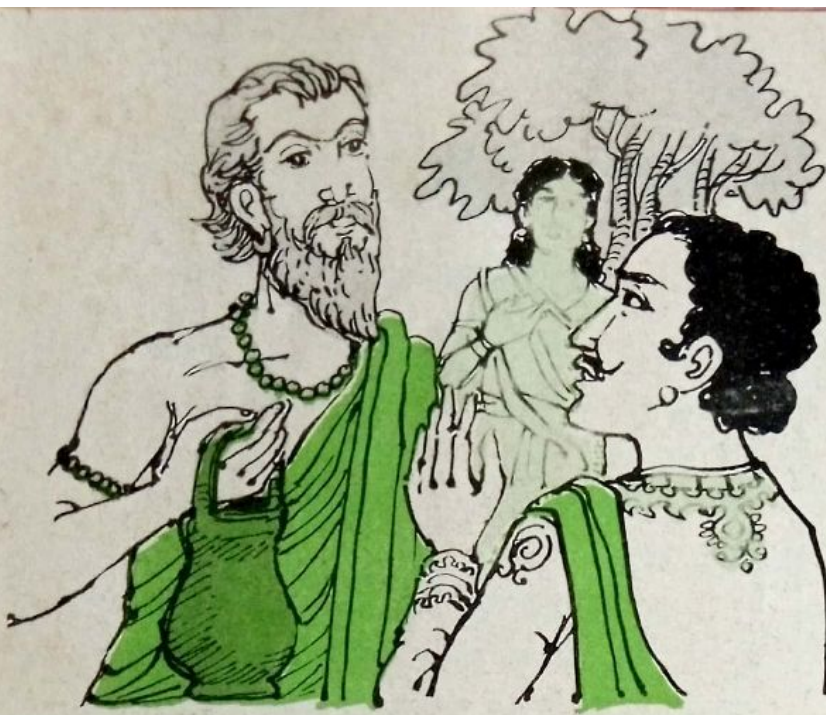
राजा वीरभद्र सुनहरी शरीर वाली औरत के पीछे चल दिए।

बीच-बीच में वीरभद्र कुछ पूछते, तो वह विचित्र स्त्री आगे की ओर इशारा कर देती। उसके पीछे चलते हुए राजा एक सरोवर के तट पर जा पहुंचे। वह आश्चर्य से सरोवर की ओर देखते रहे। सरोवर के तट पर पड़ी शिलाएं भी सोने की मालूम दे रही थीं। राजा को जोरों की प्यास लग आई। वह पानी पीने के लिए सरोवर की ओर बढ़े, पर तभी उस औरत ने कसकर राजा का हाथ पकड़ लिया। इशारे से बताने लगी कि उधर मत जाओ।

उस स्त्री ने रोते हुए पहले अपनी तरफ संकेत किया। फिर सरोवर के तट पर पड़ी सुनहरी चट्टानों की ओर इशारा करने लगी। राजा इतना समझ पाए कि वह उन्हें सरोवर का पानी पीने से मना कर रही है।

राजा ने देखा—दूर-दूर तक कहीं कोई नहीं था। वह सोचने लगे—'कौन बताएगा मुझे इसका रहस्य ?' तभी उन्होंने एक भगवा वेशधारी व्यक्ति को उस तरफ आते देखा। वीरभद्र ने उनके चरण छुए, अपना परिचय दिया, फिर पूछने लगे—"महाराज, यह सब क्या है ?"

साधु ने कहा—"राजन, यह जो चमक देख रहे हो, यह लोभ-लालच की है, जो लोगों को अंधा कर देती है। कुछ समय पहले यहां एक पहुंचे हुए ऋषि आए थे। उन्होंने इस सरोवर के तट पर धूनी रमाई थी। तब यहां एक गांव था। गांव वालों ने साधु महाराज की खूब सेवा की। गांव वाले बहुत निर्धन थे। उनकी स्थिति देखकर ऋषि को दया आ गई। उन्होंने गांव वालों को आशीर्वाद दिया कि वे तालाब के पानी में जो भी वस्तु डुबाएंगे, वह सोने की हो जाएगी।"

"तब गांव वालों ने क्या किया महाराज ?"—वीरभद्र ने पूछा।

—"वही जो मनुष्य प्रायः करते हैं। ऋषि से यह वरदान पाकर उन लोगों का लालच बढ़ता गया। फिर वे धन के लिए आपस में ही मारकाट करने लगे। इस पर ऋषि ने उन्हें शाप दिया कि जो भी सरोवर के जल का स्पर्श करेगा, वह गूंगा हो जाएगा।"

"उस दिन के बाद ऋषि यह स्थान छोड़कर चले गए। गांव वाले भी डरकर यहां से भाग गए। वस्तुएं, मनुष्य और पशु-पक्षी इसी कारण सुनहरे हो जाते हैं।"—साधु महाराज ने बताया। अब राजा समझ गए कि वह स्त्री सुनहरी और गूंगी क्यों थी ?

वीरभद्र ने कहा—"महाराज, कितने खेद की बात है, लालच से एक भरी-पूरी बस्ती उजड़ गई। दुष्ट लोग दंड पा चुके। अब यह शाप समाप्त हो जाना चाहिए।"

तब तक वह स्त्री भी साधु महाराज के चरणों में आ गिरी और रोने लगी।

साधु महाराज ने कुछ सोचा, फिर बोले—"राजन, तुमने सच्चे मन से कुछ मांगा है और वह भी औरों के लिए।" उन्होंने कमंडल में से जल हाथ में लिया। आंखें बंदकर कुछ बुदबुदाते रहे, फिर अंजुलि में भरा जल सरोवर में डाल दिया।

जोर की आवाज आई। सरोवर के किनारे पड़ी चट्टानों का सुनहरी रंग गायब हो गया। उस स्त्री की त्वचा का रंग भी सामान्य हो गया।

उसका गूंगापन दूर हो गया था। बाद में उसने बताया—"मैं पहाड़ों में अपने परिवार के साथ रहती थी। एक रोज यहां आई, तो मैंने सरोवर का पानी पी लिया। बस, त्वचा सुनहरी हो गई। मैं गूंगी हो गई। तबसे मैं ऐसे ही भटक रही थी।" ●

उपहार

—नीलम शर्मा

एक थे राजा शीलभद्र। उनकी इकलौती बेटी थी रत्नमणि। बड़ी ही जिद्दी थी राजकुमारी। राजा-रानी के दुलार ने उसे हठी भी बना दिया था। बस, जो कह दे, पूरा हो। जिस बात पर अड़ जाए, टस से मस न हो। धीरे-धीरे समय बीता। राजकुमारी शादी के लायक हो गई।

रानी ने राजा से कहा— "बेटी जवान हो गई। शादी-विवाह की चिंता करो। राजकुमारी भले ही हमारी इकलौती संतान है, मगर एक न एक दिन उसे विदा करना ही पड़ेगा।"

राजा ने मंत्री से कहा। मंत्री ने दूर-पास के सभी राजाओं, राजकुमारों को संदेश भिजवा दिला। रत्नमणि जिद्दी भले ही थी, मगर गुणवान और सुंदर थी। शिकार खेलना, तीर चलाना, घुड़सवारी करना उसे अच्छी तरह आता था।

ऐसी गुणी और रूपसी राजकुमारी को भला कौन पत्नी न बनाना चाहे। बहुत-से राजा और राजकुमार आए, मगर राजकुमारी को कोई पसंद न आया। राजा परेशान कि क्या करें?
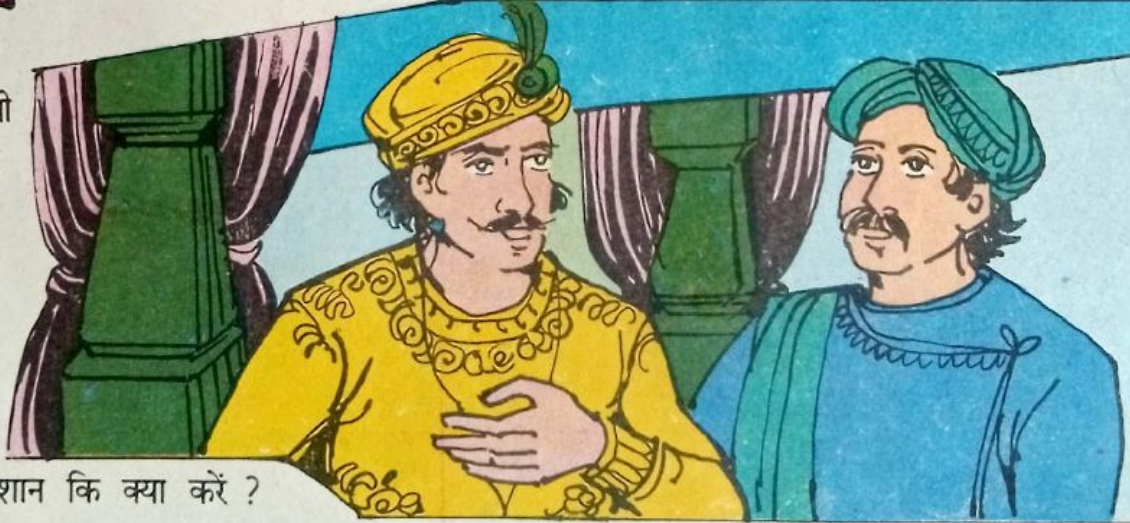
पड़ोसी राजा रतनसिंह युवा और सुंदर था। उसकी वीरता की चर्चा दूर-दूर तक थी। था भी अविवाहित। राजा ने उसके पास संदेशा भेजा। शीलभद्र को आशा थी, राजकुमार रतनसिंह को पसंद कर लेगी, मगर उसे देखकर भी राजकुमारी ने मुंह बिचका दिया। राजा शीलभद्र को बहुत बुरा लगा। उन्होंने स्वयं संदेशा भेजकर बुलाया था रतनसिंह को। फिर भी वह चुप रहे। रतनसिंह को समझा-बुझाकर भेज दिया।

राजा शीलभद्र क्रोध में थे। उन्होंने घोषणा की— "आज से आठवें दिन सुबह-सुबह जो आदमी सबसे पहले राजमहल के द्वार के आगे से गुजरेगा, उसी के साथ राजकुमारी का विवाह होगा।"
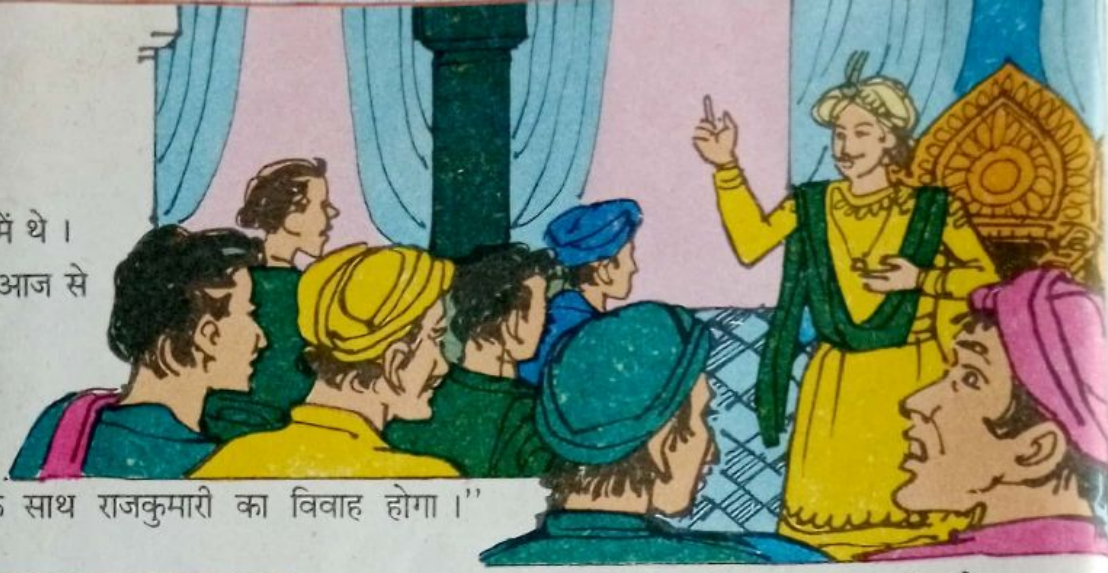
जिसने सुना, आश्चर्य चकित। राजकुमारी भी परेशान, मगर राजा अपनी प्रतिज्ञा पर अटल थे। आठवां दिन आया। एक लकड़हारा महल के द्वार से गुजरा। बस, उसी के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया गया। बेचारी बहुत रोई-चिल्लाई, मगर राजा ने एक न सुनी।

विवाह होने के बाद राजा ने पचास स्वर्ण मुद्राएं लकड़हारे को दीं। कहा— "तुम इसी वक्त राजकुमारी को लेकर पैदल ही मेरे राज्य की सीमा से बाहर निकल जाओ।"

लकड़हारा राजकुमारी को ले, एक जंगल में आया। फूंस की झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। पचास स्वर्ण मुद्राओं से कुछ दिन खूब खाया-पिया, मौज की, मगर उनके समाप्त होने पर लकड़हारा बोला— "राजकुमारी जी, पैसा खत्म हुआ। अब मेहनत करनी पड़ेगी। मैं लकड़ियां काटूंगा। तुम उन्हें बेचकर आना। इसी तरह गुजारा चलेगा।"

भूखा क्या न करता। लकड़हारे ने लकड़ियां काटीं। गट्ठर बांधकर राजकुमारी के सिर पर रख दिया। कभी बोझ उठाया नहीं था रत्नमणि ने। किसी तरह गट्ठर उठाकर बाजार में गई। मगर आवाज लगाकर लकड़ियां बेचे कैसे ? शर्म के मारे चुप खड़ी रही। शाम को लकड़हारा आया। देखकर बोला— "क्या लकड़ियां बिकी नहीं ?"

''क्या करती, मुझे यह काम आता ही नहीं ?''— राजकुमारी बोली। दोनों खाली हाथ झोंपड़ी में आए।

दूसरे दिन लकड़हारे ने कहा— ''ऐसे काम कैसे चलेगा ! कुछ तो करना ही होगा तुम्हें। एक काम करो। तुम खाना बनाने में निपुण हो। मेरी पहचान का एक आदमी राजा रतनसिंह के महल में है। उससे कहकर राजा की रसोई में तुम्हें काम दिलवा दूंगा। अच्छी पगार मिलेगी।''

सुनकर राजकुमारी सोचने लगी— 'जिस राजा को मैंने ठुकरा दिया, अब उसी की चाकरी करनी पड़ेगी।' मगर उसने यह बात लकड़हारे को नहीं बताई। आखिर उसे राजमहल की रसोई में नौकरी मिल गई। उसका बनाया खाना राजा को बहुत पसंद आया। इसी तरह दिन बीतने लगे।

राजा का जन्म दिन आया। महल में धूमधाम होने लगी। बड़ा भोज हुआ। बहुत-से राजा-महाराजा आए। भोज के बाद राजा रतनसिंह ने कहा— ''मैं अपने हाथ से महल के सेवकों को उपहार दूंगा।''
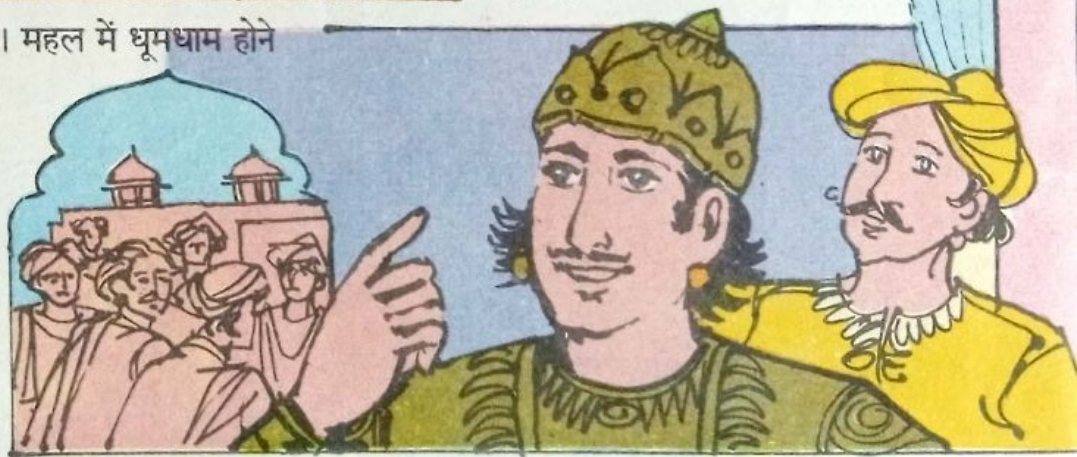
सारे सेवक-सेविकाएं एक-एक करके उपहार लेने आए। रत्नमणि की भी बारी आई। वह सिर झुकाए, राजा के सामने आ खड़ी हुई। राजा बोला— ''रत्नमणि, तुम्हें क्या उपहार दूं। तुम्हें तो मैं अपनी रानी बनाना चाहता हूं।''

सुनकर रत्नमणि चौंकी। उसने कहा— "राजन, आपको ऐसा नहीं कहना चाहिए। मैं विवाहिता हूं। भले मेरा पति लकड़हारा है, मगर मैं उसे चाहती हूं। मैं आपके साथ विवाह नहीं करूंगी।"

"बुरा न मानो। तुम्हारे पति से पूछकर ही मैंने यह प्रस्ताव रखा है। तुम चाहो तो स्वयं अपने पति से पूछ लो। ठहरो, मैं उसे अभी बुलाता हूं।"— कहकर रतनसिंह अंदर गया। कुछ देर बाद उसी कमरे से लकड़हारा निकलकर आया। उसे देखकर राजकुमारी ने कहा— "तुम! क्या तुम यहां छिपे थे?"
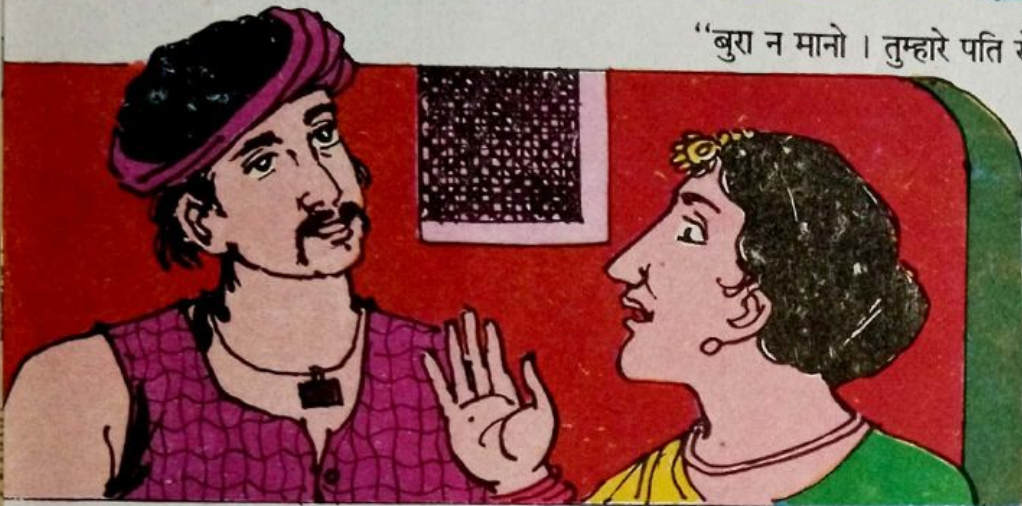
— "हां, छिपा था। गौर से देखो! क्या मैं राजा जैसा नहीं लगता।"

रत्नमणि ने गौर से देखा। लकड़हारा और कोई नहीं, राजा रतनसिंह ही था। राजकुमारी कुछ कहती, उससे पहले ही रतनसिंह बोला— "तुम्हें पाने के लिए मुझे यह नाटक रचना पड़ा। तुम्हारे पिता जी ने ही यह उपाय बताया था। वह भी यहां हैं।"

और तभी राजा-रानी आ गए। सभी प्रसन्न थे। अपने दामाद और बेटी को राजा-रानी ने बहुमूल्य उपहारों से लाद दिया। राजा रतनसिंह तो फूला नहीं समा रहा था, उसे तो सबसे बड़ा उपहार पहले ही मिल चुका था।

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ४० रुपए
दो वर्ष : ७५ रुपए

वर्ष २६, अंक ८, नई दिल्ली; जून '९०, वैशाख-ज्येष्ठ, शक सं. १९१२

सागर की लहरों पर शिक्षा

पिछले दिनों एक अनूठा विद्यालय मद्रास आया था—सागर की लहरों पर तैरता हुआ। उसमें ५२२ छात्र थे। तैरता हुआ विद्यालय पानी का एक जहाज है। उसका नाम है एस. एस. यूनिवर्स (विश्व)। यह सौ दिन की शिक्षा यात्रा पर अमरीका से चला था। रास्ते में यह बारह बंदरगाहों पर ठहरा। उनमें एक था—मद्रास।

इसका उद्देश्य है—छात्र केवल किताबों के पन्नों के बीच में सिमटे न रहें। बाहर निकलकर अपने आप दुनिया देखें, समझें और नई-नई बातें सीखें।

सागर की लहरों पर शिक्षा का विचार सिंगापुर के सी. वाई. थुंग का है। इसके लिए 'इंस्टीट्यूट आफ शिप बोर्ड एजूकेशन' स्थापित किया गया था। तैरता हुआ यह विद्यालय अमरीका के पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय की देखरेख में चलाया जा रहा है।

उड़न गिलहरी

उदयपुर। यहां के अभयारण्य में जंगली गिलहरियों की भरमार है। राजस्थान में जंगली गिलहरियां सिर्फ यहीं पाई जाती हैं। पहली बार १९८० में यहां उड़न गिलहरी पाई गई थी। खोजने पर ग्यारह गिलहरियां और मिलीं। अब ये बढ़कर बयालीस हो गई हैं।

नेत्रहीनों की चित्रकारी

जिनेवा। अब नेत्रहीन भी चित्रकारी कर सकते हैं। उनके लिए एक ऐसा ड्राइंग पैन तैयार किया गया है, जिसकी स्याही सूखकर उठ जाती है। इसे वे हाथ से छूकर महसूस कर सकते हैं। इस पैन का आविष्कार करने वाले गिवर्ड विकलांग बच्चों के स्कूल में पढ़ाते हैं।

घर में दफ़्तर

वाशिंगटन। अमरीका में कुछ कम्पनियां अपने कर्मचारियों के लिए नई योजना बना रही है। इसमें कर्मचारियों को नौकरी करने के लिए दफ़्तर जाने की जरूरत नहीं होगी। वे घर में बैठकर अपना काम कर सकेंगे। इसे नाम दिया गया है—टेलीकंप्यूटिंग।

उर्दू में रामायण

नई दिल्ली। उर्दू में वाल्मीकि रामायण के बीस अलग-अलग लोगों द्वारा किए गए रूपांतर हैं। भारत के अन्य धर्मों के बारे में भी चार सौ पुस्तकें छपी हैं। महाभारत के भी दस रूपांतरण मौजूद हैं। उर्दू में वेदों का भी दस भागों में रूपांतर हो चुका है।

लगातार समय

लंदन। बिगबेन का एक पहिया जाम हो गया और वह बंद हो गई। तीन घंटे की मरम्मत के बाद यह ठीक हो सकी। यह घड़ी एक सौ तीस वर्ष से समय बता रही है।

भारत के गीत

अल्माअट्टा। कजाखिस्तान की राजधानी में शांति क्लब है। इस क्लब के सभी सदस्य भारत प्रेमी हैं। हिंदी से उन्हें लगाव है। लेकिन यहां कोई स्कूल नहीं है, जहां हिंदी सिखाई जाती हो। फिर भी क्लब के कई सदस्यों ने हिंदी सीखी है। वे भारतीय गीत गाते हैं। भारतीय नाच करते हैं। भारत की फिल्में दिखाई जाती हैं। क्लब की संचालिका जैतून मासूमोवा पहली बार भारत आई। वह भारतीय नृत्यों से बहुत प्रभावित हैं। वर्ष के अंत में क्लब के सदस्यों का एक प्रतिनिधिमंडल भारत आएगा।

मुंह पर पेंच

ओटावा। मशीन को ठीक करने के लिए पेच लगाए जाते हैं, मगर मनुष्य के चेहरे की विकृति ठीक करने के लिए भी अब पेच लगाए जाएंगे। ये पेच टाइटेनियम धातु के बने होंगे। इतने छोटे कि सूक्ष्मदर्शी से देखें जा सकें। अब तक इस विधि से चार सौ रोगी ठीक हो चुके हैं।

सबसे छोटी घड़ी

मास्को। उसका नाम है निकोलाई। उसे अपने सांस लेने के तरीके को भी बदलना पड़ा। कारण वह दुनिया की सबसे छोटी घड़ी बनाना चाहता था। घड़ी के पुर्जे इतने पतले थे कि सांस से ही इधर-उधर उड़ने लगते थे। इससे पहले निकोलाई दुनिया का सबसे छोटा इंजन बना चुका है।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार -
नंदन बाल समाचार

जो दीन-हीन व्यक्ति का भी सम्मान करता है, वही महापुरुष है । —विदुर नीति

मुंह से रंगीन चित्र

हरिराम कोहली मुंह में ब्रश पकड़कर चित्र बनाता है । उसने तरह-तरह के रंग-बिरंगे चित्र बनाए हैं— फूलों के, चिड़ियों के और प्राकृतिक दृश्यों के । दस हजार से अधिक बधाई-पत्र भी बना चुका है । कई इनाम भी मिले हैं ।

हरिराम के हाथ-पांव हैं, पर वे काम नहीं करते । वह अच्छा छात्र था, उसने फुटबाल, वालीबाल तथा दूसरे खेलों में पुरस्कार जीते । एक दिन गर्दन पर चोट आई, तो उसके हाथ-पांव बेकार हो गए । कई बरस बहुत परेशान रहा, इलाज कराता रहा, पर कुछ न हुआ । अचानक एक दिन डाक्टर ने कहा— "तुम मुंह से पेंटिंग बनाया करो ।" हरिराम ने शुरूआत कर दी । धीरे-धीरे उसके लिए आशा की किरण चमक उठी । नई राह उसे मिल गई । कहते हैं— एक द्वार बंद होता है, तो दूसरा खुल जाता है ।

भारतीय संगीत की धूम

नई दिल्ली । तबले की थाप, वीणा की रुनझुन और हारमोनियम के सुर अब अमरीका और यूरोप में खूब गूंज रहे हैं । वहां भारतीय संगीत लगातार लोकप्रिय हो रहा है । खास तौर से भारतीय वाद्य यंत्रों में लोगों की दिलचस्पी बढ़ रही है ।

छोटी चेचक का टीका

शिकागो । अमरीका में वैज्ञानिकों ने छोटी चेचक रोकने का टीका तैयार किया है । छोटी चेचक बच्चों में महामारी की तरह फैलती है । अभी तक इसका कोई टीका नहीं था ।

नया राष्ट्रीय स्मारक

हाजीपुर । मुख्यमंत्री लालूप्रसाद यादव ने कहा है कि वैशाली को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में विकसित किया जाएगा । बुद्ध और महावीर की इस कर्मभूमि से सभी भाईचारे और प्रेम का संदेश पा सकेंगे ।

गद्दे पर विमान

बर्लिन । सीरिया का एक विमान पचपन यात्रियों को लेकर जा रहा था । अचानक चालक ने सूचना दी कि इंजन में खराबी आ गई है । यदि जहाज को तुरंत न उतारा गया, तो खतरा हो सकता है । जहाज इस हालत में भी नहीं था कि हवाई अड्डे पहुंच सकता । उसे सुरक्षित उतारने के लिए मोटे-मोटे फोम के गद्दे डाले गए । उन पर जहाज सुरक्षित उतर आया ।

भारतीय बच्चे आगे ही आगे

लंदन । 'इनर लंदन एजूकेशन अथारिटी' ने लगभग बीस हजार बच्चों के परीक्षा फल का विश्लेषण किया । इसमें पाया गया कि जो भारतीय बच्चे यहां पढ़ते हैं, वे मेहनती और तेज हैं । वे सबसे अधिक अंक प्राप्त करते हैं । इसका कारण बच्चों के माता-पिता का उनमें दिलचस्पी लेना और बच्चों का उत्साह बढ़ाना है । भारतीय बच्चों के बाद इटली, स्पेन और पूर्वी यूरोप के बच्चों का नम्बर है ।

श्री इंदु का सम्मान

पटना । 'नंदन' के सहायक सम्पादक श्री चंद्रदत्त 'इंदु' को बिहार राजभाषा विभाग ने पुरस्कृत किया है । उनके ऐतिहासिक नाटक 'खंडहर के आंसू' पर रामबृक्ष बेनीपुरी पुरस्कार दिया गया है ।

जूनागढ़ के शेर

राजकोट । जूनागढ़ के गिरि वन में शेरों की संख्या कम हो रही थी । उन्हें बचाने का प्रयास किया गया । लेकिन अब उनकी संख्या बढ़ गई है । वे जंगल से बाहर निकल, मनुष्यों और पशुओं पर हमला करने लगे हैं । जल्दी ही इन शेरों के लिए कोई और वन तलाश किया जाएगा ।

जापान और ज्योतिष

तोक्यो । जापान में ज्योतिष के प्रति दिलचस्पी पैदा हो रही है । वहां ज्योतिष की एक पत्रिका 'माई बर्थ डे' चार लाख बिकती है । आजकल कई कम्पनियां ज्योतिष सम्बंधी खेल बनाने लगी हैं ।

बच्चों के लिए

संयुक्तराष्ट्र । विभिन्न देश के राष्ट्राध्यक्षों का सम्मेलन २९-३० सितम्बर को होगा । अपनी तरह का यह पहला सम्मेलन है जिसमें बड़े-बड़े नेता बच्चों की समस्याओं पर विचार करेंगे । इसमें बच्चों का पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा उनके अधिकारों पर बातचीत की जाएगी ।

सांप ने गोली चलाई

तेहरान । एक आदमी झील में मछली पकड़ रहा था । अचानक एक जहरीला सांप वहां आ पहुंचा । आदमी ने सांप पर वार किया लेकिन सांप उछलकर एक ओर हो गया । सांप बंदूक के घोड़े पर तेजी से लिपट गया और गोली चल गई ।

कबूतर चिट्ठी लाएंगे

बोलनगीर । अभी भी कबूतर चिट्ठी लाने ले जाने का काम करते हैं । चुनाव संदेशों को कबूतरों के माध्यम से भेजा गया । तीस कबूतरों को इसके लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया था । उड़ीसा भारत में ऐसा अकेला राज्य है, जहां पुलिस विभाग में कबूतर भी हैं ।

नई रोशनी

कोलम्बो । वह चौंतीस वर्ष की थी । एक आंख से बिलकुल दिखाई नहीं देता था । देश के मशहूर नेत्र विशेषज्ञ ने उसकी जांच की । पता चला कि आपरेशन होना चाहिए । आपरेशन किया गया । रोशनी लौटी तो वह एक-एक करके सबको पहचानने लगी—अपने मालिक को भी । यह थी एक हथिनी । देश में यह अपनी तरह का पहला आपरेशन था ।

पवित्र बरगद

पिल्लालमारी । आंध्र प्रदेश के तैलंगाना क्षेत्र में एक बरगद का पेड़ है । समझा जाता है कि यह पांच सौ वर्ष पुराना है । इसकी शाखाएं और जड़ें दूर-दूर तक फैली हैं । लोग इस बरगद की पूजा करते हैं ।

अमरीका में गरीबी

न्यूयार्क । अमरीका में गरीब बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है । १९८७ में एक सर्वेक्षण किया गया था । उस समय गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले बच्चों की संख्या लाखों में थी । अब यह संख्या बढ़ गई है ।

अग्रसेन पार्क

नई दिल्ली । बस अड्डे के पास निकलसन पार्क का नाम बदल कर अग्रसेन पार्क रखा गया है । यहां महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा भी लगाई जाएगी ।

नं. बा. स. ३६ स

खूब रही यह भी

काहिरा । डाक से एक मजदूर को सात हजार डालर का चैक मिला । यह उसकी मौत का मुआवजा था । मजदूर हक्का-बक्का रह गया । दरअसल दो वर्ष पहले उसका पासपोर्ट किसी ने चुरा लिया था । उस व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु हो गई । पासपोर्ट में पता-ठिकाना देखकर अधिकारियों ने मुआवजा भेज दिया ।

बुजुर्गों की सेवा

फिलाडेल्फिया । अमरीका में बुजुर्गों की देखभाल की भावना बढ़ रही है । नौकरी करने वाले बहुत-से परिवार अपने माता-पिता और सास-ससुर की देखभाल करते हैं । वहां अब बुजुर्गों के साथ समय बिताना, उन्हें खाना खिलाना और उनके स्वास्थ्य की चिंता की जाती है । परिवार का लगाव बढ़ने के कारण बूढ़े लोगों का अकेलापन कम होने लगा है ।

पूरा डायनोसोर

बंगूलर । गोदावरी जिले में पहली बार किसी डायनोसोर का पूरा कंकाल मिला । इसे साबुत उठाने के लिए वैज्ञानिकों को कड़ी मेहनत करनी पड़ी । पहले आसपास की जमीन को गहरा खोदा गया । फिर कंकाल पर ऐसे रसायन छिड़के गए, जो उसे टूटने से बचा सकें । तब कहीं जाकर उसे उठाया जा सका ।

पचास हजार की साड़ी

नई दिल्ली । प्रगति मैदान में हस्त-शिल्प मेला लगा । इसमें एक रेशमी साड़ी में पंद्रह सौ खाने थे । हर खाने का डिजाइन अलग था । इसकी कीमत थी पचास हजार रुपए । ऐसा शाल भी यहां था, जिसे बनाने में डेढ़ साल लगा । मेले में भारतीय कलाकारी के अद्‌भुत नमूने प्रस्तुत किए गए थे ।

नन्हे समाचार

☐ फ्रांस में ढाई वर्ष का एक बच्चा नवीं मंजिल से गिरा, पहले पेड़ से टकराया, फिर धरती पर आ गिरा । आश्चर्य, उसे कुछ न हुआ ।

☐ लंदन में ईस्टर के अवसर पर १५ किलो सोने का बना अंडा प्रदर्शित किया गया । इसमें २०,००० गुलाबी हीरे जड़े हुए हैं ।

☐ स्वीडन के एक डाक्टर ने कहा है—हंसी से तनाव घटता है, पर इस डाक्टर को बहुत कम लोगों ने हंसते हुए देखा है ।

☐ अंतरिक्ष शटल डिस्कवरी ने आकाश में एक दूरबीन स्थापित की है । उसका नाम है हबल । यह पृथ्वी के वातावरण से ऊपर रहकर ग्रह-नक्षत्रों के बारे में नई खोज करेगी ।

☐ नमीबिया राष्ट्र संघ का १६०वां सदस्य बन गया है । यह अफ्रीकी देश हाल ही में स्वाधीन हुआ है ।

☐ अब तक नौ भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधान दल दक्षिण ध्रुव पर जा चुके हैं ।

☐ विश्व के प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारकों की एक सूची बनाई गई है । उसमें १४ स्मारक भारत के हैं ।

☐ नेपाली शेरपा आंग रिता छह बार दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत शिखर माउंट ऐवरेस्ट पर चढ़ चुके हैं ।

☐ पुरातत्व विज्ञानियों ने एलोरा में २८ प्राचीन गुफाएं और खोज निकाली हैं ।

☐ वेनेजुएला की एक जेल से पांच कैदी भाग निकले । रास्ते में उन्हें एक खाली कार खड़ी मिल गई लेकिन उनमें से किसी को भी कार चलानी नहीं आती थी । उन्हें दोबारा पकड़ लिया गया ।

☐ चीन में एक ऐसे कबीले का पता चला है, जो पिछले ढाई सौ वर्षों से अलग-थलग, दुर्गम क्षेत्र में रह रहा है ।

सचित्र समाचार

केलिफोर्निया (अमरीका) की 'हिन्दू सोसायटी' भारतीय उत्सवों को धूमधाम से मनाती है। एक उत्सव में चारु और सुदीप माथुर।

एस.एफ. रोड्रिक्स: भारत के नए थल सेना अध्यक्ष। →

← जानी-मानी गायिका लता मंगेशकर इस वर्ष दादा साहब फालके पुरस्कार से सम्मानित।

हंगरी की चित्रकार रोजालिया सी. द्वारा बनाई गईं सरस्वती। →

← कड़क धूप से कैसे बचूं ! चलो बोरी को ही छतरी बना लूं।

झट-से आकाश में अरे यह क्या ! जिलिन पीकिंग ओपेरा की एक झांकी। →

मनीषा वर्मा : शौर्य चक्र से सम्मानित। मनीषा ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए एक संस्था भी बनाई है। →

मीनार का कैदी

कुछ दिन बाद राज्य पर विपत्ति टूटी। राजा के पास दैत्य का समाचार पहुंचा

बचाओ

भागो

आह

हार-झक मारकर राजा ने घोषणा कराई
जो दैत्य को जीवित पकड़ेगा, खूब इनाम पाएगा
नजरबंद मंत्री ने भी यह घोषणा सुनी
मैं पकड़ूंगा
राजा ने मंत्री को बुलाया, बात सुनी
नहीं पकड़ सके, तो मृत्यु दंड
जी
मंत्री उस ओर चला, जिधर से राक्षस आया था
घर्र-र्र-र्र... घर्र-र्र-र्र...
दैत्यराज, मेरी रक्षा करो

मंत्री गया, तो देखा—दैत्य सो रहा था..
जीत गया तो जीवन। हार गया तो...
घर्र..घर्र..र्र..र्र..

दैत्य जागा, तो चकित
कौन हो तुम? यहां क्यों बैठे हो?
तुम मुझे खा जाओ

दैत्य हैरान! ऐसा आदमी तो पहली बार देखा।पूछने पर मंत्री ने चाल चली
राजा ने सब कुछ छीन लिया। अब तुम्हारी शरण में हूं
राजा को ऐसा सबक सिखाऊंगा..

दैत्य के कहने पर उसी रात मंत्री उसे राजा के पास ले जाने लगा....
तुम उसे दिखा दो। उसे मारकर तुम्हें राजा बना दूंगा
रोज तुम्हारे भोजन का प्रबंध कर दूंगा

मंत्री दैत्य को मीनार की तरफ ले गया....
मीनार में छिप जाओ। राजा यहां रोज आता है
अच्छा...

दैत्य मीनार में गया
फाटक क्यों बंद करते हो... ?
बाहर से फाटक बंदकर
खुले फाटक से राजा को संदेह होगा इसलिए. . .

मीनार के चारों ओर आग जला दी।
दैत्य कूदकर भागा, तो जल गया।
उसके बाद दैत्य को किसी ने नहीं देखा।

मंत्री राजा के पास पहुंचा
दैत्य मीनार में कैद है, महाराज !
क्या सच !
हम तुम पर प्रसन्न हैं। क्षमादान के साथ एक हजार स्वर्ण मुद्राएं भी
मैं भी आभारी हूं, महाराज !

करतब दिखाओ

—डा. जयनारायण कौशिक

राजा भोज के दरबार में मोहन भाट नाम का व्यक्ति था। वह अजीब-अजीब किस्से सुनाकर राजा का मनोरंजन करता था। उसका सारा समय दरबार में बीतता। घर की देखभाल के लिए उसे समय नहीं मिलता था।

एक बार मोहन भाट की पत्नी ने कहा—"आप घर और बच्चों का ध्यान ही नहीं रखते। राज दरबार में नौकरी करते हो। इस टूटे-फूटे घर में रहना अच्छा नहीं लगता। नया घर बनवाओ।"

मोहन भाट ने कहा—"अच्छा, आज ही बहुत-सा धन लेकर लौटूंगा।"

वह दरबार में गया। कहा—"महाराज, मुझे अपना घर बनवाना है। कुछ रुपए-पैसों की सहायता कीजिए।"

राजा ने खजांची से कहा—"मोहन भाट को दो सौ रुपए खजाने से दे दो।" खजांची ने तुरंत दो सौ रुपए मोहन को दे दिए। उसने रुपए लेकर अंटी में लगा लिए।

राजा ने कहा—"मोहन, पैसे तो तुमने ले लिए, पर कोई करतब तो दिखाओ, जिससे मुझे लगे कि खजाने के दो सौ रुपए किसी काम तो आए।" मोहन भाट कुछ समय चुप रहा। फिर उसने दो सौ रुपए अंटी से निकालकर लौटा दिए। और घर की राह ली। राजा भोज ने सोचा—'शायद मुझसे व्यवहार में कोई भूल हो गई।'

मोहन भाट की पत्नी ने पूछा—"क्या राजा ने घर बनाने के लिए कुछ धन दिया?"

मोहन भाट ने कहा—"हां, बहुत धन दिया। धीरे-धीरे खजाने से पैसा आने लगेगा, संभाल कर रखना।"

अब मोहन भाट ने राजा को कोई करतब दिखाने की योजना बनाई। उसने एक कमजोर-सा बैल खरीदा। बैल पर एक गुदड़ी डाली। साधुओं का वेश धारण किया। एक हाथ में शंख और दूसरे हाथ में घंटा लिया। बगल में दंड दबाया, पैरों में खड़ाऊं पहनी। बाबा का रूप धारण कर, वह रात पड़े गांव के मंदिर के पास पहुंचा और शंखनाद किया।

उस मंदिर में रत्नी पंडी रहती थी। लोग उसे सिद्ध तपस्विनी कहते थे। शंख की ध्वनि सुनकर वह बाहर आई। बाबा को श्रद्धा के साथ प्रणाम किया। कहा—"बाबा, यह नादिया लिए किधर की राह पकड़ी इस समय?"

बाबा ने कहा—"मुझे स्वर्ग की सीढ़ियों का ज्ञान हुआ है। मैं सीधा स्वर्ग जा रहा हूं।"

यह सुनकर रत्नी पंडी ने उत्सुकता से कहा—"महाराज, मेरी तपस्या भी पूरी हुई लगती है। भगवान ने आप जैसे साधुओं को मेरे द्वार पर भेजा है। मुझे भी अपने साथ स्वर्ग ले चलो।"

उसकी बात सुनकर बाबा ने कहा—"तुम्हारे पास जितना रुपया है, उसका आधा गांव के मोहन भाट के घर दान स्वरूप भेज दो। बाकी पैसा कल मंदिर में भोजन भंडारे पर खर्च कर दो। स्वर्ग जाने से पहले धन का मोह त्याग देना चाहिए। मैं कल रात फिर आऊंगा।"

मोहन भाट अपने करतब की पहली सीढ़ी दिखाकर वहां से चलता बना। उधर संध्या की आरती-पूजा के लिए दारोगा भी मंदिर में पहुंचा।

रत्नी ने दारोगा से सब बात कह सुनाई। दारोगा ने कहा—"साधु से मेरी भी सिफारिश करवा दो। मैं

स्वर्ग जाना चाहता हूं।''

उसी समय शंखनाद करते हुए साधु वहां प्रकट हुए। रत्नी पंडी ने श्रद्धाभाव से कहा—''महाराज, राजा भोज का दारोगा भी स्वर्ग की सीढ़ी चढ़ना चाहता है। यदि आज्ञा हो, तो उसे भी साथ ले लें।''

बाबा बोले—''ठीक है, मगर स्वर्ग जाने से पहले धन का मोह त्यागना होगा। वह अपना आधा धन गांव के मोहन भाट को दान करे और कल मंदिर में भंडारा करे।''

दारोगा ने अपना आधा धन मोहन भाट के घर भिजवा दिया और दिन भर मंदिर में भरपूर भंडारे की व्यवस्था की। संध्या की आरती का समय हुआ। रत्नी पंडी और दारोगा प्रसन्न हो,पूजा कर रहे थे। उसी समय राजा भोज भी वहां जा पहुंचे। अपने दारोगा को साधु के वेश में देख, उनको बहुत आश्चर्य हुआ। राजा ने उत्सुकता से सारी बात जाननी चाही। रत्नी ने उन्हें स्वर्ग की सीढ़ी की बात बताई।

रात पड़े नादिया वाला बाबा मंदिर में पहुंचा। आते ही रत्नी पंडी से कहा—''आओ, दोनों प्राणी आओ। अब किसी की प्रतीक्षा न करो। बहुत विलम्ब हो चुका है।''

बाबा की बात सुनकर रत्नी पंडी ने कहा—''महाराज, एक विनती और है। इस नगरी का राजा भोज बहुत धर्मात्मा है। वह भी स्वर्ग की सीढ़ी चढ़ना चाहता है। आप उस पर भी कृपा करें।''

बाबा ने हाथ उठाकर कहा—''अच्छा, उसे भी बुलाओ।''

रत्नी राजा भोज को बाबा के सम्मुख लाई। बाबा ने राजा को ऊपर से नीचे तक निहारा। कहा—''बच्चा, धन का मोह त्यागो। मोहन भाट के घर एक हजार स्वर्ण मुद्राएं दान में भेजो। कल मंदिर में भरपूर भंडारा करो। तुम भी दारोगा की तरह वेश धारण करो। ठीक आधी रात मंदिर में पधारना। अपने मन की बात किसी को मत बताना। मैं तुम लोगों को लेने इसी समय आऊंगा।'' इतना कहकर वह चला गया।

अगले दिन राजा ने नादिया वाले बाबा के आदेशानुसार साधु का वेश धरा और मंदिर में पहुंचा। आधी रात तक तीनों प्राणी बाबा की प्रतीक्षा करते रहे। ठीक आधी रात शंखनाद हुआ। तीनों प्राणी हाथ बांधे बाबा के सामने आए। बाबा ने कहा—''मैं तुम्हारी सेवा से बहुत प्रसन्न हूं। अब तुम्हारा स्वर्ग की सीढ़ी चढ़ने का मुहूर्त आ गया। मैं तुम सबकी आंखों पर पट्टी बांधता हूं। तुम सभी सीधे चलते चलो। रुकना नहीं। आगे एक विमान मिलेगा। मैंने अपनी तपस्या से वह विमान स्वर्ग से बुलाया है। मैं भी तुम्हारे पीछे चलता हूं। जब घंटा बजाऊं, आंखों की पट्टी खोल देना।''

बस, आंखों पर पट्टी बांधकर चारों आगे बढ़ चले। चलते गए, चलते गए। कई घंटे बीत गए। घंटे की आवाज सुनाई नहीं दी। अब राजा को शंका हुई। आंखों की पट्टी खोली। वे शहर से दूर एक जंगल में थे। बाबा का दूर-दूर तक पता नहीं था। राजा ने उन दोनों की पट्टियां भी खुलवा दीं। उन्हें लगा, साधु ने ठग लिया है।

राजा बोले—''लगता है, वह साधु मोहन भाट से मिला हुआ है, तभी तो हम लोगों से उसके घर धन भेजने को कहा। वैसे भी मोहन भाट कई दिन से दरबार में नहीं आया। मैं कल ही उसको बुलाकर साधु की तलाश करवाता हूं।'' इसके बाद वे अपने-अपने घर लौट गए।

दूसरे दिन दरबार लगा। मोहन भाट को बुलवाया गया। राजा ने सारी बात बताकर बाबा का पता-ठिकाना पूछा। फिर कहा—''जालसाजी के लिए तुम्हें भी दंड दिया जाएगा।''

मोहन भाट ने हाथ जोड़कर कहा—''महाराज, मेरा क्या कसूर ? मैंने आपके आदेश का पालन किया। आप ही ने करतब दिखाने को कहा था, मैंने नादिया वाला बाबा बनकर करतब दिखा दिया। अब आप जो चाहें, सजा दें।''

सुनकर दरबारी हंस पड़े। राजा भी मुसकराने लगे। उन्होंने मोहन भाट को क्षमा कर दिया। ●

छोटी रानी

— डा. शिवकुमार 'निडर'

सुरेंद्रगढ़ के राजा थे सुरेंद्र सिंह। शूरवीर और महाप्रतापी। सुरेंद्र सिंह की दो रानियां थीं। बड़ी चंद्रलोका और छोटी रानी का नाम केतकी था। रानी चंद्रलोका पतिव्रता और मधुर स्वभाव वाली थी। रानी केतकी उससे विपरीत थी।

दोनों रानियां एक-एक पुत्र की मां थीं। बड़ी रानी चंद्रलोका का पुत्र छोटी रानी केतकी के पुत्र से तीन साल बड़ा था। उसका नाम था चक्रवीर। जन्म के समय उसके दाहिने हाथ पर एक चक्र दिखाई दिया था। राज पंडितों ने राजा को बताया— ''महाराज, आपका पुत्र बड़ा होकर महा पराक्रमी और चक्रवर्ती राजा बनेगा।''

रानी केतकी के पुत्र का नाम था कर्मवीर। राजकुमार चक्रवीर अभी पूरे पांच वर्ष का भी नहीं हुआ था कि एक दिन रानी चंद्रलोका स्वर्ग सिधार गई। राजा सुरेंद्र सिंह पर तो मानो वज्रपात हुआ। मगर रानी केतकी की प्रसन्नता को कोई नहीं भांप सका।

समय गुजरता गया। कहते हैं—समय बड़े-बड़े घावों को भर देता है। राजा सुरेंद्र सिंह के साथ भी यही हुआ। कुछ समय बाद ही वह छोटी रानी केतकी के इशारों पर नाचने लगे। केतकी राजकुमार चक्रवीर से मन ही मन जलती थी। मगर राजकुमार चक्रवीर अपने छोटे भाई से बहुत स्नेह करता था। इसी तरह कर्मवीर भी अपने बड़े भाई के बिना एक पल भी नहीं रह पाता था।

धीरे-धीरे समय अपनी मंजिल तय करता रहा, राजकुमार चक्रवीर अट्ठारह वर्ष का हो गया। इस बीच पढ़ने-लिखने के साथ-साथ वह शस्त्र विद्या में भी प्रवीण हो गया। रानी केतकी ने उसे मारने की बहुत-सी युक्तियां कीं, मगर उसका बाल भी बांका नहीं हुआ।

रानी हर समय चक्रवीर के विरुद्ध राजा के कान भरती रहती। कहती कि वह अपने छोटे भाई को मारना चाहता है। आखिर उसने राजा को हर प्रकार से अपने विश्वास में ले ही लिया।

रानी केतकी ने एक दिन चक्रवीर से कहा— ''कर्मवीर मुझसे नाराज हो गया है। इसलिए वह मेरे या किसी दासी के हाथ से दूध नहीं पीएगा। वह केवल तुम्हारी ही बात मानता है। तुम उसे जाकर दूध पिला आओ।'' फिर रानी ने दूध का गिलास चक्रवीर के हाथ में दे दिया।

राजकुमार रानी केतकी के षड्यंत्र को जान न सका। दूध का गिलास लेकर कर्मवीर के पास पहुंचा। रानी राजा के पास चली गई। तभी एक दासी ने आकर राजा-रानी को एक समाचार दिया— ''बड़े राजकुमार के हाथ में दूध का गिलास है। वह उसमें कुछ मिलाकर छोटे राजकुमार के कमरे में गया है।'' यह सब रानी की योजना के अनुसार ही हो रहा था।

यह सुनते ही रानी केतकी ने घबराते हुए राजा से तुरंत वहां चलने को कहा। वहां राजा ने देखा कि राजकुमार चक्रवीर हाथ में गिलास लिए छोटे राजकुमार से पीने की जिद कर रहा है।

रानी ने झपटकर गिलास चक्रवीर के हाथों से छीन लिया। बोली— ''अरे दुष्ट ! तुम मेरे पुत्र को जहर पिलाकर क्यों मारना चाहते हो ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?'' यह कहकर वह बुरी तरह रोने लगी।

थोड़ी देर में ही यह खबर पूरे महल में आग की तरह फैल गई। दास-दासी और दरबारी वहां इकट्ठे हो गए। उन सब के सामने गिलास के दूध को एक बिल्ली को पिलाया गया। दूध पीते ही बिल्ली निष्प्राण हो गई।

चक्रवीर ने कुछ कहना चाहा, मगर उसकी एक न सुनी गई। राजा ने तुरंत आज्ञा दी— "चक्रवीर को कल सुबह भयानक शेरों के जंगल में छोड़ दिया जाए, निहत्था।"

दूसरे दिन राजकुमार को निहत्था भयानक जंगल में छोड़ दिया गया। वह भूखा-प्यासा जंगल में भटकने लगा। इसी तरह शाम हो गई। तभी एक शेर उस पर टूट पड़ा। राजकुमार अपनी जान बचाने के लिए शेर से भिड़ गया। आखिर में बहादुर राजकुमार ने निहत्थे ही शेर को मार डाला। मगर खुद भी गम्भीर रूप से घायल हो गया। घायल अवस्था में ही लड़खड़ाता हुआ बढ़ने लगा। तभी उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। वहां एक वृद्ध महात्मा अपने नेत्र बंद किए,भगवान के भजन में लीन थे। राजकुमार बेहोश होकर उनके चरणों में गिर पड़ा।

जब होश आया, तो देखा महात्मा जी उसके निकट बैठे हैं। उसने महात्मा जी के चरण छुए। फिर अपने बारे में सब बता दिया। उन्होंने आशीर्वाद दिया। उसके घावों पर औषधि लगाई। उससे कहा— "तुम यहीं रहो। समय आने पर सब ठीक हो जाएगा।"

चक्रवीर आश्रम में ही रहने लगा। तीन साल गुजर गए। एक दिन महात्मा जी ने राजकुमार से कहा— "बेटा, आज भगवान के यहां से हमारा बुलावा आ गया है। मैं तुम्हें एक मणि देना चाहता हूं। उसे भगवान का प्रसाद समझकर हमेशा अपने पास रखना। इस मणि में तीन विशेषताएं हैं। पहली— इसे तीन दिन तक पानी में घिसकर पिलाने से कोई भी असाध्य रोग दूर हो जाता है। दूसरी— किसी भी भयंकर विषधर के काटे हुए स्थान पर लगाने से कुछ ही देर में विष उतर जाता है। मरा हुआ आदमी भी जी जाता है। तीसरी— इसे मुंह में रख लेने पर किसी भी शस्त्र का घाव भर जाता है। तुम मेरा शरीर पूरा होते ही यह जंगल हमेशा के लिए छोड़ देना। तुम्हारे माथे पर लगा कलंक भी भगवान की कृपा से धुल जाएगा। यह मेरा आशीर्वाद है।" यह कहकर महात्मा साधना में लीन हो गए। कुछ देर बाद उनका स्वर्गवास हो गया। राजकुमार दुखी था। राजकुमार ने उनका अंतिम संस्कार किया और मणि को लेकर चल दिया।

चलते-चलते उसने एक राज्य की सीमा में प्रवेश किया। वहां उसे एक समाचार सुनने को मिला— देश का वृद्ध राजा भीमेश एक-दो दिन का मेहमान है। उसकी असाध्य बीमारी को कोई वैद्य नहीं पहचान पाया है, चक्रवीर को महात्मा की दी हुई मणि की याद आई। वह लोगों से पूछता-पूछता राजधानी में जा पहुंचा। फिर राज महल पहुंचकर उसने पहरेदारों से राजा का उपचार करने की प्रार्थना की। पहरेदारों ने उसे रानी के पास पहुंचाया। रानी और मंत्रियों ने उसका प्रस्ताव तुरंत स्वीकार कर लिया।

राजकुमार ने देखा, वृद्ध राजा शय्या में पड़ा अपनी अंतिम सांसें गिन रहा है। उसने जैसे ही मणि पानी में घिसकर पिलाई, राजा ने आंखें खोल दीं। तीन दिन में ही राजा पूर्ण स्वस्थ होकर घूमने-फिरने लगा। अब सारे राज्य में राजकुमार चक्रवीर की ही चर्चा होने लगी।

एक दिन राजा भीमेश ने राज सभा में घोषणा की— "इस युवक के साथ अपनी बेटी रत्नमाला की शादी करना चाहता हूं। इसने मुझे मौत के मुंह से

निकाला है। मैं इसी को राज-पद देने की घोषणा करता हूं।" सभी ने राजा की घोषणा का समर्थन किया। राजकुमार चक्रवीर की शादी राजकुमारी रत्नमाला से हो गई। वह अब एक बड़े राज्य का राजा बन गया था। पर इस सारे समय में वह अपने माता-पिता और भाई कर्मवीर को एक पल के लिए भी ; भूला था। राजा बनने के बाद विशेष दूतों से पिता के राज्य के सभी समाचार मंगवाता रहता था।

एक दिन दूत ने चक्रवीर को एक समाचार सुनाया— "पास के राज्य वीरेंद्रगढ़ के राजा वीरेंद्र सिंह ने सुरेंद्रगढ़ को चारों ओर से घेर रखा है। सुरेंद्रगढ़ की सेनाएं परास्त होती जा रही हैं। उधर राजा सुरेंद्र सिंह के पुत्र को किसी विषधर नाग ने डंस लिया है। महलों से चीत्कार सुनाई दे रहे हैं।"

सुनते ही चक्रवीर के होश उड़ गए। उसने तुरंत अपनी सेना सजाई और सुरेंद्रगढ़ की ओर चल दिया। उसने सेनापति से कहा—"तुम सुरेंद्रगढ़ पहुंचकर वीरेंद्र सिंह की सेना को भगा दो। मैं तुम्हें किले के अंदर मिलूंगा।" सेनापति पूछना चाहता था कि इस बात का क्या मतलब है? पर चक्रवीर तब तक घोड़े को एड़ लगा चुका था।

सुबह होते-होते वह सुरेंद्रगढ़ पहुंच गया। देखा— किले के दरवाजे बंद हैं। चारों तरफ लाशों के ढेर पड़े हैं। वीरेंद्र सिंह की सेना ने किले को चारों तरफ से घेर रखा है। राजकुमार ने एक घनी झाड़ी के पास अपना घोड़ा रोका और अपने राजसी कपड़े उतारकर झाड़ी में छिपा दिए। एक महात्मा का वेश बना लिया। फिर एक गुप्त रास्ते से किले के अंदर पहुंच गया। उस गुप्त रास्ते की जानकारी बहुत कम लोगों को थी।

वह राजमहल में घुसता चला गया। तभी पहरेदारों ने उसे जासूस समझकर बंदी बना लिया। उसने बता दिया कि वह तो राजकुमार का विष उतारने आया है।

पहरेदार उसे राजा सुरेंद्र सिंह के पास ले गए। राजा बदले वेश में बेटे को नहीं पहचान सके। उसे कर्मवीर के पास ले गए। उसका शव पलंग पर पड़ा था। वहां रानी केतकी सहित अनेक दास-दासियां इकट्ठी थीं। रानी जोर-जोर से रो रही थी।

यह देखकर चक्रवीर की आंखों में आंसू छलछला आए। उसने सर्प के काटे हुए स्थान पर मणि लगा दी। थोड़ी देर में ही लाश का रंग बदलने लगा। उसमें हरकत होने लगी। कुछ समय बाद राजकुमार कर्मवीर ने आंखें खोल दीं। यह देखकर राजा-रानी महात्मा बने चक्रवीर के चरणों में गिर पड़े। मगर राजकुमार दूर हट गया।

छोटे राजकुमार ने उठकर पानी मांगा, तो चक्रवीर की आंखों से हर्ष के आंसू निकल पड़े। वह वहां से बाहर जाने लगा। राजा ने उसे रोकने को हाथ पकड़ा, तो उसके हाथ पर चक्र दिखाई दिया। देखते ही राजा के मुंह से अनायास निकल पड़ा— "बेटा, चक्र..."

रानी रोती हुई बोली—"बेटा, मुझे माफ कर दो। मैंने तुम पर झूठा आरोप लगाया था। दूध में जहर मिलाकर दासी द्वारा झूठ कहलवाया था कि चक्रवीर ने छोटे राजकुमार के दूध में जहर मिलाया है।"

अब राजा की आंखें खुलीं। वह रानी को प्राण दंड देने को तैयार हो गए। मगर चक्रवीर ने यह कहकर उन्हें रोक दिया— "मैं अपनी मां को दुबारा प्राप्त करके खोना नहीं चाहता।"

बाहर चक्रवीर के सेनापति ने वीरेंद्र सिंह की सेना को परास्त कर उसे गिरफ़्तार कर लिया।

बाद में चक्रवीर के कहने पर सुरेंद्रगढ़ का राज्य कर्मवीर को दे दिया गया। सब फिर से सुखी हो गए। ●

अनजान टापू

—मदनमोहन राजेन्द्र

सूरत नगर में एक धनी महाजन रहता था । नाम था भामा । भामा को हीरे खरीदने और जमा करने का बड़ा शौक था । कोई अच्छा हीरा मिलता, खरीद कर रख लेता । सूरत में जो व्यापारी या यात्री आता, उससे जाकर मिलता । उसके पास हीरा होता, तो दाम चुकाकर खरीद लेता ।

भामा दिन-रात अपने हीरे देखता रहता । बार-बार गिनती करता और संभालकर अपने संदूक में रख लेता । वह यह सोचकर बड़ा प्रसन्न होता कि उसके पास इतने हीरे हैं । उसका एक मित्र था राममणी । राममणी धार्मिक विचारों का था । उसे धन का लोभ नहीं था । वह भामा को समझाता था कि अपना मन किसी दूसरी ओर लगाओ । किंतु भामा हंस पड़ता था । उसका बस चलता, तो संसार के सारे हीरे खरीद लेता ।

एक दिन भामा के पास एक आदमी आया । भामा उसे भली प्रकार जानता था । उसका नाम था शिवदेव । वह नगर के बाहरी भाग में रहता था । उसने आते ही भामा के कान में कहा—"एक बात कहूं, यदि किसी से न कहो तो ?"

"हां-हां, भीतर आ जाओ । मैं भला किसी से क्यों कहने लगा ?"—कहकर भामा शिवदेव को अंदर ले गया । बोला—"अब बताओ, क्या बात है ?"

शिवदेव बोला—"मैंने समुद्र में एक टापू का पता लगाया है । टापू उजाड़ है । कोई मनुष्य उधर नहीं जाता । सैकड़ों वर्ष पहले अरब देश की एक नाव समुद्र में डूब गई थी । वह हीरों से भरी हुई थी । जब उस स्थान पर यह टापू उभर आया, तो नीचे से उस नाव के हीरे भी ऊपर आ गए । मैंने स्वयं देखा है, सारे टापू पर हीरे बिखरे पड़े हैं ।"

—"क्या तुम सच कह रहे हो ?"

—"बिलकुल सच कह रहा हूं । कल मुंह अंधेरे मेरे साथ मेरी नौका में चलो । दो बड़े थैले ले लेना । उनमें हीरे भर लाएंगे । लौटकर आधे-आधे बांट लेंगे ।"

भामा के लिए इससे अच्छी बात और क्या होती ? इतने सारे हीरे मिल रहे थे और वह भी मुफ़्त ।

कटा पेड़

– मालती सिंह

एक झील के किनारे दो वृक्ष थे—एक महुए का तथा दूसरा सागवान का । सागवान का वृक्ष बड़ा ही अभिमानी व क्रूर था । वह महुए के वृक्ष को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करता । कहता—"देखो तो, तुम्हारी पत्तियां कितनी छोटी व फूहड़ हैं । मेरी पत्तियों को देखो, कितनी बड़ी और मुलायम हैं । पथिकों को भरपूर छाया देती हैं और पक्षियों को बसेरा । तुम्हारे पास तो कोई भूलकर भी नहीं फटकता ।"

लेकिन महुए का वृक्ष कुछ न बोलता । वह चुपचाप अपनी जगह पर खड़ा, मन ही मन उसके ओछेपन पर मुसकराता रहता ।

एक दिन जमींदार का बेटा अपने आदमियों के साथ आया । बोला—"कल सुबह आकर महुए के वृक्ष को काट देना ।" यह कहकर वह चला गया ।

उनके जाने के बाद सागवान का वृक्ष निराश हो गया । इस पर महुए के वृक्ष ने पूछा—"तुम क्यों उदास हो गए ? वे तो मुझे काटने वाले हैं ।"

सागवान का वृक्ष बोला—"मैंने तुम्हारे प्रति बहुत बुरा बर्ताव किया है । इसी का दुःख है । आखिर तुम हो तो मेरे पड़ोसी ही । मदद न सही, लेकिन आड़े वक्त में मेरे साथ खड़े तो रहते थे । इस निर्जन जगह में, कम से कम दूसरों की निगाह में तो मेरे साथी थे । आज यह जानकर कि तुम कुछ समय के लिए ही मेरे साथ हो, मेरा हृदय फटा जा रहा है ।"

तुरंत मान गया। अगले दिन भामा और शिवदेव एक नाव में बैठकर टापू पहुंच गए। टापू पर पहले भामा उतरा। वह दोनों थैले ले, दौड़कर टापू के बीच में पहुंच गया। उसने देखा कि वास्तव में टापू पर हीरे बिखरे पड़े हैं। उसने शिवदेव की प्रतीक्षा भी नहीं की और थैलों में हीरे भरने आरम्भ कर दिए। जब वह हीरे भर चुका, तो उसने देखा कि शिवदेव तो टापू पर चढ़ा ही नहीं था। उसने टापू के किनारे आकर देखा कि नाव तो नगर की ओर वापस जा रही थी। उसे शिवदेव पर क्रोध आया। परंतु यह सोचकर बड़ा प्रसन्न हुआ कि वह अकेला ही सारे हीरों का मालिक हो जाएगा।

वह हीरों से भरे थैले हाथों में लिए, बड़ी देर तक टापू के किनारे पर खड़ा रहा। कोई भी नाव उधर से नहीं गुजरी। वह घबरा गया कि नगर कैसे लौटेगा? उसे भूख भी बहुत लग रही थी। वह थककर बैठ गया। शाम हो गई और फिर अंधेरा छा गया। मगर किसी भी नाव का दूर-दूर तक पता नहीं था। भूख और प्यास से निढाल होकर वह नीचे लेट गया। उसने सारी रात तड़प-तड़पकर गुजारी। उसे हीरों के थैलों की भी सुध न रही।

अगले दिन दोपहर के समय जब वह बेजान-सा टापू के किनारे पर पड़ा था, उसे एक नाव दिखाई दी। वह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाया। उसने अपने धोती के पल्लू को भी लहराकर नाव को अपनी ओर आकर्षित किया। नाव उसकी ओर आने लगी। इस नाव में बैठे मछुआरे की सहायता से वह नाव पर सवार हो गया। नाव नगर की ओर चल पड़ी। वह बड़ी बुरी दशा में अपने घर लौटा।

घर पर उसका मित्र राममणी बैठा था। राममणी बोला—"इस मछुआरे को मैंने ही तुम्हें लाने के लिए भेजा था। शिवदेव को भी मैंने ही सिखा-पढ़ाकर तुम्हारे पास भेजा था। मेरी आज्ञा के अनुसार वह तुम्हें टापू पर उतार, तुम्हें बताए बिना वापस आ गया था। अब देख लिया तुमने कि टापू पर हीरों के ढेर भी तुम्हारी भूख-प्यास न मिटा सके। हीरों और धन का लोभ छोड़ दो।"

भामा पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने अपने सारे हीरे बेचकर नगर में एक धर्मशाला और गरीबों के लिए अस्पताल बनवा दिया। ●

फिर उसने पूछा—"लेकिन, तुम तो जानते हो कि तुम्हारा अंत निकट है। फिर भी इतने शांत क्यों हो?"

महुए के वृक्ष ने कहा—"मैं तो इसलिए खुश हूं कि कल तुम्हारे जैसे पड़ोसी से छुटकारा मिल जाएगा। एक ऐसे पड़ोसी से, जिससे आजीवन दुःख ही दुःख मिलता रहा है।"

दूसरे दिन खुद जमींदार अपने आदमियों के साथ आया। बोला—"मेरा बेटा महुए के वृक्ष को काटने के लिए कह गया था। लेकिन उसे नहीं पता कि सागवान की लकड़ी कितनी मजबूत व टिकाऊ होती है। इमारत के लिए इसी की लकड़ी उपयोगी होती है। फिर महुए में फल लगते हैं, जिसे चिड़ियों से लेकर झील की मछलियां तक खाती हैं। कुछ हमारे काम भी आ जाता है। अतः आज शाम को आकर तुम लोग सागवान को काट देना।" यह कहकर वह चला गया।

अपना अंत निकट देख, सागवान का वृक्ष भय से कांपने लगा। उसने महुए के वृक्ष से पूछा—"तुम तो बच गए, लेकिन मैं अब कट जाऊंगा। क्या तुम्हें इसका दुःख नहीं कि तुम्हारा एक पड़ोसी, जो आजीवन तुम्हारे साथ रहा, आज के बाद हमेशा-हमेशा के लिए मिट जाएगा?"

इस पर महुए के वृक्ष ने कहा—"मैं क्यों दुःखी होऊं? दुःख तो उसके लिए होता है, जो प्रिय रहा हो। जिससे जीवन में सुख मिला हो। तुमने तो हमेशा मुझे सताया ही है।"

शाम होते ही जमींदार के आदमी आ गए और सागवान को काटने लगे। महुए का वृक्ष उसी तरह निश्चिंत, अपनी जगह पर खड़ा रहा। ●

चटपट

- गाइड—यह पुल दो सौ तीन वर्ष पुराना है।
  यात्री—मगर पिछले वर्ष तो आपने इसे तीन वर्ष पुराना बताया था।
- राम—अगर मछलियां चलने लगें तो ?
  श्याम—हमें उन्हें पकड़ने के लिए दौड़ना होगा।
- अध्यापक—दो और पांच कितने होते हैं ?
  छात्र—सर, क्या आप इतनी छोटी-सी गिनती भी नहीं जानते ?
- रोगी—दवा तो खा गया, पर पैर का दर्द अभी तक नहीं गया।
  डाक्टर—धीरज रखो। दवा को मुंह से पैर तक पहुंचने में कुछ समय तो लगेगा।
- मां—बेटा, जल्दी से नहा लो, नहीं तो नल चला जाएगा।
  बेटा—मम्मी, हमारे नल के पैर कब से लग गए ?
- रमेश—एक आदमी के सामने तीन रसगुल्ले घंटे भर से रखे हैं। वह खाता नहीं। भला क्यों ?
  सुरेश—क्योंकि वह पत्थर की मूर्ति है।
- बच्चा (भिखारी से)—तुम इतनी देर से भीख मांग रहे हो। क्या अभी तक पेट नहीं भरा ?
  भिखारी—पेट तो भरा हुआ है, मगर जेब नहीं भरी।
- विनय—कब से कह रहा हूं, टूटे जूते में कील ठोक दो। तुम सुनते ही नहीं।
  जूता बनाने वाला—और मैं कब से पूछ रहा हूं, जूता उतारोगे या ऐसे ही कील ठोक दूं ?
- चिड़िया—मैं इस पेड़ वाले घोंसले में नहीं रहूंगी।
  चिड़ा—तो चलो, शानदार पांच सितारा होटल में चलकर घोंसला बना लेते हैं।
- आशीष—तुम्हारे पिता जी अपनी लम्बी-लम्बी मूंछों से क्या करते हैं ?
  सतीश—वही जो तुम्हारे बिना मूंछ वाले पिता जी नहीं कर सकते।
- अनिल—यह बोर्ड देखा—लिखा है, कुत्ते से सावधान !
  सलिल—पर मुझे तो कुत्ते से नहीं, आदमी से काम है।
- चित्रकार (दर्शक से)—आप मेरे चित्र से क्या समझे ?
  दर्शक—यही कि जब रंग खत्म हो गए, तो आपने पानी से चित्र बनाना शुरू कर दिया।
- खिलाड़ी—मैं आउट नहीं था।
  अम्पायर—कोई बात नहीं, अब हो गए।
- सिपाही—तुमने इस दुकान से पुस्तकें क्यों चुराईं ?
  चोर—जी, यहां चुराने के लिए और कुछ था ही नहीं।

तेनालीराम (२६६)

कहां गया वह

एक बार राजा कृष्णदेव राय सख्त बीमार पड़े। मंत्री, सेनापति, पुरोहित सहित, सभी दरबारी सुबह-शाम उन्हें देखने जाते। राजा की दवा करने वाले वैद्य-हकीमों से सलाह-मशविरा करते, किंतु तेनालीराम एक दिन भी राजा को देखने नहीं आया।
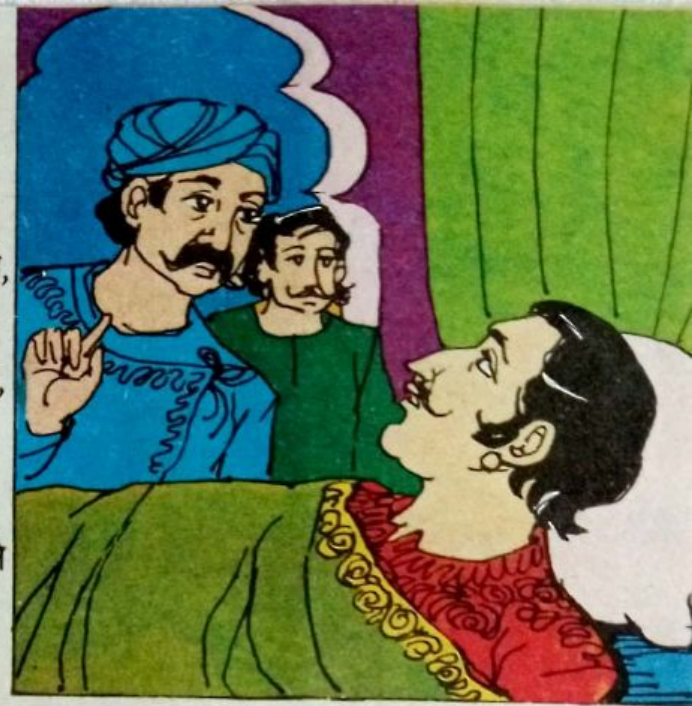
उससे ईर्ष्या करने वाले दरबारियों ने अवसर का लाभ उठा, बीमार राजा के कान भरने शुरू कर दिए। मंत्री के कहने पर राजा ने गुप्तचर भेज, तेनालीराम की खोज कराई। पता चला कि घर वालों को बिना बताए, वह कहीं चला गया है।

इस समाचार से तेनालीराम के विरोधियों की और बन आई। राजा के कान इस कदर भरे कि राजा ने बीमारी के दौरान ही उसे गिरफ़्तार करने का आदेश दे दिया। मगर बहुत ढूंढ़ने पर भी तेनालीराम कहीं नहीं मिला।

कुछ समय बाद राजा कृष्णदेव राय स्वस्थ हो गए। जिस दिन वह दरबार में गए, उसी दिन दाढ़ी बढ़ाए, भगवा कपड़े पहने तेनालीराम भी वहां आया। वह साथ में ग्यारह गठरियां भी लाया था।

राजा क्रोध से उसकी ओर देखते हुए बोले—"अब यहां क्या करने आए हो? बड़े राजा के भक्त बनने का ढोंग रचते हो। जाओ, आज से तुम्हें देश निकाला दिया जाता है।"

"मुझे स्वीकार है महाराज! मगर मेरी अंतिम विनती मान लें। इन गठरियों को अपने हाथ से स्पर्श कर दें।"—तेनालीराम बोला।

"क्या है इनमें? इन्हें खोला जाए।"—राजा ने सेवकों को आज्ञा दी। गठरियां खोली गईं। उनमें राख भरी थी। देखकर राजा ने कहा—"यह क्या पागलपन है। यहां राख लेकर क्यों आए?"

"महाराज, यह राख नहीं। ग्यारह पवित्र अग्नि कुंडों की भस्मी है। मैंने बाईस दिन तक आपके स्वस्थ होने के लिए रुद्र यज्ञ किया। उसमें लगा रहा। ज्योतिषी ने कहा था कि यज्ञ के बारे में चर्चा न की जाए। इसीलिए मिलने न आ सका। भगवान रुद्र ने मनोकामना पूरी कर दी। आप स्वस्थ हो गए। अब इस पवित्र भस्म को कलशों में भरकर आप सुरक्षित रखें, मैं चला राज्य छोड़कर।"

सुनकर सभी चकित! राजा ने कहा—"तेनालीराम, तुमने अपनी स्वामिभक्ति का फिर नया प्रमाण दे दिया।" कहकर राजा ने उसे गले से लगा लिया।

↑ न पंखुड़ी, न गंध,
१ किंतु सबकी पसंद ।

मेंहदी रचा हाथ ↑
दायां या बायां ? २

३ →
नन्हा सा, प्यारा सा,
कौन है यह ?
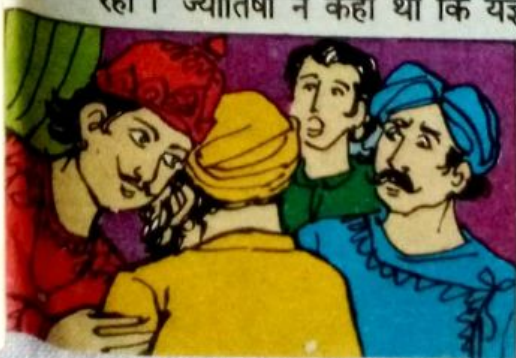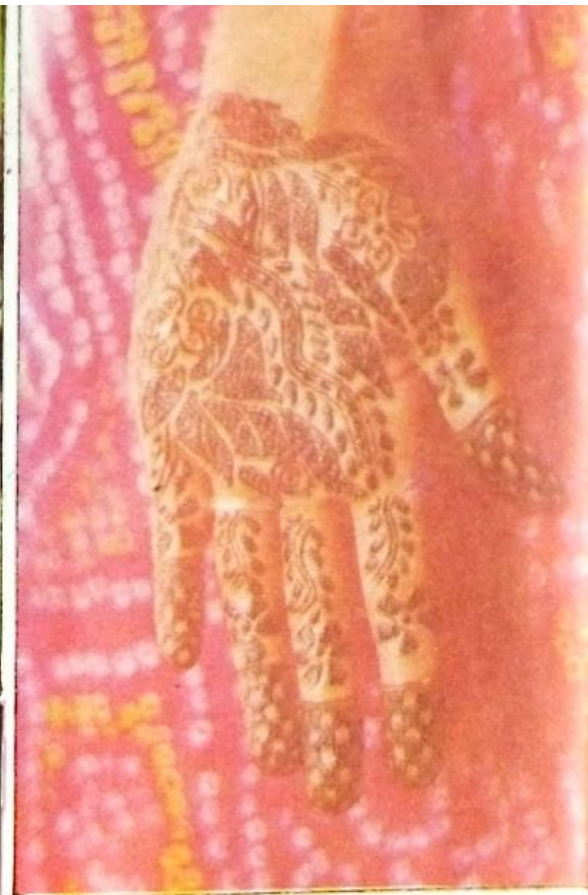
गोरखधंधा
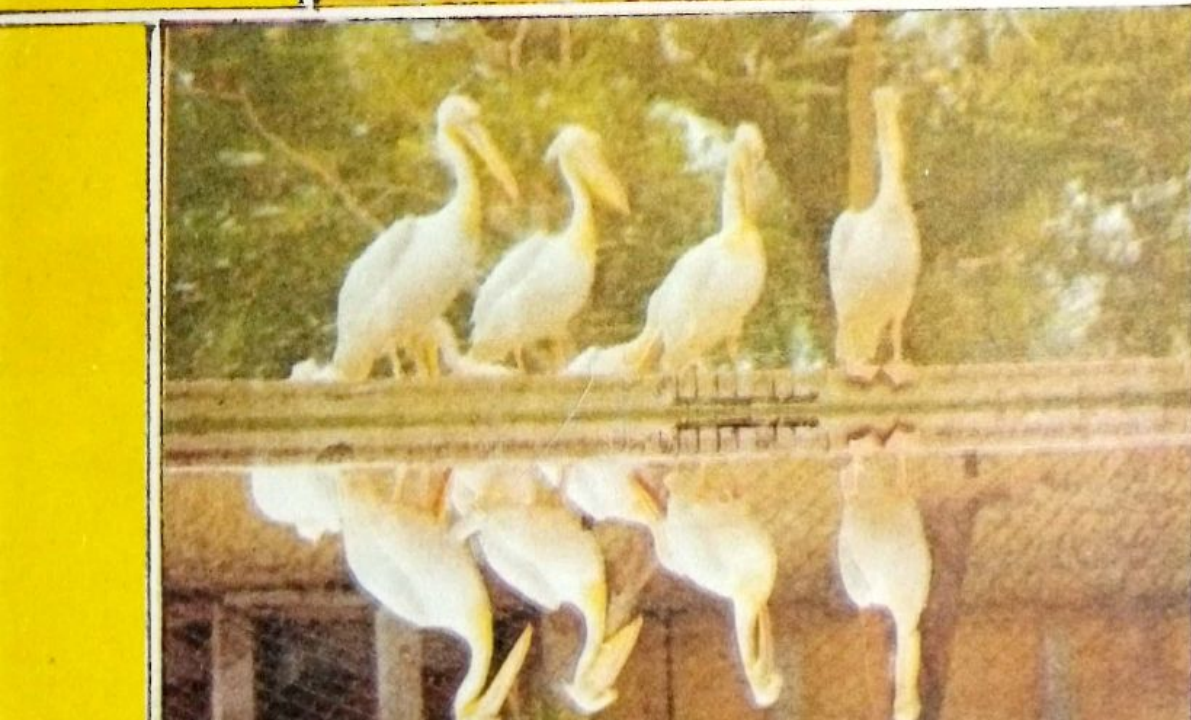
← ४
ऊपर पक्षी, नीचे पक्षी
असली पक्षी किधर कहो ?

(सही उत्तर
इसी अंक में खोजिए)

चित्र : विद्याव्रत,
एल.एस. टाक,
हेमंत कुमार,
ताराशंकर शर्मा

राजा बच गया

— शांता ग्रोवर

दक्षिण भारत में पोदनपुर नामक राज्य पर राजा श्रीविजय राज करते थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। राजा वेश बदलकर प्रजा के बीच घूमा करते थे। जहां भी उन्हें कोई दुखी या गरीब आदमी नजर आता, तुरंत उसकी सहायता करते थे। राजा प्रजा का ध्यान रखते थे, तो प्रजा भी अपने राजा को बहुत चाहती थी।

एक दिन की बात है। राजा श्रीविजय के दरबार में कांपिल्य नाम के एक ऋषि आए। राजा ने सिंहासन से उठकर उनको प्रणाम किया। फिर सम्मान पूर्वक बैठाते हुए पूछा— ''ऋषिवर, कहिए, क्या आज्ञा है ? आपने यहां आने का कष्ट कैसे किया ? मुझे बुला लिया होता। मैं स्वयं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाता।''

ऋषि बोले—''राजन, बात ही कुछ ऐसी है कि मुझे आपके पास तुरंत आना पड़ा।''

राजा ने उत्सुकता वश ऋषि की तरफ देखा और बोले—''प्रभो, आज्ञा करें।''

ऋषिवर ने कहा—''राजन, मुझे आपकी चिंता थी, क्योंकि मैं जब समाधि में ध्यान लगाए बैठा था, तो मैंने देखा कि पोदनपुर राज्य के ऊपर कोई विपत्ति आने वाली है। मुझे जैसे किसी अदृश्य शक्ति ने बताया कि पोदनपुर के राजा के ऊपर आज से सातवें दिन वज्रपात होगा। इसलिए मैं आपको यह बताने चला आया। अब जो भी उपाय सम्भव हो, आप कीजिए।''

राजा कुछ सोचते हुए बोले—''आप नाराज न हों। मैं समझता हूं कि मेरे प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण, आपने यह सपना देखा। भला, ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है ?''

ऋषि कुछ उत्तेजित होकर बोले—''राजन, मेरी अंतरात्मा की आवाज कभी गलत नहीं हो सकती। आप देख लेना, उसी दिन मेरे सिर पर १०८ घड़ों से अभिषेक और पूजा होगी। साथ ही रत्न वृष्टि भी

होगी ।" इतना कहने के बाद ऋषि चले गए ।

ऋषि की बात सुनकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया । राजा श्रीविजय भी सोच में पड़ गए । सारे मंत्री सोचने लगे—'हमें अपने राजा की रक्षा के लिए कुछ करना चाहिए ।' हर मंत्री कोई न कोई उपाय बताने लगा । नरबुद्धि नामक मंत्री बोला—"हम राजा को सात दिन के लिए गर्भ गुफा में छिपा देते हैं ।"

यह सुनकर पीताम्बर नामक दूसरे मंत्री ने कहा—"राजा को सात दिन के लिए एक संदूक में बैठा देते हैं । हम संदूक में एक छेद कर देंगे ।"

तभी मंत्रियों में श्रेष्ठ मतिसागर नामक मंत्री ने उन सारे मंत्रियों की बातों पर विचार करते हुए कहा—"चाहे तुम राजा को कहीं भी छिपा लो, जो होना है, वह तो होकर ही रहेगा । तुम सबने इस बात पर तो विचार किया ही नहीं कि ऋषि ने क्या कहा । उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की है कि पोदनपुर के राजा के सिर पर वज्र गिरेगा । उसने नाम लेकर यह तो कहा नहीं कि श्रीविजय राजा के सिर के ऊपर वज्र गिरेगा । इसलिए मेरा मत है कि हम इन सात दिनों के लिए किसी अन्य का राज्याभिषेक कर दें । इस अवधि में श्रीविजय राज्य का परित्याग कर, किसी मंदिर में जाकर सात दिन तक पूजा-पाठ में लीन रहें ।"

मतिसागर का मत सुनकर सब अचंभित रह गए । राजा श्रीविजय भी मतिसागर का मत सुनकर बड़े प्रसन्न हुए । पर दूसरे ही पल वह गहन सोच में डूब गए । मतिसागर बोला— "राजन, क्या हुआ ? क्या मेरा विचार आपको पसंद नहीं आया ?"

राजा बोले—"मतिसागर, ऐसी बात नहीं है । मुझे तो तुम पर गर्व है । परंतु इस विचार में एक बुराई है ।"

मतिसागर ने पूछा—"वह क्या है ?"

"क्या बुराई है महाराज !"—अन्य मंत्रियों ने पूछा ।

श्रीविजय ने कहा—"मेरी जगह पर जो कोई भी राजा बनेगा, उसका सर्वनाश निश्चित है । क्या मैं अपनी जान बचाने के लिए किसी दूसरे का विनाश कर दूं ? ऐसा मैं कदापि नहीं कर सकता । प्रजा तो मुझे प्राणों से भी प्रिय है । मैं किसी के अनिष्ट की कल्पना भी नहीं कर सकता ।"

मतिसागर ने कहा— "राजन, आप ऐसा क्यों सोचते हैं ? आपके लिए प्राण त्यागना तो हमारा कर्त्तव्य है । आप जैसे राजा के लिए तो कोई भी अपने

प्राण सहर्ष दे देगा ।" मतिसागर के काफी समझाने पर भी राजा श्रीविजय इस बात के लिए तैयार नहीं हुए ।

मतिसागर बार-बार यही सोचता रहा कि अब राजा की रक्षा के लिए क्या उपाय करना चाहिए । तभी मतिसागर का ध्यान एक मूर्ति पर आ पड़ा । उसकी आंखें खुशी से चमक उठीं । सभी ने मतिसागर के मुख पर प्रसन्नता की लहर दौड़ती देखी ।

मतिसागर मुसकराता हुआ राजा से बोला—"राजन, मैंने इस समस्या का समाधान कर लिया है । हम इन सात दिनों के लिए सब लक्षणों से संपन्न कुबेर की मूर्ति का राज्याभिषेक कर देंगे और उसे आपकी गद्दी पर शोभायमान कर देंगे । इस तरह हम जीव हत्या से भी बच जाएंगे ।" राजा श्रीविजय उनकी इस बात से सहमत हो गए, तो सब मंत्रियों की सांस में सांस आई । प्रजा की सम्मति लेकर कुबेर की प्रतिमा को राजा श्रीविजय के स्थान पर स्थापित कर दिया गया ।

राजा श्रीविजय भगवान की पूजा करते हुए मंदिर में रहने लगे । नगरवासी भी अपने राजा की प्राण रक्षा के लिए दान तथा व्रत-पूजा करने लगे । सारे नगर में यज्ञ, पूजा-पाठ होने लगे ।

छह दिन बीतने के बाद आसमान काले-काले बादलों से भर गया । बादलों की भयंकर गर्जना के साथ मूसलाधार बारिश होने लगी । रह-रहकर बिजली भी कड़कड़ाहट के साथ चमक उठती थी । सब डर से कांपने लगे । मन ही मन भगवान से प्रार्थना करने लगे कि हमारे राजा का कोई अनिष्ट न हो । सारी प्रजा भागकर राजा के दरबार में पहुंच गई । तभी बरसात रुकी और भयंकर गर्जन करता हुआ एक वज्र कुबेर की प्रतिमा पर आ गिरा । प्रतिमा के तुरंत सौ टुकड़े हो गए । उस मूर्ति के ऊपर वज्र को गिरा देखकर लोगों ने राहत की सांस ली । अब लोग अपने राजा का जय-जयकार करने लगे । राजा श्रीविजय का फिर से राज्याभिषेक किया गया । राज्याभिषेक के तुरंत बाद राजा के पास गए । उन्हें सम्मान पूर्वक अपने दरबार में लाए । उनका १०८ कलशों से अभिषेक किया गया । अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण देकर उनके सिर पर रत्नों की वृष्टि की । सौ गांव भेंट में देकर उन्हें विदा किया ।

इसके बाद राजा ने सारी प्रजा को बुलाकर धन्यवाद दिया । कहा—"आप सब लोगों के सद्‌भाव और शुभकामनाओं से ही मेरी रक्षा हुई ।" राजा ने अपने मंत्रियों और प्रजा जनों को खूब सम्मान दिया । उसके बाद श्रीविजय ने कई वर्षों तक सुख पूर्वक राज्य किया ।

मैला पानी

—उमा शर्मा

एक राजा था कुंवरसिंह । बड़ा ही बहादुर और नेक । उसके राज्य की सीमाएं चारों तरफ से सुरक्षित थीं । राजा कुंवरसिंह के कुलगुरु का आशीर्वाद था—जब तक राजा धर्मप्रिय और सदाचारी रहेगा, उसके राज्य को किसी शत्रु से भय नहीं रहेगा ।

अपनी बढ़ती ताकत को देख, राजा कुंवरसिंह के मन में धीरे-धीरे अहंकार आने लगा ।

एक दिन मंत्री रावसिंह ने राजा को याद दिलाया—"महाराज, आज कुलगुरु के आश्रम में जाना है । वहां राज्य की शांति और सुव्यवस्था के लिए कुलगुरु महायज्ञ कर रहे हैं ।"

यह सुनकर अहंकारी राजा हंसा । गर्व से चूर होकर बोला—"मंत्री जी, ये सब बेकार की बातें हैं । राज्य में शांति हमारे भय से है । हमारी ताकत से पड़ोसी राजा डरते हैं । भला, इसमें कुलगुरु का क्या आशीर्वाद है ! कहीं यज्ञ से शांति आती है ? मैं जानता हूं, यज्ञ वह धन के लिए कर रहे हैं । राजकोष से उनके लिए धन भिजवा दिया जाए ।"

मंत्री के कहने-समझाने पर भी राजा कुंवरसिंह कुलगुरु के पास नहीं गया । कुलगुरु को राजा के अभिमान का पता चला, तो उन्हें दुःख हुआ ।

आश्रम की जिम्मेदारी अपने शिष्यों पर छोड़, कुलगुरु तीर्थ यात्रा करने चले गए। कहते गए—"अब ऐसे राजा के राज्य में रहकर तपस्या करना व्यर्थ है ।"

समय बीतता गया । राजा और अहंकारी होता गया । वह अपना कर्त्तव्य भूल, प्रजा पर भी नए-नए कानून लागू करने लगा । उसके अधिकारी भी मनमानी पर उतर आए । उसका परिणाम यह हुआ कि राज्य में अराजकता बढ़ने लगी । किसी को राजा का भय नहीं रहा । लोगों में असुरक्षा की भावना बढ़ने लगी ।

प्रजा की इन परेशानियों की ओर मंत्री ने राजा का ध्यान आकर्षित किया, किंतु वह तो अब ज्यादातर शिकार में व्यस्त रहता । राज-काज में उसकी रुचि कम हो गई थी ।

इतना ही नहीं, राजा कुंवरसिंह का राज्य प्राकृतिक आपदाओं से भी घिर गया । कुलगुरु के जाने के बाद कई साल तक वर्षा न हुई । उसी के कारण भयंकर सूखा पड़ गया । लोग गांव छोड़-छोड़कर जाने लगे, लेकिन राजा कुंवरसिंह अभी भी अहंकार के नशे में डूबा था ।

एक दिन कुंवरसिंह युवराज और मंत्री के साथ शिकार के लिए गया । रास्ते में राजकुमार को प्यास लगी । राजा ने मंत्री से कहा—"राजकुमार के लिए तुरंत पानी लाओ ।"

मंत्री ने विनम्र शब्दों में कहा—"महाराज, यहां दूर-दूर तक पानी नहीं है । भयंकर अकाल से राज्य के

कुएं, बावड़ी सूख गए हैं । यहां प्रजा भी प्यासी मर रही है ।''

''प्रजा क्या कर रही है, हम यह नहीं जानना चाहते । राजकुमार को पानी की जरूरत है । शीघ्र पानी लाया जाए ।''—राजा बोला ।

राजकुमार की दशा बिना पानी के बिगड़ती जा रही थी । पानी न आया, तो राजा दुखी होकर फिर बोला— ''मंत्री जी, जल्दी करो । राजकुमार की दशा बिगड़ रही है ।''

''महाराज, इस सूखे जंगल में पानी का नामोनिशान नहीं है । फिर भी चारों दिशाओं में सिपाही भेज दिए हैं । आशा है, जल्दी ही कोई न कोई पानी लेकर आएगा ।''—मंत्री ने कहा ।

तभी एक सिपाही ने सूचना दी कि उत्तर दिशा वाली पहाड़ी पर एक हरा-भरा आश्रम है । वहां पानी का कुआं भी है, किंतु आश्रम के साधु महाराज ने पानी देने से इंकार कर दिया । उन्होंने कहा— 'जो प्यासा है, वह कुएं तक आए, तभी पानी मिलेगा ।'

—''उस साधु की इतनी हिम्मत ! मंत्री जी, तुरंत आश्रम की ओर चलो । हम उस साधु को सजा देना चाहते हैं ।''

—''महाराज, इस समय हमें राजकुमार के प्राण बचाने हैं । आप क्रोध छोड़कर पहले इन्हें पानी पिलाएं ।''

राजा को न चाहते हुए भी क्रोध को शांत करना पड़ा । वह राजकुमार को लेकर आश्रम में आया ।

''साधु महाराज, हमारे राजकुमार की पानी के बिना हालत बिगड़ती जा रही है । आप आज्ञा दें, तो हम कुएं से थोड़ा जल राजकुमार को पिला दें ।''— मंत्री ने कहा ।

''नहीं, राजा से कहो, वह हमसे निवेदन करे । तभी उसे जल प्राप्त होगा और राजकुमार के प्राण बच पाएंगे । वरना थोड़ी देर में राजकुमार बिना पानी के ... ।''

—''नहीं – नहीं महाराज, ऐसा अशुभ मत कहिए ।''—मंत्री ने कहा ।

''मैं इस साधु के आगे हाथ नहीं फैलाऊंगा । इसे अभी मजा चखाता हूं ।''—यह कहते हुए राजा ने सैनिकों को आदेश दिया—''पकड़ लो इसे और ले आओ कुएं से पानी ।''

साधु स्वयं राजा के पास आए । बोले—''राजन, घमंड आदमी को गिरा देता है । तुम्हारा घमंड अभी टूटा नहीं । राजकुमार बेदम हो गया है । दिखाओ अपना सारा बल ! याद रखो, राजकुमार या तुम यह पानी नहीं पी पाओगे ।''

सैनिक दौड़कर पानी ले आए थे । राजा ने अंजलि में पानी लिया, तो यह देखकर वह आश्चर्य में था—बाल्टी में पानी स्वच्छ लग रहा था, मगर राजा की अंजलि में आते ही वह बदबूदार और गंदा बन गया । राजा परेशान !

—''राजन, देखा । तुम्हारे हाथों ने निर्दोष प्रजा पर जुल्म ढाए हैं । इसीलिए इन हाथों में आते ही यह पानी ऐसा हो गया । अब बोलो— कैसे बचाओगे राजकुमार के प्राण ?''

राजा ने गौर से देखा । वह साधु राजा के कुलगुरु ही थे । बस, राजा का सारा घमंड ढह गया । उसने कुलगुरु के चरण पकड़ लिए । बोला—''मुझे क्षमा करो गुरु जी ! मैंने आपका घोर अपमान किया । मैं दंड का अधिकारी हूं । प्रजा मुझे जो भी दंड देगी, स्वीकार करूंगा ।''

—''ठीक है, तुम्हारे मन में पश्चात्ताप जाग उठा है । अब सब ठीक हो जाएगा । जाओ, कुएं से स्वयं पानी लेकर आओ ।''

राजा कुएं से पानी भरकर लाया । फिर पानी हाथ में लेकर देखा, तो वह निर्मल और ठंडा था । राजकुमार ने पानी पिया । फिर राजा ने भी । और तभी आकाश में बादल घिर आए । थोड़ी देर में इतना पानी बरसा कि सारा अकाल दूर हो गया । राजा प्रसन्न था । वह गुरुजी से बोला— ''मेरे राज्य की खुशहाली आपकी तपस्या से फिर लौट आई है । अब आप वापस चलें ।'' राजा और कुलगुरु फिर राजधानी लौट आए ।

१००० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. उसी— की चर्चा कर रहे थे। (बात/रात)
२. इसके बाद क्या करना — यह समझ में नहीं आ रहा था। (है/था)
३. सुना नहीं, मैंने क्या कहा, इसे— दो। (छोड़/मोड़)
४. वे जल्दी-जल्दी— गए। (पढ़/बढ़)
५. उसने मुंह— कर दिखा दिया। (हिला/चला)
८. एक पौधा, जिसमें लाल, सफेद और पीले फूल लगते हैं।
९. तुमने बताया नहीं,— क्यों गए थे? (घर/डर)
११. व्यास नदी का प्राचीन नाम।
१२. जो मैंने कहा, वही ठीक है। (अभी/अब)

ऊपर से नीचे

६. उसने देखा, एक हंस— में था। (जाल/ताल)
७. बता दो न,— जा रही हो? (कब/कहां)
१०. मैंने देखा, वह— जा रहे हैं। (आगे/भागे)

-----------------------------------काटिए-----

नंदन ज्ञान-पहेली: २५८

नाम ________________________

आयु ______ पता ______________

____

१	त	■	२	■	३	ड़
■	४	ढ़	■	५	ला	■
६	अंतिम तिथि: १५.६.९०					७ क
ल	■	८	ने		■	■
■	९	र	■	■	■	■
१०	■	■	■	११	पा	
गे	■	१२ अ		■	■	■

नं. ज्ञा. प. २५८

राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन सी ई आर टी) छब्बीसवीं राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता के अंतर्गत 5 से 15 आयु वर्ग के बच्चों के लिए लेखकों और प्रकाशकों से उपयुक्त पुस्तकें/पांडुलिपियां आमंत्रित करती है।

पुरस्कार : पुरस्कारों की कुल संख्या छत्तीस है। हिन्दी में चार पुरस्कार हैं तथा अंग्रेजी, असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बांग्ला, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, संस्कृत तथा सिन्धी– प्रत्येक भाषा में दो-दो पुरस्कार है। प्रत्येक पुरस्कार की राशि रु० 5,000/- होगी।

पुस्तकों की योग्यता : (क) मात्र दो कैलेण्डर वर्ष 1987 तथा 1988 में प्रकाशित पुस्तकें प्रविष्टि के लिए सम्मिलित की जायेंगी। (ख) प्रकाशित पुस्तकों के अतिरिक्त **अप्रकाशित पाण्डुलिपियां अधिमानतः टंकित रूप में स्वीकार की जायेंगी। इन पाण्डुलिपियों का विषय 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' से संबंधित होना चाहिए।** प्रकाशित पुस्तकें किसी भी विषय पर हो सकती हैं किन्तु वे बच्चों के अनुकूल होनी चाहिएं। (ग) पाठ्यपुस्तकें, अन्य पुस्तकों के अनुवाद, पुनर्प्रकाशन अथवा संक्षिप्त संस्करण सम्मिलित नहीं किये जायेंगे। बाल साहित्य प्रतियोगिता के लिए इससे पूर्व की प्रतियोगिता में प्रस्तुत की गई प्रविष्टि अथवा राज्य सरकार अथवा भारत सरकार अथवा सरकारी विभागों से तथा किसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था से प्राप्त धन राशि की सहायता से किसी संगठन द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में पहले से ही पुरस्कृत पुस्तक इस प्रतियोगिता में स्वीकार नहीं की जायेगी।

प्रवेश शुल्क : प्रत्येक पुस्तक तथा पाण्डुलिपि के लिए दस रु० (10 रु०) का रेखांकित पोस्टल आर्डर, मुख्य लेखा अधिकारी, एन.सी.ई.आर.टी. के पक्ष में निम्न पते पर भेजा जाना चाहिए।

अन्तिम तिथि : 16 जुलाई 1990

प्रतियोगिता से संबंधित विस्तृत जानकारी तथा नियम निम्न पते से प्राप्त किये जा सकते हैं:

एन सी ई आर टी
NCERT

प्रो. अर्जुन देव,
विभागाध्यक्ष,
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली– 110016

davp 89/1281

बेटा गायब

—सोमाहुति

मंत्री मानदेव के सम्मान समारोह की तैयारी जोर-शोर से हो रही थी। दूर-दराज के राज्यों को निमंत्रण भेजा गया था। नगर में खुशी का माहौल छाया हुआ था।

मानदेव प्रतापगढ़ के राजा प्रतापसिंह का मंत्री था। राजा उसे बहुत मानते थे। मानते क्यों न! मानदेव की बुद्धिमानी के आगे सब नतमस्तक थे। वह जटिल से जटिल समस्या को झटपट सुलझा देता था। ऐसे भी अनेक मौके आए, जब उसने प्राणों की बाजी लगाकर राजा के प्रति अपनी वफादारी सिद्ध की।

आखिर मानदेव का सम्मान समारोह दिवस आ ही गया। समारोह स्थल पर भीड़ उमड़ रही थी। एक विशाल पंडाल लगा था। राज्य के और बाहर से आए अतिथि अपना-अपना स्थान ग्रहण कर चुके थे। निर्धारित समय पर राजा प्रतापसिंह मंच पर पहुंचे। सभी ने तालियां बजाकर राजा का स्वागत किया। राजा ने मानदेव की विशिष्ट सेवाओं का उल्लेख किया। फिर सिंहासन से उठे। मंत्री का स्वागत करने मंच की ओर बढ़े। एक सेवक चांदी के थाल में सुनहरी धागों से कढ़ा एक शाल और प्रशस्ति पत्र लिए साथ-साथ था। राजा को अपनी ओर आता देख, मंत्री खड़ा हो गया। राजा ने शाल मंत्री के कंधे पर डाल दिया। फिर प्रशस्ति पत्र पढ़ा गया। राजा बोले—"वर्षों तुमने राज्य की सेवा की है। पुरस्कार स्वरूप कुछ चाहो, तो मांग सकते हो।"

मंत्री की आंखें खुशी से चमक रही थीं। उसके मुंह से कुछ न निकला। राजा ने कहा—"अभी न सही। जब मन बने, कुछ भी मांग लेना।"

समारोह के बाद राजा की ओर से भोज दिया गया। देर रात तक धूमधाम होती रही। इसके बाद मंत्री घर पहुंचा।

इष्ट मित्रों ने सुझाया कि वह अपने इकलौते बेटे को राज्य का कोई अधिकारी बनवा दे। मंत्री ने मुसकराते हुए कहा— "बेटे के लिए राजा से कुछ कहना, मेरे वश की बात नहीं। वह योग्य होगा, तो खुद ही कुछ बन जाएगा।" तभी पत्नी ने आकर कहा—"रात से बेटे का कुछ पता नहीं। वह समारोह में गया था, मगर लौटकर नहीं आया। अब दोपहर होने को है। कहां चला गया? जाओ, उसे ढूंढ़कर लाओ।"

मंत्री ने कहा—"हमारा बेटा दूध पीता बच्चा नहीं, जो घर का रास्ता भूल जाएगा। यहीं-कहीं होगा, स्वयं आ जाएगा।"

दिन पर दिन बीतते गए। मंत्री का बेटा जयदेव घर नहीं लौटा। हां, जब कभी पत्नी बेटे की याद में रोती, तो मंत्री धैर्य बंधाता—"चिंता न करो। एक न एक दिन जयदेव जरूर बड़ा आदमी बनकर लौटेगा।"

बात आई-गई हो गई। मंत्री अन्य कार्यों में व्यस्त हो गया। एक दिन वह दरबार में पहुंचा। राजा की गम्भीरता देख, बोला—"महाराज, आपकी उदासी का कारण क्या है?"

"मुझे गुप्तचरों ने बताया है कि पड़ोसी राजा ने सीमावर्ती इलाकों पर हमला बोल दिया है।"— राजा ने कहा।

"महाराज, इसमें चिंता की क्या बात है? आपके पास शक्तिशाली सेना है। हम शत्रु को मुंह तोड़ जवाब देंगे।"—मंत्री ने कहा।

"ठीक है, मगर हमारे सेनापति बीमार हैं। उनकी

जगह कौन लेगा ?''—राजा ने कहा।

—''आप चिंता न करें। हमारी सेना में कई योग्य सेनानायक है।''

मंत्री के कहने पर राजा में उत्साह जगा। उसने सेना को आक्रमण करने का आदेश दे दिया।

प्रतापगढ़ की सेना मैदान में जा डटी। घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। राजा भी युद्ध के मोर्चे पर जा पहुंचे। एक बार तो शत्रु सेना पीछे हटने लगी, मगर तभी शत्रु की नई टुकड़ी आ गई। उसने जोरदार आक्रमण किया, तो प्रतापसिंह की सेना के पैर उखड़ने लगे।

प्रतापसिंह ने अपने सैनिकों को ललकारा। स्वयं लड़ाई करने लगे। अचानक शत्रु के कई सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। तभी एक सैनिक आगे बढ़ा। उसने राजा को एक तरफ कर दिया। अकेला ही शत्रुओं पर बाज की तरह टूट पड़ा। अनेक घाव उसे लगे, मगर अपनी बहादुरी से उसने शत्रु के सैनिकों को तितर-बितर कर दिया। इस तरह राजा के प्राण बच गए। पर वह सैनिक घायल होकर गिर पड़ा। दूसरे सैनिक उसे उठाकर शिविर में ले गए।

राजा प्रतापसिंह की जीत हुई। वह राजधानी लौट आए। उन्होंने अपनी जान बचाने वाले सैनिक के बारे में पूछताछ की। पता चला कि वह घायल है। राजा उसे स्वयं देखने गए। राजवैद्य से कहकर उसके उपचार का सही इंतजाम किया। कुछ ही दिनों में वह सैनिक ठीक हो गया।

एक दिन दरबार में राजा ने उस सैनिक को बुलवाया। उसे सम्मान के साथ बैठाया। फिर कहा—''सैनिक, तुमने अपने प्राणों की परवाह न कर, मुझे बचाया। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। तुम योग्य व साहसी सैनिक हो। मैं तुम्हें पुरस्कार देना चाहता हूं।''

''बस, महाराज ! मुझे जो चाहिए था, वह मिल गया। आपने मुझे योग्य समझा, यही मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार है।''— कहते हुए सैनिक ने अपनी नकली दाढ़ी-मूंछें उतार दीं।

''अरे, तुम मानदेव के बेटे जयदेव हो न ! अब तक तुमने मुझे बताया क्यों नहीं ? तुमने यह सब क्यों किया ?''—राजा ने पूछा।

—''मेरे पिता यही चाहते थे। इनका मानना था, मैं पिता की सिफारिश से नहीं, अपनी योग्यता से ऊपर उठूं। मैं इसी प्रयास में लगा हूं।

''इसीलिए अपना परिचय छिपाकर, सेना में नौकरी की। युद्ध कला सीखी। मैं अपने राज्य के लिए कुछ भी कर सकता हूं।''—जयदेव ने कहा।

''यह तो मैंने देख ही लिया। तुम सचमुच योग्य पिता के सुयोग्य बेटे हो।''—राजा ने कहा। फिर उलाहना भरे स्वर में मानदेव से बोले—''तुमने इतने योग्य बेटे के बारे में मुझे आज तक बताया क्यों नहीं ?''

—''मैं आपसे सिफारिश कर, उसे राज्य में कोई पद दिला सकता था। पर उससे कुछ लोगों को आपत्ति होती। फिर बेटे की योग्यता का पता भी नहीं चलता। अब उसने योग्यता प्रकट कर दी है। आप जैसा चाहें, वैसा करें।''

राजा ने जयदेव की पीठ थपथपाते हुए कहा—''आज से मैं तुम्हें सेना में एक उच्च पद सौंपता हूं। वह है राजा का अंगरक्षक। मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।'' यह सुनकर दरबार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

मंत्री ने बेटे को गले लगाया। दोनों के चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही थी। ●

चीटू-नीटू

पौधों में भी जान होती है। देखो प्यास से कैसे कुम्हला गए हैं। आओ इन्हें पानी दे दें

देखो, कमला आण्टी के गमले भी सूखे हैं, उन्हें भी थोड़ा सा पानी दे दें

अरे मूर्खो, मेरा सारा कमरा पानी से भर दिया। ठहरो...

चीटू, पानी देखकर गाय इधर चली आ रही है

गाय पौधे तो खा गई, पर कमला आण्टी से पीछा तो छूटा

अब नहाऊं कैसे! टंकी के सारे पानी का सत्यानाश कर दिया। जाओ और कमेटी के नल से...
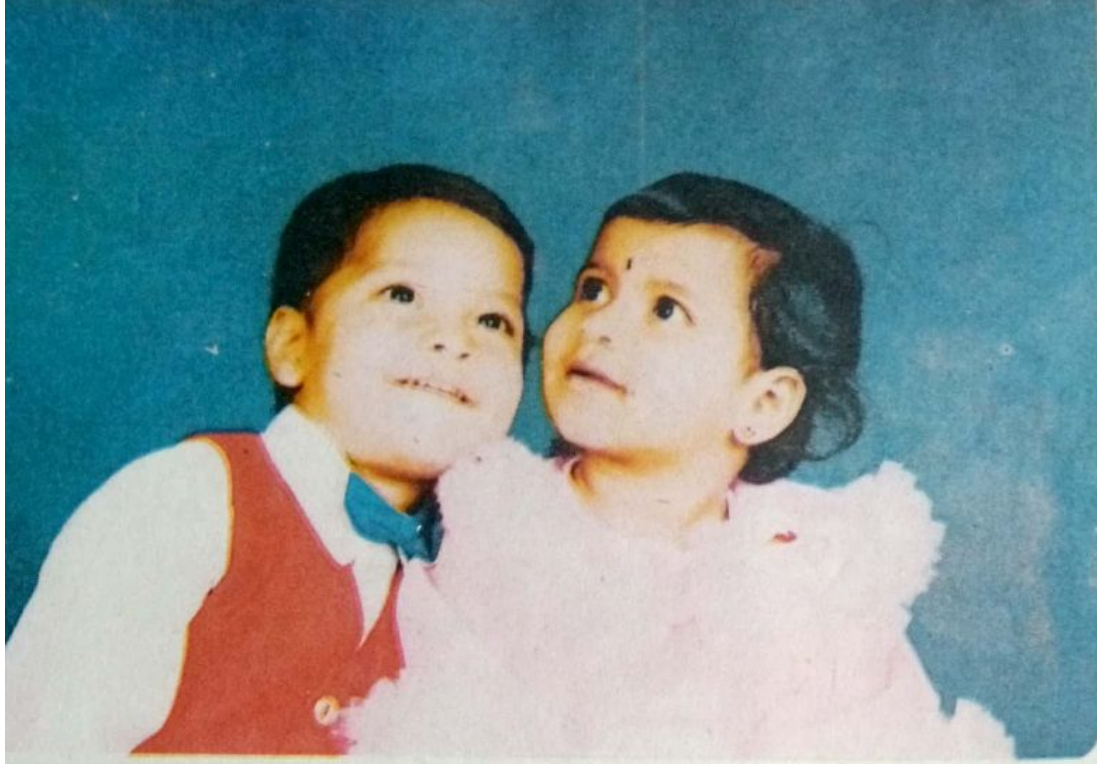
शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। चित्र के कई शीर्षक हो सकते हैं। सोचिए कोई सुंदर-सा, छोटा-सा शीर्षक। पोस्टकार्ड पर लिखकर उसे १० जून, १९९० तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली—११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर इनाम दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त '९० अंक

पुरस्कृत चित्र

कु. श्यामा वर्मा, ३२/बी, २०० यूनिट, नंदिनी नगर—४९००३६ जि. दुर्ग

इनके चित्र भी प्रशंसनीय रहे—अजय, दिल्ली; रीता सेठी, खेतड़ीनगर (राज.); विशालकुमार झा, राउरकेला; सुदीप्ता कुंडू, दुर्गापुर; बबीता अग्रवाल, वाराणसी।
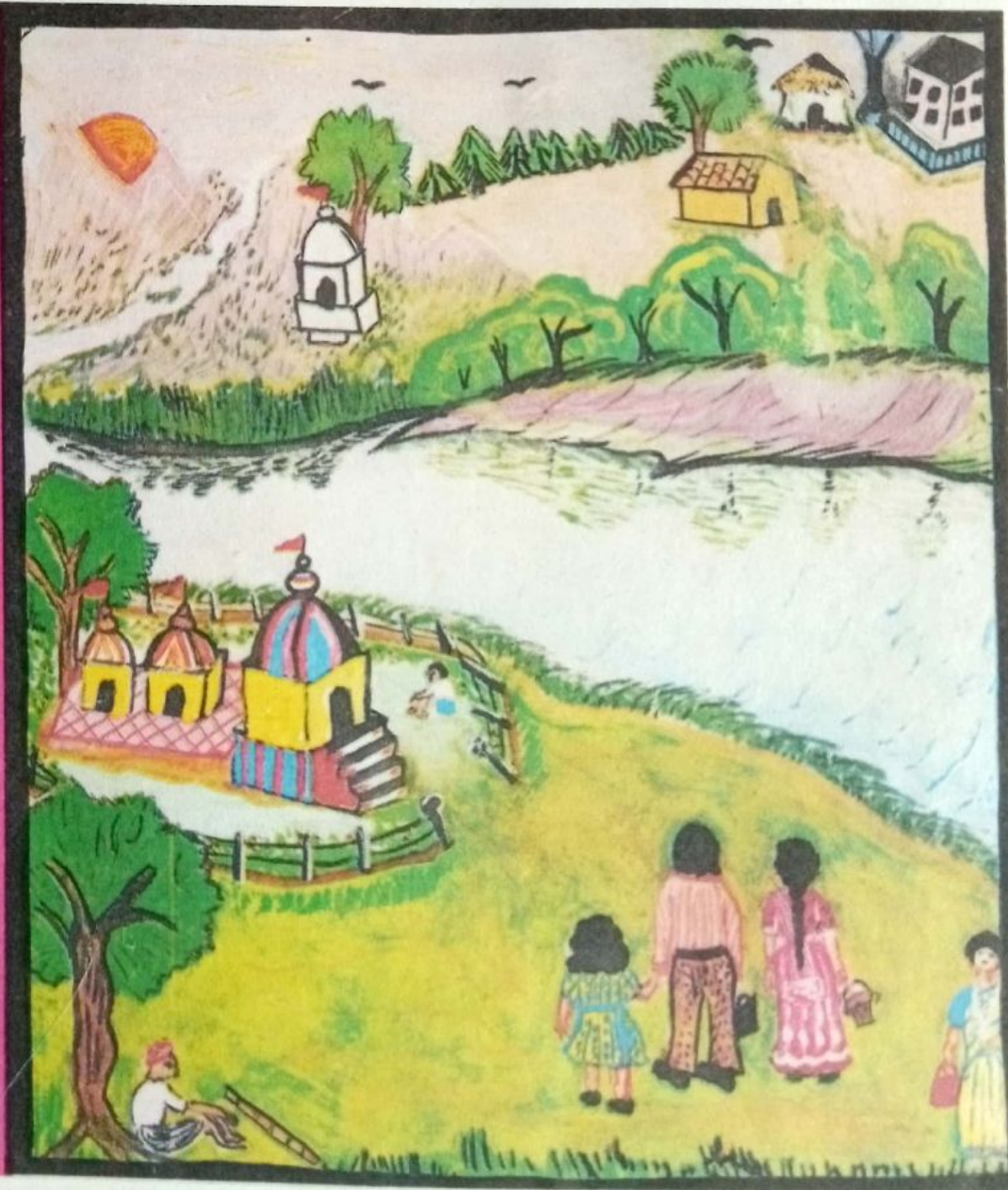
पिता लौटे

जयंत अपनी मां के साथ रहता था। उसके पिता बहुत दिन हुए कहीं चले गए थे। मां की नौकरी थी, पर बहुत कम वेतन मिलता था। जैसे-तैसे घर का गुजारा चलता। फिर भी मां ने जयंत की पढ़ाई-लिखाई में कोई कमी न रखी। वह पढ़ने में था भी बहुत होशियार। जैसे-जैसे वार्षिक परीक्षा नजदीक आती जा रही थी, जयंत के सभी साथी घर से बाहर कम ही दिखाई देते थे। वे हर वक्त परीक्षा की तैयारी में जुटे रहते। पर जयंत को कोई चिंता नहीं थी। वह पहले की तरह खूब खेलता था। उसके दोस्त उसे खेलते देख, चकित रह जाते। लेकिन जयंत उन बच्चों में था, जो पूरा साल पढ़ाई करते हैं।।

आखिर परीक्षा आ पहुंची। जयंत के सारे पर्चे बहुत अच्छे हुए थे। जब परीक्षा परिणाम के दिन अध्यापक ने पास होने वाले बच्चों का नाम बोला—उनमें जयंत का नाम कहीं नहीं था। उसके साथी चिढ़ाने लगे—"इम्तहानों के दिनों में खूब खेलो, मौज करो। अब भुगतो।"

लेकिन तभी अध्यापक ने एक विशेष घोषणा करते हुए कहा—"इस बार पूरे विद्यालय में जिस विद्यार्थी ने सबसे ज्यादा अंक प्राप्त किए हैं, उसका नाम है—जयंत।"

जयंत ने घर आकर सारी बात अपनी मां को बताई। मां की आंखों में खुशी से आंसू बहने लगे। जयंत को गले से लगाते बोलीं—"काश! तेरे पिता जी होते।"

तभी जयंत ने मुड़कर देखा, दरवाजे पर कोई खड़ा था। जयंत की मां ने उस व्यक्ति को पहचान लिया। वह बोलीं—"तुम कहां चले गए थे?" तब तक पिता अंदर आ गए। उन्होंने जयंत को गोदी में उठा लिया। बोले—"मेरा बेटा इतना बड़ा हो गया।" बाद में पिता ने बताया कि दुश्मन के जासूस उन्हें पकड़कर ले गए थे। इतने दिनों वह बिना किसी कारण जेल में थे। मौका मिलते ही जेल से भाग, सीधे घर आ रहे हैं। **—रोहित साह, जामताड़ा, (स.प.)**

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : नितिन कपूर, अम्बाला छावनी; मीनाक्षी के.जी., बेलगांव; कमल एफ. जारोली, राजकोट।

नकली तलवार

—सुबोधकुमार मिश्रा

गढ़सामौर के राजा थे भारमल । भारमल बहुत वीर योद्धा थे । उनके नाम से आसपास के राजा थर-थर कांपते थे । उन्हीं के पड़ोस में एक छोटा-सा राज्य था बड़ोच । उसके राजा धर्मगज देव भी आन-बान वाले थे । उन्होंने भारमल की अधीनता स्वीकार नहीं की । भारमल को यह अपना अपमान लगा ।

एक दिन बड़ी सेना लेकर भारमल ने बड़ोच पर चढ़ाई कर दी । कहां छोटा-सा बड़ोच ! और कहां भारमल की बड़ी सेना ! घमासान युद्ध होने लगा ।

राजा धर्मगज देव ने बहादुरी से मुकाबला किया । लेकिन भारमल की बड़ी सेना के सामने उनकी एक न चली । युद्ध में धर्मगज देव शहीद हो गए । भारमल ने जीत का झंडा फहरा दिया । वह अपने सैनिकों के साथ बड़ोच के किले की तरफ चल दिए ।

जब भारमल वहां पहुंचे, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही । एक तेजस्वी युवक घोड़े पर चढ़ा, किले के फाटक पर खड़ा था । उसके एक हाथ में तलवार थी और दूसरे में घोड़े की लगाम ।

भारमल बोले—''युवक, इस राज्य के राजा धर्मगज देव युद्ध में मारे जा चुके हैं । हम युद्ध जीत गए हैं । हमें अंदर जाने दो । अब यह राज्य हमारे अधिकार में है ।''

—''महाराज, यदि जंगल का राजा सिंह मर जाए, तो क्या जंगल सूना हो जाता है ? इस किले के अंदर जाने से पहले आपको मेरा सामना करना होगा ।''

—''धृष्ट नवयुवक ! तुम जानते हो, किससे बातें कर रहे हो ? आज तक किसी की हिम्मत नहीं हुई कि मुझसे आंख उठाकर बातें कर सके ।''

— ''मुझे मालूम है । मैं गढ़सामौर के महाराजा भारमल के सामने खड़ा हूं । आप बड़े हैं, इसलिए आपको हत्यारा तो नहीं कह सकता, मगर आपके साथ युद्ध करके मेरे पिता ने शहीद का दर्जा पाया है । मैं उन्हीं महान पिता महाराजा धर्मगज देव का पुत्र हूं । मेरा नाम विजयदेव है ।''

भारमल सोच में पड़ गए । यह देखकर विजयदेव बोला—''महाराज ! व्यर्थ की बहस में समय क्यों गंवाएं ? यदि जीत आपकी हुई, तो बड़ोच आपका । मेरी हो, तो आप अपनी सेना सहित वापस चले जाइएगा ।''

— ''युवक, तुम जानते हो कि तुम अकेले हो । तुम्हारे सारे सैनिक हमारी सेना ने गिरफ़्तार कर लिए हैं ।''

मगर विजयदेव यूं मानने वाला नहीं था । आखिर विजयदेव और राजा भारमल के बीच युद्ध शुरू हो गया । विजयदेव के साथ जो मुट्ठी भर सिपाही थे, वे भी गढ़सामौर की सेना पर टूट पड़े । विजयदेव की वीरता से एक पल के लिए तो भारमल भी घबरा गए । उनके शरीर पर कई जगह गहरे घाव लगे थे । लेकिन एकाएक विजयदेव के हाथ से तलवार छूटी और पलक झपकते ही भारमल के सैनिकों ने उसे गिरफ़्तार कर लिया ।

—''विजयदेव, लगता है, तुम अभी पराजित नहीं हुए । हमारे सैनिकों ने तुम्हें बंदी बनाया है । इसका यही दंड हो सकता है कि तुम अपनी पराजय स्वीकार कर लो । बदले में हमसे जीता हुआ बड़ोच ले लो ।''

– ''महाराज, इस तरह की आजादी से मृत्यु भली । आप तो मुझे आजाद कर देंगे, मगर मेरा मन मुझे जीवन भर धिक्कारता रहेगा ।''

''सोच लो, विजयदेव ! यदि सिंह मर जाए, तो सियार भी उसका सिर काटकर ले जाते हैं । और पराजित राजा मरे हुए सिंह जैसा ही होता है ।''—भारमल ने गर्व से कहा ।

–''हां, महाराज ! सिर झुकने से तो अच्छा है, कट ही जाए ।''

''युवक, तुम्हारी युवा अवस्था को देखकर मुझे तो तुम पर दया आ रही थी । लगता है, तुम इसके

योग्य भी नहीं हो। मेरी भी प्रतिज्ञा है कि अब तुम्हारा सिर झुकने के बाद ही बड़ोच के किले में प्रवेश करूंगा।''—राजा भारमल बोले।

विजयदेव को गिरफ्तार कर, गढ़सामौर ले आया गया। लेकिन उस रात भारमल सो नहीं सके। वह समझ नहीं पा रहे थे कि इस स्वाभिमानी युवक को कैसे झुकाएं? अचानक उन्हें अपनी बेटी मृगावती की याद आई। वह उसके कक्ष की ओर चल पड़े।

मृगावती गहरी नींद में थी। महाराजा ने उसे जगाया, कहा—''मृगावती, आज मैंने एक अद्भुत वीर देखा है। यदि वह मेरी एक शर्त मान ले, सिर्फ

एक—अपनी पराजय स्वीकार कर ले, तो मैं न केवल उसे बड़ोच का राज्य वापस कर दूंगा, बल्कि तुम्हारा विवाह भी उसके साथ कर दूंगा। उससे ज्यादा योग्य, स्वाभिमानी और वीर मैं नहीं ढूंढ़ सकता। तुम उसके पास जाकर उसे मनाओ।''

मृगावती पिता की बात सुन, आश्चर्य में थी। अब उसके मन में भी यह आया, आखिर यह वीर पुरुष है कौन? उसने पिता के मुंह कभी किसी दूसरे वीर की प्रशंसा नहीं सुनी थी।

मृगावती विजयदेव से मिलने चल दी। कारागार में पहुंचकर उसने विजयदेव को गहरे सोच में डूबे देखा।

मृगावती ने उसे प्रणाम किया, तो वह चौंककर खड़ा हो गया। राजकुमारी का परिचय सुन, वह और भी चकित हुआ। आखिर इस वक्त राजकुमारी मेरे पास क्यों?

मृगावती विजयदेव की उलझन समझ गई थी। उसने विस्तार से सारी बात बताई।

सुनकर विजयदेव बोला—''राजकुमारी, बड़ोच की धरती मेरे सैनिकों के खून से रंगी पड़ी है। क्या मेरे सैनिकों की जान की कीमत यही है कि मैं पराजय स्वीकार कर, तुम से विवाह कर लूं। जिन लोगों ने वीर गति पाई है, उनके परिवार वालों को मैं क्या जवाब दूंगा?''

विजयदेव का उत्तर सुन, राजकुमारी लौट गई।

अगले दिन जंजीरों में जकड़े विजयदेव को दरबार में लाया गया। सिंहासन पर भारमल विराजमान थे। तभी सेनापति ने चमचमाती तलवार लेकर प्रवेश किया। सारे दरबारी हैरान! मंत्री ने महाराजा की तरफ देखा, मगर वह शांत बैठे रहे। कुछ देर बाद गम्भीर स्वर में आदेश दिया—''सेनापति, इस अभिमानी राजकुमार का सिर धड़ से अलग कर दें।''

यह सुनकर भी विजयदेव विचलित नहीं हुआ। सीना ताने खड़ा रहा। सेनापति आगे बढ़ा। एक झटके से तलवार चली। दरबार में सनसनी फैल गई। तभी सबने देखा, विजयदेव तो शांत खड़ा है, मगर तलवार टुकड़े-टुकड़े हुई जमीन पर गिरी पड़ी है।

हर्ष विभोर हो, राजा भारमल सिंहासन से उठे। बोले—''वीर राजकुमार, तुम्हारे स्वाभिमान ने मुझे बहुत प्रभावित किया था। तुम योद्धा भी बहुत बड़े हो और साहसी भी। मौत को सामने देखकर भी तुम्हारे चेहरे पर शिकन नहीं आई। चमकदार पन्नी से मढ़ी गत्ते की यह तलवार मैंने ही तुम्हारे लिए बनवाई थी।''

राजा ने आगे बढ़ कर विजयदेव को गले से लगा लिया। वह उसे सिंहासन तक लाए। वहां से घोषणा करते हुए बोले—''विजयदेव सिर्फ बड़ोच का राजा ही नहीं, गढ़सामौर का दामाद भी है।''

●

नई पुस्तकें

कहानी शल्य चिकित्सा की—लेखक—डा. यतीश अग्रवाल; प्रकाशक : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; मूल्य : २० रुपए ।

पहले यदि कोई हड्डी टूट जाती थी, तो उस पर गीली मिट्टी का लेप कर दिया जाता था । मिट्टी सूखकर आज के प्लास्टर जैसी हो जाती थी । बेबीलोन सभ्यता में बादशाह ने सर्जरी से सम्बंधित, कानून भी बनवाए थे । हिपोक्रेटीज ने चिकित्सा विज्ञान को नया आधार दिया था । आज डाक्टर लोग मनुष्य रक्षा की जो शपथ लेते हैं, उसे हिपोक्रेटीज ने ही तैयार किया था । भारत में शल्य चिकित्सा के जनक महर्षि सुश्रुत हुए हैं । उनकी लिखी पुस्तक 'सुश्रुत संहिता' में न केवल छोटी-मोटी शल्य चिकित्सा, बल्कि 'प्लास्टिक सर्जरी' तक का जिक्र है । शल्य चिकित्सा में चीरा लगाने का अभ्यास करने के लिए तरबूज, ककड़ी, करेले आदि का इस्तेमाल किया जाता था । इसी तरह की रोचक जानकारियां देने वाली पंद्रह कहानियां हैं इस पुस्तक में । कहानियों में पूरे विश्व की शल्य चिकित्सा का इतिहास है । विषय रूखा हो सकता था, लेकिन लेखक की भाषा सरल है । इसीलिए पुस्तक काफी रोचक बन पड़ी है ।

जियो तो ऐसे जियो—लेखक—धर्मपाल शर्मा; प्रकाशक : आशा प्रकाशन समूह, ३० नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली; मूल्य : १५ रुपए ।

हरे-भरे खेतों के पास से जब लालबहादुर शास्त्री जी की कार गुजर रही थी, तो उन्होंने कार रुकवाई । ड्राइवर से कहा—''जाओ, थोड़े से हरे चने ले आओ । लेकिन पहले किसान से अनुमति ले लेना ।'' जब किसान को पता चला कि स्वयं प्रधानमंत्री हरे चने मांग रहे हैं, तो वह गद्गद् हो उठा । चने लेकर दौड़ा आया । एक नाटक देखते-देखते सुभाषचंद्र बोस इतने उत्तेजित हो गए थे कि उन्होंने अंग्रेज अधिकारी को जूता फेंककर मारा । पुस्तक की तिरेसठ कहानियों में महापुरुषों की विनम्रता और सादगी के रोचक प्रसंग हैं । चंद्रशेखर आजाद, मदनलाल धींगड़ा, आदि शंकराचार्य, शिवाजी, मदनमोहन मालवीय, न्यूटन, वल्लभभाई पटेल आदि के जीवन की अद्भुत घटनाएं पढ़कर, रोमांच हो आता है । प्रेरणा मिलती है—हम भी ऐसे ही बनें ।

पेड़ नहीं कट रहे हैं—लेखक—देवेन्द्रकुमार; प्रकाशक : ईशान प्रकाशन, नौएडा; मूल्य : १० रुपए ।

यह बाल उपन्यास एक अनाथ बच्चे की कहानी है । जानू जो एक अनाथ बच्चा है । जिसका न घर है, न माता-पिता । दो पल आराम करने के लिए सहारा है, तो सिर्फ पेड़, जिसे अब सड़क चौड़ी बनाने के लिए काटा जाना है । जानू पढ़ना चाहता है, अमीर पिता के बेटे अजित की तरह । पर अजित के पिता नहीं चाहते कि जानू उनके बेटे के पास आए । जानू जान गया है कि अजित बुरे बच्चों की संगत में है । वह एक दिन अपहरणकर्ताओं से अजित को बचाता है । तब अजित के पिता और अजित को पता चलता है कि वह ही सच्चा दोस्त है ।

जानू हजारों-लाखों बच्चों का प्रतीक है । लेखक ने कथानक को रोचक ढंग से संवारा है । बच्चे पसंद करेंगे । पुस्तक का आकार छोटा है । मुख पृष्ठ भी आकर्षक नहीं है ।

हाथी का नन्हा साथी—लेखक—प्रताप शर्मा; अनुवाद—मधु बी. जोशी; प्रकाशक : रूपा एंड कम्पनी, ३८३७ पटौदी हाउस रोड, दरियागंज, नई दिल्ली; मूल्य : १५ रुपए ।

गांव में अकाल । चिंटू हाथी विवेक को लेकर बूढ़े ताऊ जी के लिए पानी की तलाश में निकल पड़ता है । पानी मिलने के बाद उसे हां जी नाम का नौकर मिलता है । फिर एक बुढ़िया, एक चिड़िया, बैल, चूजे, पिल्ले ये सब प्यासे हैं । चिंटू को न केवल पानी मिलता है, खेतों में काम करने के लिए बैल और नौकर भी मिल जाते हैं । चिंटू और हाथी विवेक से सम्बंधित चार कहानियां हैं पुस्तक में । पढ़कर ऐसा नहीं लगता कि ये कहानियां नई हैं, यद्यपि उन्हें लिखा बहुत अच्छे ढंग से गया है ।

उत्तर : गोरखधंधा

१. कपास
२. बायां
३. मुर्गी का बच्चा : चूजा
४. नीचे

बातें रंग-बिरंगी

दूसरे देश में अपना झंडा : दूसरे देश में जाकर अपने देश का झंडा फहराना यों तो बहुत मुश्किल काम है, लेकिन खिलाड़ियों के लिए यह बाएं हाथ का खेल है। सन् १९३६ में ओलम्पिक खेलों का आयोजन बर्लिन में हुआ। भारत और जर्मनी के बीच फाइनल मैच १४ अगस्त को खेला जाना था। उस दिन बहुत बारिश हुई। मैदान में कीचड़ ही कीचड़ भर गया। इसलिए फाइनल मैच दूसरे दिन १५ अगस्त को सवेरे ११ बजे खेला गया।

उस समय भारतीय हाकी टीम के कप्तान हाकी के जादूगर दादा ध्यानचंद थे। मैदान गीला था। ध्यानचंद ने जूते उतार, नंगे पांव खेलना शुरू किया। यह उनका तीसरा और अंतिम ओलम्पिक था। भारतीय खिलाड़ी वीर सैनिकों की तरह खेले। यह मैच भारत ने ४-१ से जीता। जैसे ही खेल समाप्ति की सीटी बजी, सारा आकाश 'भारत माता की जय-जयकार' से गूंज उठा। भारत ने ओलम्पिक खेलों में विजेता का सम्मान प्राप्त किया। वह १५ अगस्त, १९३६ का शुभ दिन था। ११ वर्ष बाद इसी शुभ दिन भारत आजाद हुआ।

फुटबाल सम्राट पेले : एक लड़का था, जिसका नाम एडसन असिस नैसिमैंटो था। मां अपने बेटे को डाक्टर या वकील बनाने का सपना देखा करती, लेकिन उसके भाग्य में तो फुटबाल का बादशाह बनना लिखा था। वह बचपन में बहुत गरीब था। फुटबाल खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। उसने फटे-पुराने कपड़ों से फुटबाल बनाकर खेलना शुरू कर दिया। उसने जूतों पर पालिश करके पैसे इकट्ठे किए। लेकिन यही खिलाड़ी अपने देश ब्राजील का देवता माना गया। केवल उसका खेल देखने के लिए न केवल दो देशों के बीच युद्ध विराम होता, बल्कि उसकी संन्यास की खबर सुनकर या उसका आखिरी मैच देखने के बाद लाखों-करोड़ों लोग फूट-फूटकर रो पड़ते। फुटबाल का यह महानतम खिलाड़ी ब्राजील का पेले है। कुछ खिलाड़ी ऐसे भी होते हैं, जिनके साथ विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्ष अपनी फोटो खिंचवा कर अपना गौरव बढ़ाते हैं। यह वही खिलाड़ी है, जिसके बारे में कहा जाता है कि पेले जैसा खिलाड़ी न हुआ है, न कभी होगा।

एशियाई खेल : शुभंकर और प्रतीक चिह्न : ग्यारहवें एशियाई खेलों का आयोजन चीन की राजधानी पेइचिंग में होगा। उद्घाटन समारोह २२ सितम्बर, १९९० और समापन ७ अक्तूबर, १९९० को।

शुभंकर है पांडा- चीन के पर्वतों में पाया जाने वाला रीछ का बच्चा। चंचल और सुंदर रीछ, जिसकी कमर में छोटा-सा लाल रिबन है। उसने एक हाथ में स्वर्ण पदक पकड़ रखा है।

प्रतीक चिह्न है चीन की दीवार। जिसमें एक तरफ अंग्रेजी का 'ए' अक्षर जो एशिया के लिए और रोमन संख्या में XI (ग्यारह) भी बना है। उस दीवार पर लिखा गया है- एकता, मित्रता और प्रगति। सबसे ऊपर है लाल सूर्य, जो 'एशियाई ओलम्पिक परिषद' का प्रतीक चिह्न है।

—योगराज थानी

पत्र मिला

□ आकर्षक मुखपृष्ठ, ज्ञानवर्धक सम्पादकीय, एक से बढ़कर एक कहानियां, मदर टैरेसा का अनुपम चित्र- यही इस अंक की विशेषताएं थीं। चुटकुला प्रतियोगिता फिर करें।

—अजित कुमार, नौबतपुर (बिहार)

□ मैं हर मास 'नंदन' का बेसब्री से इंतजार करता हूं। इसे पढ़कर ऐसा महसूस होता है, जैसे मैं इंद्र के बगीचे में घूम रहा हूं। 'नंदन एलबम' में गांधी जी का चरखा कातते हुए चित्र छापें। **—सुमीत कुमार, लाजवंती, नई दिल्ली**

□ अप्रैल ९० अंक प्राचीन कथाओं का खजाना था। नोबेल पुरस्कार विजेता मां टैरेसा का चित्र बहुत अच्छा लगा।

—दिनेशकुमार उपाध्याय, बम्बई

□ यह पत्रिका उम्र और समाज के हर वर्ग में लोकप्रिय है। 'ज्ञान-पहेली' हमारा ज्ञान बढ़ाती है, तो नन्हा-सा समाचारपत्र हमें दुनिया भर की मजेदार खबरें देता है।

—अरविंद आर्य, कोसी कलां (उ.प्र.)

□ 'गुफा में कबूतर', 'पाताल का राजा', 'धरती पर बैकुंठ', 'जाल में बिलाव' आदि कहानियां विशेष पसंद आईं। 'दिल्ली में गणतंत्र मेला' आंखों के सामने झूम उठा। चित्र-कथा 'नरसी भगत' पढ़कर आंखें भर आईं।

—मनोजकुमार झा, गढ़वनैली, पूर्णियां

□ अप्रैल अंक जैसी कहानियां अपनी संस्कृति का ज्ञान कराती हैं, इसीलिए बच्चों के विकास में बहुत सहायक हैं। कहानियों के साथ-साथ 'तेनालीराम', 'चटपट' तथा फोटो प्रतियोगिता में पुरस्कृत चित्र आकर्षक थे।

—उदयसिंह यादव, लश्कर (म.प्र.)

□ 'नंदन' का एक-एक शब्द प्रशंसा योग्य होता है। इस बार तो इस अंक को पढ़ते हुए मैं अपने आपको भी भूल गया। एलबम या झांकियों के पृष्ठ में पशु-पक्षियों के अद्‌भुत कारनामे भी छापा करें। **– रंजन कुमार, पश्चिमी चम्पारण**

□ मेरा तो है प्यारा 'नंदन', मां-पापा को जैसे चंदन, घर में जब आता है यह मन को तब महकाता यह।

—मुजाम्मल अजीम, नगीना

□ 'आओ बात करें' शिक्षाप्रद लगा। क्या एक ऐसा स्तम्भ प्रारम्भ नहीं किया जा सकता, जहां बच्चे अपनी समस्या रख सकें और उन्हें उचित सुझाव मिलें।

—नरेशकुमार कोठारी, मेतवाला (राज.)

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : संदीप खेतान, कलकत्ता; हरीश कुमार, मामनाणी, पदमपुर; अल्पना भटनागर, उदयपुर।

शीर्षक बताइए : परिणाम

जैसा चित्र, वैसे ही बढ़िया-मजेदार शीर्षक भेजे पाठकों ने। अप्रैल '९० अंक में छपे रंगीन चित्र पर इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

मैं कश्मीर की कली, बेचूं फूल गली-गली।

विनीता रानी, डा. एम. एस. बंसल, केनेरा बैंक वाली गली, रोड़ी गेट, सिरसा (हरि.)।

रंग-बिरंगे फूल अनेक, भर के लाई टोकरी एक।

प्रतिमा सोरंग, १०६/१३, १४६४ क्वार्टर्स, शिवाजी नगर, भोपाल।

फूलों से है मुझको प्यार, भैया को दूंगी उपहार।

—मुकेशचंद्र गुप्ता द्वारा कैलाशनारायण गुप्ता, ग्राम. थमावली, पो. बसवा, अलवर (राज.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए—अफजल हुसेन, डिगबोई (असम); संध्या दुबे, भोपाल; प्रणवकुमार मुखर्जी, मुजफ्फरपुर; मीनाक्षी पांडे, कैलाश कालोनी, दिल्ली; सोनिका शर्मा, अमृतसर।

आप कितने बुद्धिमान हैं ? (उत्तर)

१. टी.वी. पर दिखने वाली गेंद का स्थान बदल गया है।
२. स्टूल पर रखी टोकरी में कम फल हैं।
३. छोटे बच्चे की टोपी पर अधिक धारियां हैं।
४. बच्चे के मफलर के दाएं तरफ लटकने वाले फुंदने छोटे हैं।
५. बच्चे के सिर के ऊपर लगी तसवीर बदल गई है।
६. लैम्प शेड पर एक धारी अधिक है।
७. जमीन पर लेटे आदमी के जूते का तला काला है।
८. हाथ में पकड़े अखबार में एक पन्ना अधिक है।
९. कोट वाले आदमी की छड़ी की निचली घुंडी गायब है।
१०. टी.वी. के पास रखी अलमारी का एक हत्था नहीं है।

आपकी उंगलियों पर खेलता रोमांच
Columbus
पूरे परिवार के लिए कंप्यूटर टीवी गेम
कोलम्बस है क्या ?
७५ दुनियाओं की ललकार
• हर कोलम्बस कन्सोल के साथ एक सुपर मारियो मुफ्त.
• ७५ से भी अधिक रोमांचक खेल!
विशेष. कार्ट्रिजेज में आप २ या ४ गेम अपनी पसंद के पा सकते हैं.
खास बी.ई.सी-२००५ लाइट-सेन्सिंग गन - शूटिंग गेम का मजा.
कार्ट्रिजेज २ साइजों में मिलते हैं ताकि किसी भी प्रकार के निनटेंडो मॉडेल कन्सोल में लग सकें.
कोलम्बस है मजा. कोलम्बस है रोमांच की दुनिया. कोलम्बस है आपकी उंगलियों पर खेलता कमाल का इलेक्ट्रॉनिक्स मनोरंजन आपके अपने घर में.
इसे अपने टीवी से जोडिये और कंट्रोल्स अपने हाथ में लेकर पहुंच जाइए रोमांच की सनसनीखेज दुनिया में!
Nintendo'
DESIGN
मूल्य रु.२८५०
जल्दी कीजिए! कूपन इस पते पर भेजिए
कोलम्बस सिस्टिम्स प्रा. लि.
इलाहाबाद बैंक कंपाउंड, तुलसी पाइप रोड, दादर (पश्चिम), बंबई ४०००२८.
कंप्यूटर करिश्मा
हमारे बी.ई.सी-२००६ की-बोर्ड को कन्सोल से जोडिए और फिर देखिए! वाह! आपका होम कंप्यूटर तैयार!
मुफ्त प्रदर्शन के लिए नीचे दिया कूपन भेजिए.
मैं अपने घर में कोलम्बस का मुफ्त प्रदर्शन देखना चाहता हू.
नाम
पता
फोन
सहूलियत का समय
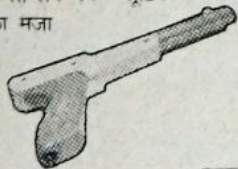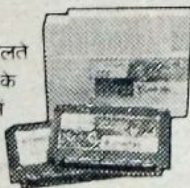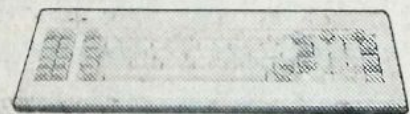
पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने तथा लेखन में रुचि :

१. कैलाशचंद्र शर्मा, १२ वर्ष, ग्रा.+पो. चाईया, जि. श्रीगंगानगर (राज.); २. कवींद्र कुमार, १५, लोको कालोनी, क्वा. नं. २५५ एफ, पो. लामडिंग, जि. नवगांव (असम); ३. शिवरतन न्याती, १५, मणियार भवन, तेली मोहल्ला, पो. किशनगढ़ (राज.); ४. प्रमोदकुमार सिन्हा, १७, ग्रा. चिरूडीह, पो. भंडारीदह, जि. गिरिडीह (बि.); ५. अखिलेशकुमार सिंह, १६, ४२३/३ बक्शी खुर्द, दारागंज, इलाहाबाद; ६. किशन जोशी, ११, द्वारा योगराज भ्रमर, ३०७ साहित्य सदन, फतेहपुर, शेखावटी (राज.); ७. अजयकुमार साहू, १५, सुभाष चौक, भिलाई (म. प्र.); ८. विजयकुमार कर्ण, १७, द्वारा बी. वी. एस. त्रिदेव कम्पनी, ग्रा.+पो. हसपुरा, जि. औरंगाबाद (बि.); ९. जुगनू गुप्ता, १७, रानी बाजार, सहारनपुर १०. भारती गनवाती, ११, सिंधी कैम्प, मशान रोड, अकोला (महा.); ११. पंकज अग्रवाल, १६, द्वारा ओमप्रकाश अग्रवाल, मो. बहादुरगंज,खैर, अलीगढ़; १२. योगेंद्र सिंह, १७, द्वारा महेंद्र सिंह, १७, सी-११२ कृष्णपुरा, मोदीनगर ।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. विकास गुप्ता, १२ वर्ष, गोयल लॉज, तहसील रोड, फिल्लौर; २. कपिल अरोड़ा, १४, ए-६, पुराना गोविंदपुरा, एक्स. गली नं.-१, परवाना रोड, दिल्ली-५१; ३. गिरजेशसिंह सोलंकी, ११, द्वारा पी. आर. सिंह, शुगर फैक्ट्री, बिसवा, सीतापुर (उ. प्र.); ४. घनश्यामकुमार बरनवाल, १२, नरसिंहलाल एंड कम्पनी, २५ के. पी. रोड, गया (बि.); ५. राजेश मनचंदा, १७, ७७९ प्रेमनगर, करनाल; ६. भूपेंद्र वैष्णव, १७, ९७ कड़ाबीन मोहल्ला, इंदौर; ७. अमित चतुर्वेदी, १६, क॰ परियोजना, म. नं.-बी/८९ पो. वीना, जि. सोनभद्र (उ. प्र.); ८. मोनिका केलकर, १४, ४५/१ राजपुर रोड, सिविल लाइंस, दिल्ली-५४; ९. अनिल आनंद, १५, गंगासागर अल्लपट्टी, लहेरिया सराय, दरभंगा (बि.)!

डाक टिकट संग्रह तथा भ्रमण में रुचि :

१. कुमार अमित, १४ वर्ष, बालुकाराम, वैशाली (बि.); २. रूपेश गोयल, १५, १९१ मो. खुड़बुड़ा, देहरादून; ३. गौतम आनंद, १३, ब्लाक कालोनी, महुआडीह, पलामू (बि.); ४. सुधीर गुप्ता, १३, एफ-६५, कमला नगर, कोलापुर रोड, दिल्ली-७; ५. प्रकाशकुमार भोपालका, १५, बिरला हायर सेकेंड्री स्कूल, पिलानी (राज.); ६. अनिरुद्ध बाधान, १०, पो. झारसुगड़ा, जि. सम्बलपुर (उड़ीसा); ७. अवनीश गौतम, ११, द्वारा उमेशदत्त पांडेय, नया शिवगंज, चारखम्भा गली, आरा (बि.) ।

नंदन ज्ञान पहेली २५६

परिणाम

विजेताओं में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है ।

सर्वशुद्ध : २ : प्रत्येक को एक सौ पच्चीस रुपए

१. पंकज खरे, मुकरीनपुर (सीतापुर); २. सौरभ सिंह, झांसी ।

एक गलती : तीस : प्रत्येक को पच्चीस रुपए ।

१. बंका विजय सत्यदेव, बम्बई; २. श्वेता वर्मा, धनबाद; ३. नीरज जैन, दिल्ली; ४. रेखा रानी, चंदौसी; ५. मंजुल हक, गुहावटी; ६. मोहितकुमार श्रीवास्तव, मेरठ; ७. शैलेशकुमार भदानी, बेगुसराय; ८. शलभ वार्ष्णेय, पंतनगर; ९. विशाल सौरभ, कागजनगर (असम); १०. आलोक बिश्नोई, कोटद्वार; ११. बरखा शर्मा, रतलाम; १२. उषा जैन, कलकत्ता; १३. गोपालजी तिवारी, फैजाबाद; १४. श्वेता गर्ग, यमुनानगर; १५. सुमति, नई दिल्ली; १६. जयप्रकाश साही, सोसई (बि.); १७. अनिलकुमार राना, मथुरा; १८. सोनालीकुमार, दुर्गापुर; १९. संजयकुमार बर्णवाल, कोडरमा (बि.); २०. किरन शुक्ल, कानपुर; २१. राहुल गुप्ता, भोपाल; २२. सावित्री कुमारी, जमालपुर, मुंगेर; २३. शशिबाला, पानीपत; २४. वेदप्रकाश सोनी, मंडावर, महुआ रोड ३२१६०९; २५. आशिमा शुक्ल, कानपुर; २६. पंकज जैन, सिंकदराराऊ (अलीगढ़); २७. शशिबाला गुप्ता, सिंकदराराऊ, अलीगढ़; २८. नीरज कौशिक, दिगारिया (राज.); २९. पारुल अग्रवाल, बरेली; ३०. किशनकुमार गोयल, धनबाद ।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित ।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
लॉज़ ऑफ़ दि जंगल गेम
स्नैप
सफ़ारी गेम
मैगी क्लब:आओ मनाएं
जंगल में मंगल !
अपने उपहार मुफ़्त लो!
मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के आगे वाले
हिस्से से यह चिन्ह काटो और अपनी पसंद के
मुफ़्त उपहार पाने के लिए हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों
में तुम्हें मैगी क्लब की ओर से एक रोचक व आकर्षक
उपहार मिल जाएगा.
यह मत भूलो :
अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो हमें
लिखते समय अपने मनचाहे उपहार के नाम के
साथ अपना नाम और पता ज़रूर लिखना.
और यदि तुम पहले से मैगी क्लब के सदस्य
हो तो अपना मेम्बरशिप नम्बर भी
साथ भेजना.
डिज़्नी टुडे कॉमिक
Disney TODAY
फ़ॉरेस्ट फ़ेसिज़ कैप और मास्क
MAGGI
2-Minute noodles
हमारा पता है : दि मैगी क्लब
पी.ओ. नं. : 5788, नई दिल्ली-110055
जंगल स्टैन्डीज़ सेट
और यही नहीं : अगर तुमने अभी तक 'ट्रैवल इंडिया गेम' नहीं लिया है तो आज ही लो!
HTA 6679 HIN

रजि. नं. डी.-(सी)-१७१ आर.एन.आई. नं. १०५२५/